मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग-२

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(दूसरा भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७

सर्वाधिकार सुरक्षित

चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : ३५-००

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अनुक्रमणिका

१—दो शब्द ७

२—शाबर-शब्द-कोष ११

• श्री भैरवानन्दनाथ, सागर (म० प्र०)

३—शीघ्र फल-दायक सिद्ध शाबर-मन्त्र १७-२०

• डा० एच० एम० तिवारी, दतिया (म० प्र०)

['साबर' मन्त्रों का परिचय···१७ 'साबर'-मन्त्र-साधना के महत्त्व-पूर्ण तथ्य···१६, 'साबर' - मन्त्रों को सिद्ध कैसे करें ?···२१, शरीर-रक्षा के मन्त्र···२१, गण्डा देने का मन्त्र···२३, गुरु गोरखनाथ का सर - मङ्गा (जञ्जीरा) मन्त्र···२३, श्री भैरव-मन्त्र···२४, महा-लक्ष्मी मन्त्र···२५, लक्ष्मी - पूजन-मन्त्र···२६, दुकान की बिक्री अधिक होने का मन्त्र···२६, अघोर गोरी मन्त्र···२७, पीलिया का मन्त्र···२७, दाद का मन्त्र···२८, आँख की फूली काटने का मन्त्र···२८, मोहिनी मन्त्र···२८, सुपारी-मोहिनी मन्त्र···२६, वशीकरण मन्त्र···२६, पान वशी-करण मन्त्र···३०]

४—'शाबर' मन्त्र की साधना ३१-३४

• श्री सुधीरकुमार, बेगूसराय (बिहार)

['शाबर' मन्त्र के छः प्रकार···३१, शाबर - मन्त्रों को जाग्रत् करने की विधि···३१, घर-बन्धन का शाबर···३२, प्रेत या प्रेतनी को बकराने का मन्त्र···३२, भूत पकड़नेवाला मन्त्र···३२, देह-रक्षा का मन्त्र···३२, नजर उतारने का मन्त्र···३३, मोहिनी शाबर···३३, मन्त्र-प्रयोग लौटाने का मन्त्र·····३३, पुत्र होने का अढ़ैया शाबर····३४, ठँकना चलाने का शाबर···३४]

५—अनुभूत शाबर-मन्त्र ३५-४१
● पं० नीलकण्ठ झा, वद्यनाथ देवघर (बिहार)
[१ आत्म - रक्षा मन्त्र ··· ३५, अङ्कु - बन्धन मन्त्र ··· ३५, शरीर बाँधने का मन्त्र ··· ३५, दिशा-बन्धन मन्त्र ··· ३५, डीह बाँधने का मन्त्र ··· ३६, भण्डार भराने का मन्त्र ··· ३६, गो-रक्षक मन्त्र ··· ३६, फूला काटे का मन्त्र ·· ३६, नजर-टोना झारने का मन्त्र ···· ३७, अग्नि को थामने का मन्त्र ··· ३७, अग्नि बाँधने का मन्त्र ··· ३७, आपत्ति टालने का मन्त्र ··· ३७, अध-कपारी झाड़ने का मन्त्र ··· ३७, दाँत-दर्द दूर करने का मन्त्र ··· ३८, पीलिया का मन्त्र ··· ३८, कर्ण - रोग का मन्त्र ··· ३८, जले घाव का मन्त्र ··· ३९, बवासीर का मन्त्र ··· ३८, हूका-पीड़ा झारने का मन्त्र ··· ३९, बिच्छू विष-निवारक मन्त्र ·· ३९, व्याघ्र-सर्पादि-भय-निवारक मन्त्र ··· ३९, अन्न-पूर्णा शाबर मन्त्र ··· ३९, ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र ··· ४०, आपत्ति-निवारण-मन्त्र ··· ४०, गृह-बन्धन - मन्त्र ··· ४०, मन्त्र मोहिनी ··· ४१, भूत - पिशाच-डाकिनी - योगिनी - निवारक मन्त्र ··· ४१, चोरी गए सामान को निकालने का मन्त्र ··· ४१]

६—वशीकरणादि शाबर-मन्त्र ४२-५०
● पं० रामराज पाण्डेय, रीवाँ (म० प्र०)
[वशीकरण शाबर-मन्त्र ··· ४२, रक्षा-मन्त्र ··· ४५, कटोरा चलाने का मन्त्र ··· ४६, 'आधी सीसी' निवारक मन्त्र ··· ४६, ओला - पत्थर - निवारण के मन्त्र ··· ४७, भूत-प्रेत, डीठ-मूठ व अन्य सङ्कट-निवारक हनुमान शाबर-मन्त्र ··· ४८, सर्वापत्ति - निवारक हनुमान -स्तुति ··· ४९, हनुमत्-जञ्जीरा (द्वितीय) ··· ५०]

७—रक्षा-मन्त्र (अनुभूत शाबर-मन्त्र) ५०
● श्री नील-कण्ठ महाराज, वर्द्धवान (बङ्गाल)

८—शाबर-मन्त्र-त्रिंशति ५१-६१
• श्री भैरवानन्दनाथ, सागर (म० प्र०)
[नजर, भूत - प्रेत, रोगादि निवारण ···५१, अभिचार-नाशक मन्त्र ···५१, उपद्रव - कारक - शाबर-मन्त्र ···५२, त्रिविध फल - दायक शाबर-मन्त्र ···५३, स्तम्भन-कारक शाबर मन्त्र ···५४, बजरङ्ग की कैंची (प्रयोगों की काट) ···५५, सुख-प्रसव, गर्भ-पात, गर्भ-स्राव हेतु मन्त्र ···५६, तिजारी (तृतीयक ज्वर) का मन्त्र ···५६, जुआ जीतने का मन्त्र ···५६, मोहिनी शाबर - मन्त्र ···५७, काल - भैरव, भैंसासुर, बाजीगर, मरही माता मन्त्र ···५८]

९—अनुभूत शाबर-मन्त्र ६२-६४
• श्री सच्चिदानन्द सिन्हा, सरगुजा (म. प्र.)
[गो-समुदाय-रक्षक मन्त्र ···६२, अग्नि - स्तम्भन ···६२, वशीकरण - प्रयोग ···६२, स्वप्न में हनुमान जी का दर्शन ···६३, सर्प-स्तम्भन-मन्त्र ···६३, हैजा-निवारण मन्त्र ··· ६४, क्रोध-निवारण मन्त्र ···६४]

१०—प्रेत-बाधा-नजर-टोना निवारणार्थ अनुभूत मन्त्र ६४
• पण्डित रामलखन उपाध्याय, प्रयाग (उत्तर प्रदेश)

११—शाबर-मन्त्र-पंचक ६५-६७
• श्री प्रकाशनाथ 'तन्त्रेश', ब्यावर (राजस्थान)
[अघोर शाबर-मन्त्र ···६५, भैरव - सिद्धि शाबर-मन्त्र ··· ६६, स्मरण-शक्ति-वर्धक शाबर-मन्त्र ···६७, गणेश-शाबर गायत्री-मन्त्र ···६७, नव-नाथ शाबर-मन्त्र ···६७]

१२—भद्र-काली का शाबर मन्त्र ६८
• श्री हरिहरशरण देव, दुर्ग (मध्य प्रदेश)

१३—सर्व-जन-हिताय शाबर-मन्त्र ६९-७१
• श्री पण्डित राजेन्द्रकुमार अवस्थी, उदयपुर (राजस्थान)
(सर्वार्थ-साधक सुरक्षा-कारी शाबर - मन्त्र ···७०, समस्त उपद्रव-नाशक मन्त्र ···७०, भय, भ्रम आदि मनो-व्याधि-नाशक मन्त्र ···७०, आशु फल - प्रद सिद्ध महा - लक्ष्मी मन्त्र ···७१]

१४—सिद्ध शाबर मन्त्र ७२

• पण्डित श्यामकान्त मिश्र, प्रयाग (उ० प्र०)
[बाबा नानका जी का साबर मन्त्र···७२, महा-लक्ष्मी का साबर मन्त्र···७२]

१५—शाबर-त्रितय ७३

• महन्त हरिहरशरण देव, दुर्ग (मध्य प्रदेश)
[श्री नारसिङ्गी देवी का साबर मन्त्र···७३, हनुमान जी का साबर मन्त्र···७३, साबर हनुमान-जञ्जीरा···७३]

१६—शाबर-तन्त्रम् ७४

• (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय से प्राप्त पाण्डुलिपि)
[मांसादि-जीव-बलि-मन्त्र, नित्यमर्द्ध - रात्रे, चतु-ष्पथि, बलि-मन्त्र, पर सैन्य-ग्रहारिष्ट - रोग-कृत्या - विनाशनं (भोजन-काले बलिः), पर-विद्याऽऽकर्षण-बलिः (अथापरो भोजन-काले मधु-मांस-माषात्मक-बलिः), प्रथमादि-बलि-मन्त्रः, काम्य-बलि-मन्त्रः-सर्व - सर्वार्थदः, भाषा-भोजन-बलि-मन्त्रः, अन्न-बलि-मन्त्रः···७५, शत्रु - बलि-मन्त्रः, बटुक-दर्शन-मन्त्रः, योगिनी - मन्त्र ७६ क्षेत्रपाल-मन्त्रः, गणेश - मन्त्रः, बटुक-विधिः, योगिनी-विधिः···७७, मन्त्र-उच्चाटन, जुआ जीतने का मन्त्र, खाङ्ग (खँगवा) झारने का मन्त्र, क्षेत्रपाल - विधिः, गणेश-विधिः···७८, काली-मन्त्र···७९, भैरवी भाषा - मन्त्र, त्रिपुर - सुन्दरी मन्त्र, हेलको, मातङ्गी - मन्त्र, उच्छिष्टा - मन्त्रः···८०, दन्त-पीड़ा-निवारक मन्त्र···८१, प्रेत-झारने एवं प्रत्यक्ष करने का मन्त्र, बैरी खसावै कै मन्त्र, नजर - टोना झारने का मन्त्र···८२, टोना झारने का मन्त्र, रक्षार्थ मन्त्र, मोहन मन्त्र···८३)

१७—श्रीकाली-शाबर ८७-९६

• (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय से प्राप्त पाण्डुलिपि)
[प्रथम 'परिभाषा' पटल····८७, द्वितीय 'काली - संक्षेप' पटल···९१, तृतीय 'काली-शाबर' पटल···९४]

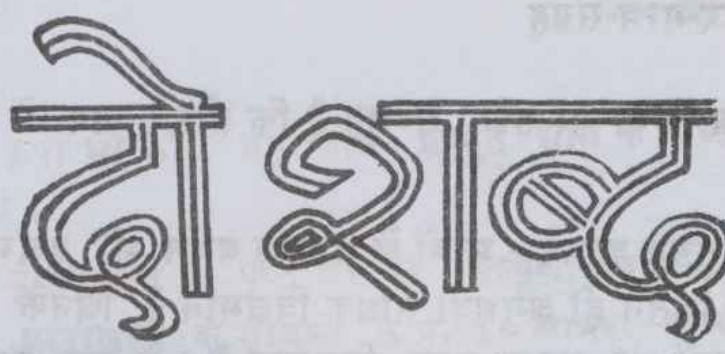

'शाबर-मन्त्रों की साधना' प्राचीन काल से गुप्त तो रही ही है, उस पर आधुनिक विद्वानों द्वारा विधि-वत् शोध करने का भी कोई प्रयास नहीं किया गया है। तथापि प्रस्तुत **'शाबर-मन्त्र-संग्रह'** के पहले भाग में **'दो शब्द'** (पृष्ठ पाँच से आठ), **'शाबर-मन्त्र-विज्ञान'** (पृष्ठ १६ से २२) और **'शाबर - मन्त्र - साधना में गुरु-तत्त्व'** (पृष्ठ २३ से ३०) शीर्षकों के अन्तर्गत इस लोक-प्रिय आध्यात्मिक साधना पर कुछ शोधात्मक प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया। यह प्रयत्न पूर्ण रूप से सम्पन्न नहीं हो सका, इसके तीन मुख्य कारण रहे—

१ शाबर - मन्त्रों के समुचित रूप से सम्पादित संग्रह का अभाव : कदाचित् पहली बार ऐसे 'सग्रह' को प्रकाशित करने के प्रति 'कल्याण मन्दिर प्रकाशन' द्वारा ध्यान दिया गया और **'संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी'** में संगृहीत उन दुर्लभ पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ प्राप्त करने का प्रयास किया गया, जिनसे शाबर मन्त्रों की साधना पर प्रामाणिक प्रकाश पड़ सकता है। हर्ष की बात है कि उक्त पाण्डु-लिपियाँ मिल चुकी हैं और उनमें से एक पाण्डुलिपि के कुछ अंश का प्रकाशन इस दूसरे भाग में किया भी गया है।

विचार करने की बात है कि सारे देश में—गाँव और झोपड़ियों में निवास करनेवाली असंख्य जनता में जिस **'शाबर-विद्या'** का प्रायः प्रतिदिन प्रयोग होता रहा है, उसके सम्बन्ध में एक भी ऐसी पुस्तक उपलब्ध नहीं है, जिससे इस लोकोपयोगी **'विद्या'** पर साङ्गो-पाङ्ग प्रकाश पड़ता हो ! यत्र-तत्र जो मन्त्रादि और उनके विवरण मिलते भी हैं, वे इतने अस्पष्ट और भ्रामक हैं कि उनके आधार पर प्रामा-णिक रूप से कुछ लिखना सरल काम नहीं है।

प्रस्तुत **'शाबर - मन्त्र - संग्रह'** के दो भागों में जितनी सामग्री प्रकाशित हुई है, वह भी इतनी और ऐसी नहीं है कि उक्त काम

को सम्पन्न किया जा सके। सम्भव है कि तीसरे भाग में ऐसी स्थिति न रहे।

२ अनुभूत शाबर - मन्त्रों के सविधि वर्णन की दुर्लभता : देश में आज भी कितने ही अनुभवी साधक विद्यमान हैं, जिनके पास अनुभूत शाबर-मन्त्रों का अच्छा संग्रह विद्यमान है। वे उन मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि भी जानते हैं, किन्तु गोपनीयता के कारण उनमें से अधिकांश महानुभाव वह सब लिखकर भेजना नहीं चाहते। जो 'शाबर-मन्त्र' प्रकाशनार्थ मिले भी, उनमें से अनेक के सम्बन्ध में न तो विधि लिखी गई और न स्पष्ट रूप से यह बताया गया कि उसके जप द्वारा जप-कर्ता को कौन-सा लाभ मिलेगा! तथापि कुछ उदार अनुभवी साधकों ने अपने अनुभूत 'शाबर-मन्त्र' ही नहीं भेजे, उनकी विधि भी विस्तार से लिखने की कृपा की। इन सभी 'शाबर' मन्त्रों को विधि-सहित शब्दशः पहले और इस दूसरे भाग में प्रकाशित किया गया है।

कितने ही सजग पाठकों ने पहले भाग को पढ़कर विविध शङ्काएँ, जिज्ञासाएँ और अपनी धारणाएँ लिख भेजी हैं, किन्तु अभी उनके सम्बन्ध में कुछ लिखना उचित नहीं प्रतीत होता क्योंकि प्रस्तुत दूसरे भाग के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार के और भी प्रश्न तथा उनके समाधान विज्ञ अनुभवी पाठकों से मिलने की आशा है।

३ शाबर-मन्त्रों के सम्बन्ध में शब्द-कोष का अभाव : सु-सम्पादित रूप में 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' प्रकाशित करने के लिए एक ऐसे शब्द-कोष की बड़ी आवश्यकता है, जिसमें इन मन्त्रों में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ दिया हो। प्रायः लोगों की यह धारणा है कि इन मन्त्रों की विशेषता ही है—**'अनमिल आखर, अरथ न जापू'**, किन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं। थोड़ा-सा भी ध्यान देने से पता चल जाता है कि 'शाबर-मन्त्रों' के प्रत्येक शब्द का अपना 'अर्थ' है। उस 'अर्थ' को सर्व-सुलभ करने के लिए **'शाबर-मन्त्र-कोष'** का होना अति आवश्यक है। पहले भाग के 'दो शब्द' के अन्तर्गत इस सम्बन्ध में विज्ञ महानुभावों से अनुरोध भी किया गया, जिसके फल-स्वरूप **श्री भैरवानन्दनाथ जी** ने अपने शाबर-मन्त्र-संग्रह के सम्बन्ध में एक 'शब्द - कोष' लिखकर

भेजने की कृपा भी की। यह 'कोष' प्रस्तुत भाग के पृष्ठ ११ पर प्रकाशित है।

प्रस्तुत दूसरे भाग के पृष्ठ ७४ पर **'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय', वाराणसी** के सौजन्य से प्राप्त **'शाबर - तन्त्रम्'** नामक 'पाण्डुलिपि' का प्रकाशन किया गया है। यह दुर्लभ कृति सम्वत् १९४१ **विक्रमी** अर्थात् लगभग ११० वर्ष पूर्व की लिखी है। लिपि-कार कोई **'पं. विनायक धर द्विवेद'** हैं। पाण्डुलिपि बड़े स्पष्ट अक्षरों में है, किन्तु अनेक अक्षरों की बनावट प्राचीन शैली में होने के कारण शुद्ध शब्दों को समझ पाना सरल नहीं है। साथ ही एक अन्य जटिलता भी उल्लेखनीय है। प्राप्त प्रतिलिपि के अनुसार 'पाण्डुलिपि' का विवरण निम्न प्रकार है—

प्रवेश-संख्या : ५८१६६, विषय : तन्त्रम्, **क्रम-संख्या : ३/८२, नाम :** शाबर-तन्त्रम्, **पत्र-संख्या :** १-३६, **श्लोक-संख्या :** (नहीं दी है), **अक्षर - संख्या :** १७, **पंक्ति - संख्या (पृष्ठे) :** १७, **आकार :** ७.९ × ६.३, **लिपि :** देवनागरी, **आधार :** का, **विशेष विवरणम् :** अपूर्ण। द्वि. ४५९७।

उक्त विवरण के अनुसार प्रतीत होगा कि इस **'पाण्डुलिपि'** में एक ही पुस्तक है, किन्तु ऐसा है नहीं। प्रारम्भ का वाक्य है—**'अथ** सिद्ध शावर लिख्यते'। इससे स्पष्ट है कि **'सिद्ध शाबर'** नामक किसी कृति को लिपि-बद्ध किया जा रहा है, किन्तु 'पाण्डुलिपि' के पृष्ठ २४ पर, जहाँ इस कृति की समाप्ति होती है, वहाँ लिखा है : **'इति श्री-गोरक्ष-सिद्धि-सोपाने पञ्चदशतमं पोठं समाप्तम्** किन्तु **'पाण्डुलिपि'** के पृष्ठ–८ पर लिखा है : **'इति श्री गोरक्ष - सिद्धि - हरणे दत्तात्रेय-सिद्धि-सोपाने भाषा - विधिः।'** पुनः पृष्ठ १४ पर लिखा है : **'इति श्री गोरक्ष-सिद्धि-हरणे दत्तात्रेय-सिद्धि-सोपाने तृतीयं पीठम्।'** पृष्ठ १६ पर इसी प्रकार **'चतुर्थ-पीठं'** का और पृष्ठ १९ पर **'डाकिनि-शमनं नाम पञ्चम-सोपानं'** का उल्लेख है। **'पाण्डुलिपि'** के पृष्ठ २१ पर लिखा है—**'यहाँ से १९ पत्रा खण्डित हैं।'** पुनः पृष्ठ २२ पर लिखा है— **'इति श्रीदिव्य-शाबरे गोरक्ष-सिद्धि-हरणे दत्तात्रेय-सिद्धि-सोपाने चतुर्दशतमं पोठं समाप्तम्।'**

स्पष्ट है कि यह 'पाण्डुलिपि' किसी **'दिव्य - शाबर'** नामक ग्रन्थ का खण्डित स्वरूप प्रस्तुत करती है। इस ग्रन्थ के बाद लिपिकार ने **'काली - शाबर'** नामक दूसरी पुस्तक के तीन पटलों को लिखा है, जो इस भाग के पृष्ठ ८७ पर प्रकाशित है। उसके बाद लिपिकार द्वारा **'पाण्डुलिपि'** के पृष्ठ २६ से ३६ तक के आठ पृष्ठों में क्रमशः अनेक प्रयोगों की प्रतिलिपि सम्वत् १६५१ (सन् १८८४) में की गई है।

इस प्रकार **'शाबर तन्त्रम्'** नामक वाराणसी की ३६ पत्रों की पाण्डुलिपि में एकाधिक तन्त्र - ग्रन्थों के अंशों की प्रतिलिपियाँ समाविष्ट हैं। ऐसी दशा में जब तक शेष पाण्डुलिपियों का अवलोकन एवं प्रकाशन नहीं किया जाता, तब तक उनके आधार पर **'शाबर-मन्त्र-साधना'** पर व्यवस्थित रूप से कुछ लिखना सम्भव नहीं है। अतः पाठकों को इस संग्रह के तीसरे भाग की प्रतीक्षा करनी होगी।

अन्त में निवेदन है कि इस 'संग्रह' के किसी भी मन्त्र का प्रयोग कोई भी पाठक तभी करें, जब उन्हें किन्हीं **'शाबर-मन्त्र-साधक'** का मार्ग-दर्शन सुलभ हो। केवल पुस्तक के आधार पर किसी भी मन्त्र की साधना करना निषिद्ध है।

चण्डी कार्यालय, प्रयाग —**ऋतशील शर्मा**

मकर-संक्रान्ति २०४८ वि० : १५ जनवरी, १६६२

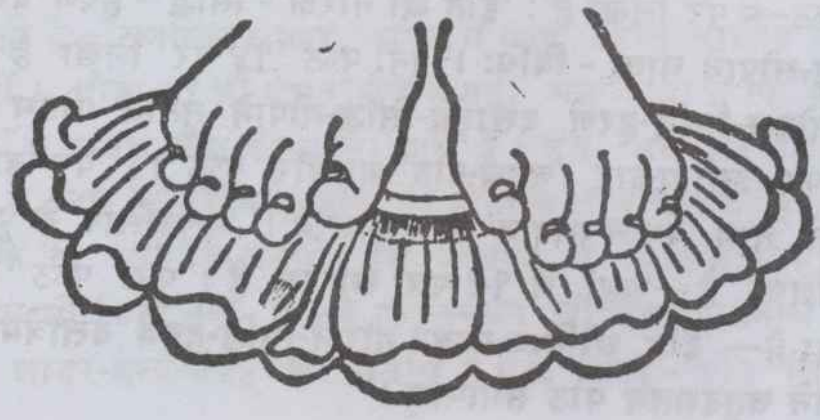

शाबर शब्द-कोष

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ, १०८ चकराघाट, सागर (म. प्र.)

['शाबर' मन्त्रों के विषय में प्रसिद्ध है कि 'अनमिल आखर अरथ न जापू' अर्थात् वे अर्थ - हीन होते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है। प्रत्येक 'शाबर मन्त्र' का कुछ-न-कुछ अर्थ होता है। यह अवश्य है कि ग्रामीण और विभिन्न प्रदेशों की लोक - भाषाओं के शब्दों के मेल से ये मन्त्र बने हैं। इसी से उनका पूरा अर्थ समझना कठिन है। आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न भाषाओं के जानकार प्रत्येक मन्त्र के प्रत्येक शब्द पर विचार कर उसके भावार्थ को उजागर करें। निस्सन्देह यह एक कठिन कार्य है, किन्तु असम्भव नहीं है। उदाहरण के लिए हमारे अनुरोध पर प्रथम भाग के पृष्ठ ३१ पर प्रकाशित 'शाबर-मन्त्र-सप्तक' के प्रस्तुत-कर्ता श्री भैरवानन्दनाथ जी ने अपने मन्त्रों से सम्बन्धित 'शाबर-शब्द-कोष' लिखकर भेजने की कृपा की है। क्या ही अच्छा हो कि 'शाबर-भाषा' के अन्य मर्मज्ञों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो। सबके सहयोग से एक विस्तृत उपयोगी कोष का प्रकाशन सम्भव है, जो 'शाबर-विद्या' के शोध-कार्य में अति उपयोगी सिद्ध होगा।--सं०]

अकथ	न कहने योग्य, अवर्णनीय
अईसा	ऐसा
अगसर	अकेला, एकाकी
अगुवानी	आगे आकर स्वागत करना
अजर	स्थायी, जिसे कभी बुढ़ापा न आए
अजीया	मरा हुआ
अजरी	स्थायी, पक्का, सदा-बहार
अनाड	मूर्ख, दुःखी
अम्मरताई	अमरता, नित्यत्व, मरण-हीनता
अमुकादिद	अमुक का

अरज	प्रार्थना, विनती, निवेदन
आकुरा	जाँचा हुआ, पैदा हुआ, अंकुरित
आपद	आपत्ति, मुसीबत, सङ्कट
आरवास	शनि-ग्रह, लोहा
आस	आशा, उम्मीद, भरोसा, आसरा
इश्क	प्रेम, प्यार, मुहब्बत
उबारा	बचा लिया, उद्धार किया
ऋतम्भरा	बुद्धि, प्रज्ञा
ओंसई	वैसा ही, ज्यों-का-त्यों
ककवा	कङ्घी या कङ्घा
कखलाई	काँख में होनेवाला फोड़ा
कने	के यहाँ
करन्ता	करनेवाला
करेजा	हृदय, दिल
कवन	कौन
काज	काम, कार्य, बटन हेतु छेद
काढ़	निकालना, उबारना
किलकन्त	किलकारी मारता हुआ
किलोल	किलकारी मारना, खेलना
किश्ती	नाव, नौका
कुन्थ	कष्ट सहनेवाला, सहन-शील
कुरङ्ग-नेत्री	मृग-नयनी, सुन्दर स्त्री
कुरी	कपटी, कठोर
कैलेहु	करना, किया
कोइला	कोयला
खल	दुष्ट, नीच, अधम
खांडा	खड्ग, तलवार
खोस	दाँत
गर	विष, जहर
गर्विणी	घमण्डी स्त्री
गाजन्ता	गरजनेवाला

गाई	गाय, गाना
गुन्हाई	दोष
गुरन	गुरु-जन
घालों	मारना, लौटाना
घोरन्ता	भयानक रूप दिखानेवाला, भय पैदा करनेवाला
चमरी	चमर जाति की गाय, काम-धेनु
चिनऊं	पहचानना, जानना
चुलही	छोटा चूल्हा, खुजली रोग, कामातुर स्त्री
छबा	आकृति, डोल, शोभा, बड़ा टोकरा
ज्वान	जवान, युवा
जम्बीर	जंबीरी नीबू
जमुआ	धनुष्टङ्कार (टिटेनस) रोग
जमोगा	धनुष्टङ्कार (टिटेनस) राग
जुठैर	जूठन, उच्छिष्ट
डंडवारे	ऊँची दीवारें
टपका	बूंद
तज	त्यागना, छोड़ना
तमन्ना	इच्छा, कामना
तलाई	तलैया, छोटा तालाब
तिहारा (री)	तुम्हारा (री)
तुच्छ	छोटा, निकृष्ट, निम्न
तुषादी	भूसा, चोकर
तेकर (रे)	उसका (के)
थनैला (ली)	स्तन का फोड़ा, स्तन पकना
दम्भी	घमण्डी
दमामा	घोंसा, नगाड़ा, दुन्दुभि, डङ्का
दुष्ट-घर्षिणी	दुष्टों का नाश करनेवाली, दुर्गा
द्रुम	वृक्ष, पारिजात (कल्प-द्रुम)
द्रुमाली	एक राक्षस का नाम, माली
द्रुम-द्रुमाली	पेड़ों का रक्षक या माली
दुवार	द्वार

बुलीचा	झूला
घड़ा	जत्था, समूह
घड़ी	रेखा, पाँच सेर की तौल
धर्ती	पृथ्वी, भूमि, धारण करनेवाली
धनुही	छोटा धनुष
नजर	दृष्टि
नियन्ता	शासन करनेवाला, सारथी
निरञ्जन	निष्कलङ्क, निर्मल, भगवान् शिव
पचारई	पचाना, जीर्ण करना, हजम करना
पदाम्बुज	चरण-कमल
पाइन	पैर, चरण
पामर	दुष्ट, नीच, अधम
पुष्प-धन्वी	काम-देव, मन्मथ, मदन
पोर	गाँठ, ग्रन्थि
फलाने (नी)	अमुक (की)
बक-वत्	बगुले के समान
बटोहिया	राहगीर, मुसाफिर
बहेर	लौटाना, उलटाना
बाट	राह, रास्ता, गली, सड़क
बावला	विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल
बिलारी	बिल्ली, कद्दूकस, द्वार की चटखनी
बिसतुइया	छिपकली
बूत	शक्ति, ताकत
भकुरा	ठूँस-ठूँस कर खानेवाला
भर्ता	पति, स्वामी, रक्षक
भिदाती	तोड़ती, फाड़ती, चीरती
भूपनहि	राजाओं से
भैन	बहिन, भगिनी
भौंधरा	तल-घरा
मछन्द्रनाथ	मत्स्येन्द्रनाथ
मलाल	दुःख, शोक, खेद

मसान	श्मशान, मरघट, पितृ-कानन
माकड़ा	बड़ी जाति की मकड़ी
माथ	माथा, मस्तक, ललाट
मारकण्डे	मार्कण्डेय
मोहाइले	मोहित करना, वश में करना
राघविनी	राघव (राम) की पत्नी सीता
ल्याऊ	ले आओ
लिलार	माथा
लीजै	लीजिए
लूण	नमक
वज्जर	वज्र
वनरा	जङ्गली
वर्द्धित	बढ़ा हुआ
वरण	वेष्टन, लपेटना, बीनना, आवाहन करना
वर-वर्णिनी	सुन्दर वर्णवाली, सुन्दरी
वाज	बाज पक्षी
वाट	मार्ग, पथ, रास्ता
वाही	वही, उसी
विधात्री	निर्माण करनेवाली, ब्रह्माणी
विनसे	नष्ट होना, बिगड़ना
विषाद	शोक, दुःख, क्लेश, खेद
शक्र	देव-राज इन्द्र
शार्दूल-वाहना	भगवती दुर्गा
सत-वन्ती	सती, सत्य-वादिनी
सहाई	सहाय, सहायक, मददगार
साँकुली	साँकल, शृङ्खला, अर्गला
सिताङ्गी	मनोरमा स्त्री
सीर	जुड़ना, सम्बन्ध रखना, मिलना
सुवरन	अच्छे वर्ण (जाति) का, स्वर्ण
सूं	से
सूर	वीर, बहादुर

सुरही	दिव्याङ्गना, अप्सरा, गङ्गा, कामधेनु
ओवई	बहा देना
सेऊँ	रक्षा करना, बचाना
सोहे	अच्छा लगना
हनिवन्त	हनुमान
हाड़	हड्डी

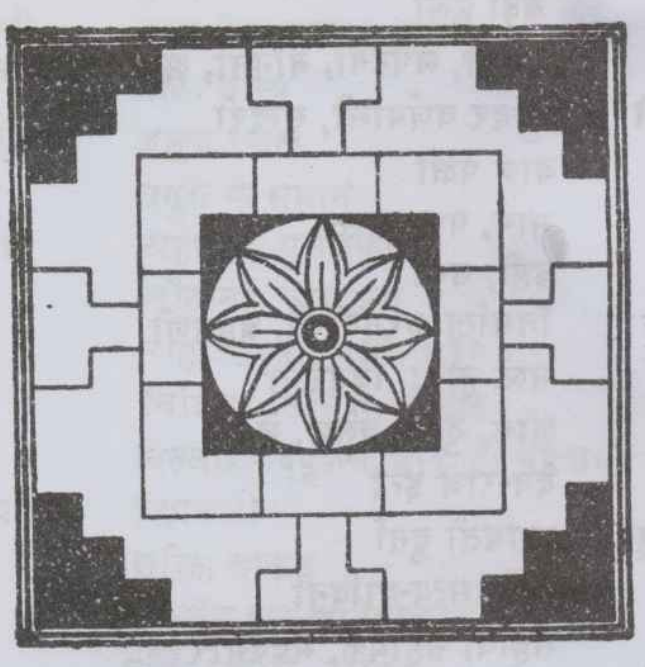

शीघ्र फल-दायक सिद्ध

शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : डा० एच० एम० तिवारी, दतिया, (म० प्र०)

परिचय : 'साबर' का प्रतीक अर्थ होता है ग्राम्य, अपरिष्कृत। 'साबर तन्त्र'—'तन्त्र' की ग्राम्य-शाखा है। इसके प्रवर्तक भगवान् शङ्कर प्रत्यक्ष-तया नहीं हैं, किन्तु जिन सिद्धों ने इसका आविष्कार किया, वे परम शिव - भक्त अवश्य थे। गुरु गोरखनाथ तथा गुरु मछन्दरनाथ 'साबर-तन्त्र' के जनक हैं। अपने तप - प्रभाव से वे भगवान् शङ्कर के समान पूज्य माने जाते हैं। अपनी साधना के कारण वे मन्त्र-प्रवर्तक ऋषियों के समान विश्वास और श्रद्धा के पात्र हैं। 'सिद्ध' और 'नाथ' सम्प्रदायों ने परम्परागत मन्त्रों के मूल सिद्धान्तों को लेकर बोल-चाल की भाषा को मन्त्रों का दर्जा दे दिया।

'साबर' मन्त्रों में 'आन' और 'शाप', 'श्रद्धा' और 'धमकी'—दोनों का प्रयोग किया जाता है। साधक 'याचक' होता हुआ भी देवता को सब कुछ कहता है, उसी से सब कुछ कराना चाहता है! आश्चर्य यह है कि उसकी यह 'आन' भी काम करती है। 'आन' का अर्थ है—सौगन्ध। उस युग को गए अधिक समय नहीं हुआ, जब 'सौगन्ध' एक अन्तिम और अमोघ बाड़ रहा करती थी। सामन्त-शाही युग में भारत के छोटे-से-छोटे गाँव तक में यदि कोई व्यक्ति अनधिकृत निर्माण करता था या किसी की जमीन पर कोई दूसरा मकान बनाने लगता, तो गाँव के 'ठाकुर' की या 'गाय' की सौगन्ध दिलाने पर वह अवैध कार्य रुक जाया करता था। आज भी न्यायालय में भगवान् की 'शपथ' लेकर बयान देने की प्रथा है। अधिकांश लोग अपनी बात का विश्वास दिलाने के लिए आज भी सौगन्ध खाया करते हैं।

यह उस जमाने की बात है, जब 'बावरिया' (क्षुद्र और जरायम-पेशा जन-जाति) भी 'सौगन्ध' को नहीं तोड़ता था। बेईमानी की भी

एक हद होती थी। आज स्थिति बदल गई है, किन्तु 'साबर' मन्त्रों में जिन देवों की 'सौगन्ध' दिलाई जाती है, वे आज भी वैसे ही हैं। उन पर जमाने की बेईमानी का कोई असर नहीं पड़ा है। जैसे भगवान् हनुमान को शपथ दिलाई जाए कि **'या तो मेरा यह काम कर देना, अन्यथा अञ्जनी माता की शैया पर पग धरेगा !'** (इतना बड़ा पाप लगेगा)। **'ले भैरव ! मेरे इस कार्य को सम्पूर्ण कर देना, अन्यथा धोबी की नाँद में कङ्कर हो जाएगा !'**

शास्त्रीय प्रयोगों में उक्त प्रकार की 'आन' नहीं रहती। एक साधक अपने आराध्य देव के प्रति वैसा कथन नहीं करता, करना भी नहीं चाहिए, किन्तु एक अबोध बालक अपने माता-पिता से रोष में आकर चाहे जो कह देता है, हठ कर बैठता है। अबोध बालक छल-छन्द नहीं जानता। वह तो मात्र इतना जानता है कि 'मेरे माता-पिता मात्र हैं, वे सब कुछ कर सकते हैं और जो कुछ मैं कहूँगा, उसे पूरा करेंगे ही।' इसी प्रकार का विश्वास 'साबर' - मन्त्रों का साधक मन्त्र के देवता के प्रति रखता है। जिस प्रकार अबोध बालक की अभद्रता पर उसके माता - पिता अपने वात्सल्य-प्रेम के कारण कोई ध्यान नहीं देते, वैसे ही बाल - सुलभ 'सरलता' और 'विश्वास' के आधार पर 'साबर' मन्त्रों की साधना करनेवाला सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

'साबर'-मन्त्रों में संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय—सभी भाषाओं का उपयोग मिलता है। किन्हीं-किन्हीं मन्त्रों में संस्कृत और मलयालम, कन्नड़, गुजराती या तमिल भाषाओं का मिश्रित रूप मिलेगा, तो किन्हीं में शुद्ध क्षेत्रीय भाषाओं की ग्राम्य-शैली और कल्पना भी मिल जायगी।

भारत के एक बड़े भू-भाग में बोली जानेवाली भाषा 'हिन्दी' है। अतः अधिकांश 'साबर' - मन्त्र हिन्दी में ही मिलते हैं। इन मन्त्रों में शास्त्रीय मन्त्रों के समान **'षडङ्ग'**—१ ऋषि, २ छन्द, ३ बीज, ४ शक्ति, ५ कीलक और ६ देवता—की योजना अलग से नहीं रहती अपितु इन अङ्गों का वर्णन मन्त्र में ही निहित रहता है। इसलिए प्रत्येक 'साबर' मन्त्र अपने आप में पूर्ण होता है। उपदेष्टा **'ऋषि'** के रूप में गोरखनाथ, सुलेमान जैसे सिद्ध - पुरुष हैं। कई मन्त्रों में

इनके नाम लिए जाते हैं और कइयों में केवल 'गुरु' के नाम से ही काम चल जाता है।

'पल्लव' (मन्त्र के अन्त में लगाए जानेवाले शब्द) के स्थान में **'शब्द साँचा पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा'**—वाक्य ही सामान्यतः रहता है। इस वाक्य का यह अर्थ है कि 'शब्द सत्य है, नष्ट नहीं होता। यह देह अनित्य है, बहुत कच्चा है। हे मन्त्र, तुम ईश्वरी वाणी हो (ईश्वर के वचन से प्रकट होओ)। इसी प्रकार के या इससे मिलते-जुलते दूसरे शब्द इन मन्त्रों के 'पल्लव' होते हैं।

भले ही 'साबर'-मन्त्रों को शास्त्रीय मान्यता न मिली हो, किन्तु ये अशास्त्रीय प्रयोग लाभ और उपयोगिता की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखते हैं।

आज भी, भारत ही नहीं, संसार के अधिकांश क्षेत्रों में **'साबरी'** तन्त्र का व्यापक प्रचार और प्रभाव दिखाई देता है। गोरखनाथ, मछन्दरनाथ जैसे सिद्धों ने जन-समाज का बहुत उपकार किया कि उन्होंने गूढ़ और जटिल **'मन्त्र-विज्ञान'** को साधारण व्यक्तियों के लिए 'साबर'-जैसा उपयोगी स्वरूप दे दिया।

'साबर-तन्त्र' हमें ज्ञान की उच्च भूमिका नहीं देता, न वह मुक्ति का माध्यम है। उसमें केवल **'काम्य प्रयोग'** ही हैं। उसमें संगृहीत 'साबर' मन्त्र प्रचलित लोक-भाषा में ही हैं, जिनके सम्बन्ध में विनियोग, न्यास, तर्पण, हवन, मार्जन, शोधन आदि जटिल विधियों की कोई आवश्यकता नहीं होती। फिर भी वशीकरण, मोहन, उच्चाटन आदि षट्-कर्मों, रोग-निवारण तथा प्रेत-बाधा शान्त करने में जहाँ शास्त्रीय प्रयोग कोई फल तुरन्त या विश्वसनीय रूप में नहीं दे पाते, वहाँ 'साबर-मन्त्र' अच्छा और पूरा काम करते हैं।

'साबर-मन्त्र-साधना' के महत्त्व-पूर्ण तथ्य

१ इस साधना को किसी भी जाति, वर्ण, आयु का पुरुष या स्त्री कर सकती है।

२ इन मन्त्रों की साधना में गुरु की इतनी आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि इनके प्रवर्तक स्वयं सिद्ध साधक रहे हैं। इतने पर भी

कोई निष्ठा-वान् साधक गुरु बन जाए, तो कोई हर्ज नहीं क्योंकि किसी होनेवाले विक्षेप से वह बचा सकता है।

३ साधना करते समय किसी भी रङ्ग की धुली हुई धोती पहनी जा सकती है तथा किसी भी रङ्ग के कम्बल का आसन बिछाया जा सकता है।

४ साधना में घी या मीठे तेल का दीपक प्रज्वलित रखना चाहिए, जब तक मन्त्र-जप चले।

५ अगरबत्ती या धूप किसी भी प्रकार की प्रयुक्त हो सकती है, परन्तु 'साबर-मन्त्र' की साधना में गूगल तथा लोबान की अगरबत्ती या धूप की विशेष महत्ता मानी गई है।

६ जहाँ 'दिशा' का निर्देश न हो, वहाँ पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके साधना करनी चाहिए।

७ जहाँ 'माला' का निर्देश न दिया हो, वहाँ कोई भी 'माला' प्रयोग में ला सकते हैं।

८ 'साबर'-मन्त्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं. साथ ही विषमता यह है कि इनकी साधना करते समय प्रायः भयानक अनुभव होते हैं। विचित्र प्रकार की आवाजें सुनाई देती हैं या डरावनी शक्लें दिखने लगती हैं। इसलिए धैर्य और साहस आवश्यक हैं। ऐसी घटनाएँ हर प्रयोग में नहीं होतीं।

९ 'साबर' - मन्त्रों पर पूर्ण श्रद्धा होनी आवश्यक है। अधूरा विश्वास या मन्त्रों पर अश्रद्धा होने पर फल नहीं मिलता।

१० साधना-काल में एक समय भोजन करें और ब्रह्मचर्य-पालन करें। मन्त्र-जप करते समय नहा-धोकर बैठना चाहिए।

११ साधना दिन या रात्रि किसी भी समय कर सकते हैं।

१२ 'मन्त्र' का जप जैसा-का-तैसा करें। उच्चारण शुद्ध रूप से होना चाहिए।

१३ साधना-काल में हजामत बनवा सकते हैं। अपने सभी कार्य-व्यापार या नौकरी आदि सम्पन्न कर सकते हैं।

१४ मन्त्र-जप घर में एकान्त कमरे में या मन्दिर में या नदी के किनारे--कहीं भी किया जा सकता है।

१५ 'साबर-मन्त्र' की साधना यदि अधूरी छूट जाय या साधना में कोई कमी रह जाय, तो किसी प्रकार की हानि नहीं होती।

'साबर'-मन्त्रों को सिद्ध कैसे करें ?

'साबर' मन्त्रों की 'साधना' के पूर्व **'सर्वार्थ-साधक'** मन्त्र को २१ बार जप लेना चाहिए। इसके बाद अपने अभीष्ट मन्त्र की साधना करें। 'सर्वार्थ-साधक' मन्त्र का जप करते समय ध्यान रखें कि इसका कोई भी शब्द या वर्ण उच्चारण में अशुद्ध न हो। यह जैसा है--ऐसा ही—ज्यों-का-त्यों पढ़ना चाहिए। यथा--

"गुरु सठ गुरु सठ गुरु हैं वीर, गुरु साहब सुमरौं बड़ी भाँत। सिङ्गी टोरों बन कहौं, मन नाऊँ करतार। सकल गुरु की हर भजे, घट्टा पकर उठ जाग, चेत सम्भार श्री परम-हंस।"

इसके पश्चात् गणेश जी का ध्यान करके नीचे लिखे मन्त्र की एक माला जपें--

ध्यान : वक्र - तुण्ड, महा - काय ! कोटि-सूर्य-सम-प्रभ !
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्व - कार्येषु सर्वदा ।।

मन्त्र : "वक्र-तुण्डाय हुं।"

फिर निम्न-लिखित मन्त्र से दिग्बन्धन कर लें—

दिग्बन्धन-मन्त्र : "वज्र-क्रोधाय महा - दन्ताय दश - दिशो बन्ध बन्ध, हूं फट् स्वाहा।

उक्त मन्त्र को जपने से दशों दिशाएँ बँध जाती हैं और किसी प्रकार का विघ्न साधक की साधना में नहीं पड़ता। नाभि में दृष्टि जमाने से ध्यान बहुत शीघ्र लगता है और मन्त्र शीघ्र सिद्ध होते हैं।

इसके बाद मन्त्र को सिद्ध करने के लिए उसका जप करना चाहिए। जप किस समय, किस स्थान पर और कितनी संख्या में करना चाहिए, यह मन्त्रों के साथ लिख दिया गया है। वैसे इस कार्य के लिए 'दशहरा', 'दीपावली', 'होली की रात्रि', 'ग्रहण - काल' तथा 'शिव-रात्रि' अच्छे पर्व माने जाते हैं।

शरीर-रक्षा के मन्त्र

'मन्त्र-विद्या' का प्रयोग करनेवाले को देहाती भाषा में **'ओझा'** कहते हैं। **'ओझा'** भी जब झाड़-फूंक के लिए कहीं जाता है, तो घर

से चलते समय या उस स्थान पर पहुँच कर सबसे पहले अपने शरीर की रक्षा के लिए शरीर-रक्षा का मन्त्र पढ़ लेता है, जिससे यदि उस स्थान पर भूत-प्रेतादि का उपद्रव हो, तो वे उसे हानि न पहुँचा सकें। कभी-कभी ओझाओं में आपस में वैमनस्य हो जाता है और एक दूसरे को क्षति पहुँचाने के लिए 'मूठ' या अन्य तान्त्रिक प्रयोग कर बैठता है। यदि 'शरीर-रक्षा' का मन्त्र पढ़कर पहले से ही अपने शरीर को सुरक्षित कर लिया जाय, तो किसी मन्त्र-तन्त्र का कोई प्रभाव शरीर पर नहीं होगा।

'शरीर-रक्षा' के कुछ 'साबर'-मन्त्र यहाँ दिए जा रहे हैं--

१ उत्तर बांधों, दक्खिन बांधों, बांधों मरी मसानी, डायन भूत के गुण बांधों, बांधों कुल परिवार, नाटक बांधों, चाटक बांधों, बांधों भुइयां बैताल, नजर गुजर देह बांधों, राम दुहाई फेरों।

२ जल बांधों, थल बांधों, बांधों अपनी काया, सात सौ योगिनी बांधों, बांधों जगत की माया, दुहाई कामरू कमक्षा नैना योगिनी की, दुहाई गौरा पार्वती की, दुहाई वीर मसान की।

विधि : उक्त दो मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र को अधिक-से-अधिक संख्या में किसी पर्व - काल में जप लेने से वह सिद्ध हो जाता है। 'शरीर-रक्षा' की आवश्यकता पड़े, तो 'सिद्ध' मन्त्र का नौ बार उच्चारण करके हाथ की हथेली पर नौ बार फूंक मारे और हथेली को पूरे शरीर पर फिरा दे। इससे देह बँध जाएगी।

३ ॐ नमः वज्र का कोठा, जिसमें पिण्ड हमारा बैठा। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्मा का ताला, मेरे आठों याम का यति हनुमन्त रखवाला।

विधि : किसी मङ्गलवार से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। दस हजार जप द्वारा 'पुरश्चरण' कर ले। श्री हनुमान जी को सवाया रोट का 'चूर्मा' (गुड़, घी मिश्रित) अर्पित करें। कार्य के समय मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर शरीर पर हाथ फिराएँ, तो शरीर रक्षित हो जाता है।

४ छोटी-मोटी थमन्त—वार को वार बांधे, पार को पार बांधे, मरघट-मसान बांधे, जादू वीर बांधे, दीठ-मूठ बांधे, चोरी-छीना बांधे, भेड़िया - बाघ बांधे, लखूरी - स्यार बांधे, बिच्छू और सांप बांधे,

लाइल्लाह का कोट, इल्लल्लाह की खाई, मोहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी, हजरत अली की दुहाई ।

विधि : जब तक 'ग्रहण' या 'पर्व-काल' रहे, उक्त मन्त्र को जपता रहे, तो यह सिद्ध हो जाता है । मन्त्र को सात बार बोलकर दाँएँ या बाँएँ--किसी भी हाथ से, किसी भी घुटने पर, ताल दें अर्थात् हाथ मारें । यदि किसी अशुभ स्थान में रहना हो, तो वहाँ मन्त्र बोल कर अपने चारों ओर एक रेखा-सी खींच लें । इस रेखा के मध्य शरीर रक्षित रहेगा ।

गण्डा देने का मन्त्र

बन्ध तो बन्ध, मौला मुर्त्तजा अली का बन्ध, कीड़े और मकोड़े का बन्ध, ताप और तिजारी का बन्ध, जड़ी और बुखार का बन्ध, नजर और गुजर का बन्ध, दीठ और मूठ का बन्ध, कीए और कराए का बन्ध, भेजे और भिजाए का बन्ध, पैरों और हाथन का बन्ध, बन्ध तो बन्ध, मौला मुर्त्तजा का बन्ध, राह और बाट का बन्ध, जमीन और आसमान का बन्ध, घर और बाहर का बन्ध, पवन और पानी का बन्ध, कुँआँ और पनिहारी का बन्ध, लोहा और कलम का बन्ध, बन्ध तो बन्ध--मौला मुर्त्तजा अली का बन्ध ।

विधि—शुक्ल पक्ष के 'प्रथम गुरुवार' की रात्रि को या 'ग्रहण-काल' में इस मन्त्र को १०८ बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर जिसे गण्डा देना हो, उसकी चोटी से पैर की एड़ी तक **'नीला धागा'** नाप कर सात गाँठें मन्त्र पढ़कर लगावें तथा सवा पाव मिठाई मँगाकर **'मौला मुर्त्तजा अली'** के नाम से बच्चों को बाँट दें ।

'गण्डे' को लोबान की धूप से धूपित करके रोगी के गले में बाँध दें । यह प्रयोग हर कार्य के लिए किया जाता है ।

गुरु गोरखनाथ का सर-भङ्गा (जञ्जीरा) मन्त्र

ॐ गुरुजी में सर-भङ्गी सबका सङ्गी, दूध-मास का इक-रङ्गी, अमर में एक तमर दरसे, तमर में एक झाँई, झाँई में परछाई दरसे, वहाँ दरसे मेरा साँई । मूल चक्र सर-भङ्ग आसन, कुण सर-भङ्ग से न्यारा है, वाँहि मेरा श्याम विराजे । ब्रह्म तन्त से न्यारा है, औघड़

का चेला—फिरूँ अकेला, कभी न शीश नवाऊँगा, पत्र-पूर परत्रन्तर पूरूँ, ना कोई भ्रान्त ल्यावूँगा, अजर-बजर का गोला गेरूँ परवत पहाड़ उठाऊँगा, नाभी डङ्का करो सनेवा, राखो पूर्ण बरसता मेवा, जोगी जुग से न्यारा है, जुग से कुदरत है न्यारी, सिद्धां की मुंछ्यां पकड़ो, गाड़ देओ धरणी माँही, बावन भैरूँ, चौंसठ जोगन, उलटा चक्र चलावे वाणी, पेडू में अटके नाड़ा, ना कोई मांगे हजरत भाड़ा,मैं भटियारी आग लगा दियूँ, चोरी चकारी बीज बारी, सात राँड दासी म्हारी, वाना-धारी कर उपकारी, कर उपकार चल्यावूँगा, सीवो दावो ताप तिजारी, तोड़ूँ तीजो तालो, खट - चक्र का जड़ दूँ ताला, कदेई ना निकले गोरख बाला, डाकिनी शाकिनि, भूतां जा का करस्यूं जूता, राजा पकडूं, हाकिम का मुंह कर दूँ काला, नौ गज पाछे ठेलूंगा, कुँएं पर चादर घालूँ, आसन घालूँ गहरा, मण्ड मसाणा, धुनो धुकाऊँ नगर बुलाऊँ डेरा। यह सर - भङ्ग का देह, आप ही कर्ता, आपको देह, सर-भङ्ग का जाप सम्पूर्ण सही, सन्त की गद्दी बैठ के गुरु गोरखनाथ जी कही।

विधि—किसी एकान्त स्थान में धूनी जलाकर उसमें एक चिमटा गाड़ दें। उस धूनी में एक रोटी पकाकर पहले उसे चिमटे पर रखें। इसके बाद किसी काले कुत्ते को खिला दें। धूनी के पास ही पूर्व तरफ मुख करके आसन बिछाकर बैठ जाएँ तथा २१ बार उक्त मन्त्र का जप करें।

उक्त क्रिया २१ दिन तक करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर ३ काली मिर्चों पर मन्त्र को सात बार पढ़कर किसी ज्वर-ग्रस्त रोगी को दिया जाय, तो आरोग्य - लाभ होता है। भूत-प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, नजर झपाटा होने पर सात बार मन्त्र से झाड़ने पर लाभ मिलता है। कचहरी में जाना हो, तो मन्त्र का ३ बार जप करके जाय। इससे वहाँ का कार्य सिद्ध होगा।

श्री भैरव मन्त्र

ॐ गुरुजी काला भैरूँ कपिला केश, काना मदरा, भगवां भेस। मार-मार काली-पुत्र ! बारह कोस की मार, भूतां हात कलेजो खूंहा गेडिया। जहाँ जाऊँ भैरूँ साथ। बारह कोस की रिद्धि ल्यावो। चौबीस

कोस की सिद्धि ल्यावो । सूती होय, तो जगाय ल्यावो । बैठा होय, तो उठाय ल्यावो । अनन्त केसर की भारी ल्यावो । गौरा - पार्वती की विछिया ल्यावो । गेल्यां की रस्तान मोह, कुवे की पणिहारी मोह, बैठा बाणिया मोह, घर बैठी वणियानी मोह, राजा की रजवाड़ मोह, महिला बैठी रानी मोह । डाकिनी को, शाकिनी को, भूतनी को, पलीतनी को, ओपरी को, पराई को, लाग कूं, लपट कूं, धूम कूं, धक्का कूँ, पलीया कूं, चौड़ कूँ, चोगट कूं, काचा कूं, कलवा कूं, भूत कूं, पलीत कुं, जिन कूं, राक्षस कूं, बरियों से बरी कर दे । नजरां जड़ दे ताला, इत्ता भैरव नहीं करे, तो पिता महा-देव की जटा तोड़ तागड़ी करे, माता पार्वती का चीर फाड़ लँगोट करे । चल डाकिनी, शाकिनी, चौडूं मैला बाकरा, बेस्यूं मद को धार, भरी सभा में ह्यूं आने में कहाँ लगाई बार ? खप्पर में खाय, मसान में लौटे, ऐसे काला भैरूं की कुण पूजा मेटे । राजा मेटे राज से जाय, प्रजा मेटे दूध-पूत से जाय, जोगी मेटे ध्यान से जाय । शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा, चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि--उक्त मन्त्र का अनुष्ठान रविवार से प्रारम्भ करें । एक पत्थर का तीन कोनेवाला टुकड़ा लेकर उसे अपने सामने स्थापित करें । उसके ऊपर तेल और सिन्दूर का लेप करें । पान और नारियल भेंट में चढ़ावें । वहाँ नित्य सरसों के तेल का दीपक जलावें । अच्छा होगा कि दीपक अखण्ड हो । मन्त्र को नित्य २१ बार ४१ दिन तक जपें । जप के बाद नित्य छार, छरीला, कपूर, केशर और लौंग की आहुति दें । भोग में बाकला, बाटी बाकला रखें । जब श्री भैरव देव दर्शन दें, तो डरें नहीं । भक्ति-पूर्वक प्रणाम करें और मांस-मदिरा की बलि दें । जो मांस-मदिरा का प्रयोग न कर सकें, वे उड़द के पकोड़े, बेसन क लड्डू और गुड़-मिले दूध की बलि दें । मन्त्र में वर्णित सब कार्यों में यह मन्त्र काम करता है ।

महा-लक्ष्मी मन्त्र

राम-राम क्या करे, चीनी मेरा नाम ।
सर्व-नगरी बस में करूं, मोहूं सारा गाँव ।
राजा की बकरी करूं, नगरी करूं बिलाई ।
नीचा में ऊँचा करूं, सिद्ध गोरखनाथ की दुहाई ।

विधि—जिस दिन गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन से प्रति-दिन एकान्त में बैठकर कमल-गट्टे की माला से उक्त मन्त्र को १०८ बार जपें। ४० दिनों में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर नित्य ११ बार जप करते रहें।

लक्ष्मी-पूजन-मन्त्र

आवो लक्ष्मी बैठो आँगन, रोरी तिलक चढ़ाऊं। गले में हार पहनाऊँ॥ बचनों की बाँधी, आवो हमारे पास। पहला वचन श्रीराम का, दूजा वचन ब्रह्मा का, तीजा वचन महा-देव का। वचन चूके, तो नर्क पड़े। सकल पञ्च में पाठ करूँ। वरदान नहीं देवे, तो महा-देव शक्ति की आन।

विधि—दीपावली की रात्रि को सर्व-प्रथम षोडशोपचार से लक्ष्मी जी का पूजन करें। स्वयं न कर सकें, तो किसी कर्म-काण्डी ब्राह्मण से करवा लें। इसके बाद रात्रि में ही उक्त मन्त्र की ५ माला जप करें। इससे वर्ष - समाप्ति तक धन की कमी नहीं होगी और सारा वर्ष सुख तथा उल्लास में बीतेगा।

दूकान की बिक्री अधिक हो

१. श्री शुक्ले महा-शुक्ले कमल - दल-निवासे श्रीमहा-लक्ष्मी नमो नमः। लक्ष्मी माई, सत्त की सवाई। आओ, चेतो, करो भलाई। ना करो, तो सात समुद्रों की दुहाई। ऋद्धि-सिद्धि खावोगी, तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

विधि—घर से नहा-धोकर दुकान पर जाकर अगर-बत्ती जला-कर उसी से लक्ष्मी जी के चित्र की आरती करके, गद्दी पर बैठकर, १ माला उक्त मन्त्र की जपकर दुकान का लेन-देन प्रारम्भ करें। आशातीत लाभ होगा।

२. भँवर वीर! तू चेला मेरा। खोल दुकान, कहा कर मेरा। उठे जो डण्डी, बिके जो माल, भँवर वीर सोखे नहिं जाय।

विधि—किसी शुभ रविवार से उक्त मन्त्र की दस माला प्रति-दिन के नियम से दस दिनों में १०० माला जप कर लें। बस, मन्त्र सिद्ध हो गया। केवल रविवार के ही दिन इस मन्त्र का प्रयोग किया

जाता है। प्रातः स्नान करके दुकान पर जाएँ। एक हाथ में थोड़े-से काले उड़द ले लें। फिर ११ बार मन्त्र पढ़कर, उन पर फूंक मारकर दुकान में चारों ओर बिखेर दें। सोमवार को प्रातः उन उड़दों को समेट कर किसी चौराहे पर, बिना किसी के टोके, डाल आएँ। इस प्रकार चार रविवार तक लगातार, बिना नागा किए, यह प्रयोग करें। दुकान की बिक्री दुगनी-तिगुनी हो जाएगी।

अघोर गोरी मन्त्र

मखनो हाथी जर्द अम्बारी।
उस पर बैठी कमाल खां की सवारी।
कमाल खां, कमाल खां, मुगल पठान।
बैठे चबूतरे, पढ़े कुरान।
हजार काम दुनिया का करे।
एक काम मेरा कर।
ना करे, तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

यदि किसी कन्या की आयु अधिक हो गई हो और किसी कारण-वश विवाह न हो पाया हो, तो उसका विवाह शीघ्र कराने हेतु उक्त मन्त्र का प्रयोग करें।

विधि—उक्त मन्त्र का जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से कमल-गट्टे की माला से १० माला प्रति-दिन पश्चिम दिशा की ओर मुख करके २१ दिन तक करें। गुलाब की अगरबत्ती जलाकर, सूती आसन पर बैठकर करना चाहिए। इस मंत्र का जप एकान्त कमरे में, दिन या रात्रि में किसी भी समय वही लड़की करेगी, जिसकी शादी करनी है। मंत्र जप प्रारम्भ होने के बाद लड़की के पिता को वर ढूंढ़ने के प्रयत्न करते रहना चाहिए। शीघ्र ही विवाह सम्पन्न हो जायेगा।

पीलिया का मंत्र

ओम नमो बैताल। पीलिया को मिटावे, काटे, झारे। रहै न नेंक। रहै कहूं तो डारूं छेद-छेद काटे। आन गुरु गोरख-नाथ। हन हन, हन हन, पच पच, फट् स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र को 'सूर्य-ग्रहण' के समय १०८ बार जप कर सिद्ध करें। फिर शुक्र या शनिवार को काँसे की कटोरी में एक छटांक

तिल का तेल भरकर, उस कटोरी को रोगी के सिर पर रखें और कुएँ की 'दूब' से तेल को मन्त्र पढ़ते हुए तब तक चलाते रहें, जब तक तेल पीला न पड़ जाय। ऐसा २ या ३ बार करने से 'पीलिया' रोग सदा के लिए चला जाता है।

दाद का मन्त्र

ओम् गुरुभ्यो नमः। देव-देव ! पूरा दिशा भैरूनाथ - दल ! क्षमा भरो, विशाहतो वैर, बिन आज्ञा। राजा बासुकी की आन, हाथ वेग चलाव।

विधि : किसी पर्व-काल में एक हजार बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर इक्कीस बार पानी को अभिमन्त्रित कर रोगी को पिलावें, तो 'दाद' रोग जाता है।

आँख की फूली काटने का मन्त्र

उत्तर काल, काल ! सुन जोगी का बाप ! इस्माइल जोगी की दो बेटी–एक माथे चूहा, एक काते फूला। दुहाई लोना चमारी की ! एक शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, फुरो मन्त्र–ईश्वरो वाचा।

विधि : पर्व-काल में एक हजार बार जप कर सिद्ध करें। फिर मन्त्र को २१ बार पढ़ते हुए लोहे की कील को धरती में गाड़ें, तो 'फूली' कटने लगती है।

मोहिनी मन्त्र

मोहन-मोहन क्या करे ? मोहन मेरा नाम ! भीत पर तो देवी खड़ी। मोहों सारा गाँव, राजा मोहों, प्रजा मोहों, मोहों गणपत राय। तैंतीस कोटि देवता मोहों। नर लोग कहाँ जायँ ? दुहाई ईश्वर महादेव, गौरा पार्वती, नैना योगिनी, कामरू कमक्षा की।

विधि : दशहरे के दिन से नित्य एक माला का जप दस दिन तक करे। जप - काल में 'घी - गुग्गुल - कपूर' से धूनी दे, तो मन्त्र सिद्ध होता है।

'गोरोचन' को उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर तिलक लगाएँ। तब जिस व्यक्ति के पास जाएँगे, वह मोहित होगा। 'फूल' को अभिमन्त्रित कर जिसे सुँघाया जाएगा, वह मोहित होगा। सभा

को मोहित करना हो, तो मन्त्र पढ़कर चारों ओर फूंक मारें—सभी मोहित होंगे।

सुपारी-मोहनी मन्त्र

खरी सुपारी टामनगारी, राजा-प्रजा खरी पियारी, मन्त्र पढ़कर लगाऊँ, तो रही या कलेजा लावे तोड़, जीवत चाटे पगथली, मूवे सेवे मसान, या शब्द की यारी न लावे, तो जती हनुमान की आज्ञा न माने। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि : सूर्य-ग्रहण के दिन स्नानादि कर ७ समूची सुपारियों को धोकर पात्र में रखें तथा आसन पर बैठकर गूगल की धूनी और घी के दीपक से उनकी पूजा करें। इसके बाद १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करें।

यदि 'ग्रहण' का दिन न मिले, तो 'रवि-पुष्य-योग' से २१ दिनों तक नित्य सुपारियों की पूजा तथा १०८ बार मन्त्र का जप करें। इस क्रिया से सुपारियाँ मन्त्र - शक्ति से सम्पन्न हो जाएँगी। बाद में जब यह सुपारी ७ बार मन्त्र पढ़कर जिसे खिलाई जाएगी, वही मोहित होकर वश में हो जाएगा।

वशीकरण मन्त्र

१ ऐं भग-भुगे, भगनि, भगोदरि, भग-माले, योनि-भग-निपातिनी, सर्व-भग-वशङ्करि, भग-रूपे, नित्यक्लें, भग-स्वरूपे ! सर्व - भगानि मे वशमानय। वरदे, रेते, सु-रेते, भग-क्लिन्ने ! क्लीं न द्रवे ! क्लेदय, द्रावय, अमोघे ! भग-विधे ! क्षुभ, क्षोभय, सर्व-सत्त्वान्। भगेश्वरो ऐं क्लं जं ल्लूं भैं ल्लूं मों ल्लूं हे हे क्लिन्ने ! सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा।

विधि : कामाक्षा अथवा योनि-स्वरूपा का ध्यान कर उक्त मन्त्र की १ माला एकाग्र मन से जपे, तो वशीकरण होता है, किन्तु सामाजिक मर्यादा तथा अपने चरित्र का ध्यान रखना आवश्यक है।

२ ऐं सहवल्लरी क्लीं कर क्लीं काम - पिशाचिनी··· (साध्या का नाम) काम-ग्राह्य-पद्मे मम रूपेण नखैंविदारय, द्रावय द्रावय, बन्धय बन्धय, श्रीं फट।

विधि : उक्त मन्त्र का २० हजार जप कर सिद्ध कर लें। फिर जिस पर प्रयोग करना हो, उसे ध्यान में रखकर रात्रि में सोने से पूर्व ११०० मन्त्र प्रति-दिन जपें, तो शीघ्र ही वशीकरण हो जाता है।

पान वशीकरण मन्त्र

१ कामरू देश कामाख्या देवी, तहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने दीना बीड़ा। पहला बीड़ा आती-जाती, दूजा बीड़ा दिखावे छाती, तीजा बीड़ा अङ्ग लिपटाय। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

विधि : दीपावली की रात्रि में १४४ बार जपने से उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जप के समय दीपक जलाएँ, धूप दें तथा मिठाई का प्रसाद रखें। मन्त्र सिद्ध कर लेने पर तीन पानों का मसालेदार बीड़ा बनाएँ। ७ बार उक्त मन्त्र से उस पर फूँक मारकर जिसे खिला देंगे, वह वश में हो जाएगा।

२ हाथ पसारूँ, मुख मलूं, काची मछली खाऊँ, आठ पहर चौंसठ घड़ी जग मोह घर जाऊँ।

विधि : किसी शुभ शनिवार से जप प्रारम्भ करे। सात शनिवार तथा सात रविवार—दोनों दिन उक्त मन्त्र को रात्रि में १०१ बार जपें। जप के समय गूगल की धूप, दीपक तथा प्रसाद रक्खें। इस प्रकार सात सप्ताह की साधना से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में अभीष्ट व्यक्ति को, उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित पान खिला दें। वह वशीभूत हो जाएगा।

विशेष सूचना : प्रस्तुत 'साबर'-मन्त्रों में से कुछ तो मेरे परिचितों के तथा कुछ स्वयं के अनुभूत हैं। शेष दुर्लभ प्राचीन हस्त - लिखित ग्रन्थों से सङ्कलित हैं। इन सब मन्त्रों की सफलता साधक की सच्ची लगन एवं साधना पर ही निर्भर है।

'शाबर' मन्त्र की साधना

प्रस्तुत कर्त्ता : श्री सुधीर कुमार, बेगूसराय (बिहार)

'शाबर' का एक विशेष अङ्ग **'असावरी देवी'** हैं, जिनकी पूजा किए बिना 'शाबर' की सिद्धि नहीं होती। **'शाबर' मन्त्र** की साधना में **'चक्र-पूजा'** का भी विशेष महत्त्व है। इस पूजा में सिन्दूर, अन्न का चाल, फूल, चूड़ी, बिन्दो, साही का काँटा, अदूल का फूल (गुड़हल) और कली तथा विभिन्न प्रकार के चक्रों में तदनुरूप विविध प्रकार की सामग्री का प्रयोग होता है। 'शिवा' (गोदड़) को भोजन और माँ के लिए 'बलि' देना भी आवश्यक है। साधना के लिए सर्वोत्तम समय शारदीय नवरात्र का पर्व-काल है। वैसे 'ग्रहण' या 'कृष्ण - अष्टमी' भी विहित हैं। शारदीय नवरात्र में भगवती दुर्गा की प्रतिमा को नेत्र-दान के बाद ही शिष्य को गुरु विद्या-दान करते हैं।

'शाबर' मन्त्र के छः प्रकार हैं—१ सवैया, २ अढ़ैया, ३ झुमरी, ४ यम-राज, ५ गरूड़ा और ६ गोपाल शाबर। **'अढैया शाबर'** बिहार के उत्तर और दक्षिण भागों में विशेषतया प्रचलित है। **'सवैया शाबर'** और **'यम - राज शाबर'** कम पाए जाते हैं। **'झूमरी शाबर'**, **'गरूड़ा शाबर'**, **'गोपाल शाबर'** बिहार के मध्य भागों में ही हैं।

शाबर-मन्त्रों को जाग्रत् करने की विधि

'शाबर' मन्त्र सरलता से सिद्ध हो जाते हैं तथापि अनेक बार प्रयत्न करने पर भी यदि वे सिद्ध न हों, तो मन्त्र को जाग्रत करने का अनुष्ठान करें। रविवार की रात में **'असावरी देवी'** की पूजा कर, काँसे की थाली को राख से स्वच्छ कर उसे सामने रखें और प्रत्येक प्रहर के प्रारम्भ में अभीष्ट मन्त्र को एक सौ आठ बार जपें। चौथे प्रहर में मन्त्र-जप के पश्चात् 'खैर' की डण्डी से हिन्दी अथवा मातृ-भाषा में कहें--**'हे मन्त्र-देवी जाग्रत हो।'** साथ ही उक्त थाली को बजाएँ। रात भर में चार प्रहर होते हैं। स्वयं जानते हों तो ठीक है, अन्यथा किसी जानकार से पूछ कर उक्त विधि से सम्पन्न करें।

घर-बन्धन का शाबर

घर बान्धो, द्वारा बान्धो, बान्धो घर के द्वारे, सोलहो डाकनी, बान्धो दो लोहे का हारे, थाक थाकगे बेटी योगनी, मेरे बान्धो परी, लरी सहचरी, जन भाव चौको बान्धो, दोहाय ईश्वर-महादेव-गौरा-पारवती के।

विधि : बेर या बबूर का लकड़ी की सवा बित्ते की चार कीलें हाथ में लेकर सभी पर एक साथ उक्त मन्त्र सात बार पढ़ें। फिर एक कील हाथ में लेकर अग्नि-कोण के पास आकर सात बार मन्त्र पढ़कर उस कील को धरती में गाड़ दें। इससे घर का बन्धन हो जाता है।

प्रेत या प्रेतनी को बकराने का मन्त्र

ओम् नमो हनुमन्त वीर वज्र-धारी, डाकिनी, शाकिनी घेर मारी। गङ्गा, जमना हमारा बाण बोले। बकरे नहीं, तो राजा रामचन्द्र, लक्षमण कुमार, जती हनुमन्त की आन। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

विधि : इत्र एवं चमेली के चार पुष्पों को उक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके सात बार सुँघावे। अभिमन्त्रित करते समय उक्त मन्त्र बोलकर 'फूल' या 'इत्र' को फूँक मारें या सामने अथवा हाथ में रखकर मुँह के सामने करते हुए मन्त्र पढ़ें।

भूत पकड़नेवाला मन्त्र

गुजरै कुकाली, हाथ मुरली, मर्दन केश काली। चलल देश-विदेश पैसल, जो खोखरले आसार, पेस माराकर फाड़ल पेड़, भूत पकड़। दोहाय ईश्वर महादेव गौरा पारवती के छी।

विधि : बाल पकड़ कर उक्त शाबर मन्त्र इक्कीस बार पढ़ें। सावधानी से झाड़ें।

देह-रक्षा का मन्त्र

ओम् नमो धरती माता, धरती पिता, धरती धरे न धीर। बाजे सिङ्गी, बाजे तर तुरी, आया गोरखनाथ। मीन का पूत, भूज का

छड़ा, लोहे का कड़ा, हमारी पीठ पीछे जती हनुमन्त खड़ा। शब्द साँचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

विधि : सोते समय उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर अपने पलँग या बिस्तर के चारों तरफ अंगुलि से रेखा खींचें। जो व्यक्ति पर-कृत व्याधि से ग्रस्त हो, उसे इस मन्त्र से सात बार झाड़ दें।

नजर उतारने का मन्त्र

ओम् नमो आदेश गुरू का। गिरह-बाज नटनी का जाया, चलती बेर कबूतर खाया, पीवे दारू, खाय जो मांस, रोग - दोष को लावे फाँस। कहाँ-कहाँ से लावेगा ? गुदगुद में सुद्रावेगा, बोटी - बोटी में से लावेगा, चाम - चाम में से लावेगा, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा में से लावेगा, मार - मार बन्दी कर - कर लावेगा। न लावेगा, तो अपनी माता की सेज पर पग रखेगा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

विधि : छोटे बच्चों और सुन्दर स्त्रियों की नजर लग जाती है। उक्त मन्त्र पढ़कर मोर - पङ्ख से झाड़ दें, तो नजर - दोष दूर हो जाता है।

मोहनी शाबर

फूलर से फूल बसे अदूल फूल में, नरसिंह बसे वाही फूल, फूल कचनार छोड़ह, तिरिया माय-बाप के, चल हमरा सङ्ग। दोहाय महत मानी के।

विधि : अदूल (गुड़हल) फूल की कली पर बारह बार उक्त मन्त्र पढ़ें। जिस पर फेकेंगे, वह वशी-भूत होगा।

मन्त्र-प्रयोग लौटाने का मन्त्र

डण्डी-मार मार रे, डण्डी मार-मार किया की डण्डो किया, का पलड़ावा किया, तोरे गुरू के गुणवा हे, डण्डी मार मार, डण्डो - मार मार रे, डण्डी-मार मार, पवन का पलड़ा, रत्न का डण्डी, जतन के गुणवा। हे डण्डो मार-मार, किया के सेरबा, किया का दूसरेबा, किया का बनलबा बटखरवाँ। डण्डी-मार मार, डण्डो मार-मार रे। सत्य महरानी, वासुदेव जी को नमस्कार। दोहाई नैना जोगीन के, सत्य

गुरू के बन्दे, पाव देखो, देवी होस करो। जिसका पढ़वा, उसका घर जाओ।

विधि : मन्त्र पढ़ते हुए सात बार हुमाद करके, सात बार मन्त्र पढ़ने से, किसी का किया हुआ मन्त्र-प्रयोग उसके पास लौटकर चला जाता है और रोगी ठीक हो जाता है।

पुत्र होने का अढ़ंया शाबर (वन्ध्या-निवारण)

गुरू तात, गुरू मात, आगे पराता। सुख से अलगा बान। सोरा चौधरी मसान जगावे। दोहाय नयाना योगिनी के, सिद्ध गुरू के बन्दे पाँव। जाहि कामिनी के लागे, ताही कामिनी लागो। कामरू के विद्या (अमुकी) के कोइख लगा दे।

विधि : रात्रि के समय दोनों कानों में सात बार उक्त मन्त्र पढ़ें। 'अमुकी' के स्थान पर वन्ध्या (बाँझ) का नाम लें। नागेश्वर का फूल और गाय का घी मिलाकर 'मासिक' के चौथे दिन से सात दिन तक मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर सायं-प्रातः सेवन करे। उससे बन्ध्या-दोष दूर होगा और सन्तान होगी।

ढँकना चलाने का शाबर

उदन काली, फूदन केस, चलि भेल काली कामौर देश को। करैं डाइन गुन सोटे, ओझा गुन सम्हारे, मोर गुन सम्हार, गुन छेद, गुन उलट गुना।

विधि : कच्ची मिट्टी के ढँकने में सिन्दूर, अदूल (गुड़हल) फूल और सुई रखें। फिर सरल लकड़ी रखकर जला दें। हाथ में पीली सरसों लेकर उक्त मन्त्र जपते हुए ढँकने में इक्कीस बार मारें। उसके बाद शत्रु के द्वार पर रखवा दें, जहाँ प्रातःकाल उठते ही उस पर शत्रु की दृष्टि पड़े। इससे शत्रु रोग द्वारा दुखी हो जाता है।

अनुभूत शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री नीलकण्ठ झा, बी० देवघर (बिहार)

१ आत्म-रक्षा मन्त्र

ओं नमः बज्र का कोठा, जिसमें पिण्ड हमारा पैठा। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्मा ताला, मेरे आठो याम का यतो हनुमन्त रखवाला।

तीन बार उक्त मन्त्र को पढ़ने से शरीर की सदा रक्षा होती है।

२ अङ्ग-बन्धन मन्त्र

जाँघ बान्धो जङ्घ श्रीः, काया बान्धो परमेश्वरी।
सिर बान्धो चौरासिः, त्रिपुर राखे पहरूदारः॥
काशि कोतवाल हनुमान, राखो पहरूदारः।
जियान खबरदार, दोहाई सति सीता क॥
राम - लक्ष्मन क नरसिङ्घ नाथ क गौरा।
पार्वति क ईश्वर, महादेव क कामरू कमख्या माई कः॥

३ शरीर बाँधने का मन्त्र

ॐ वज्र क सीकड़, वज्र क किवाड़, वज्र बाँधे दसो द्वार।
वज्र क सीकड़ से पी बोल, गहे दोष हाथ न लगे॥
आगे वज्र किवाड़ भैरो बाबा, पसारी चौसठ सौ योगिनि-रक्षा-कारी। दोहाई ईश्वर, महा-देव, गौरा पार्वती की॥

४ दिशा-बन्धन मन्त्र

(१) आकाश बाँधो, पाताल बाँधो, बाँधो तावा ताई।
धरती माता तोहे बाँधो। दोहाई भैरो बाबा की॥

(२) सामा तु आर बाँध, सामा तु चारो कोना बाँध।
सामा के सङ्ग, सामा को जला दिया॥
सामा तु भूत बाँध, सामा तु पिशाच बाँध।
सामा तु दानो बाँध, सामा तु अकिन बाँध॥
सामा तु चुड़ैल बाँध, सामा तु बैताल बाँध॥
सामा तु संसार बाँध, सामा तु आसमान बाँध।
दोहाई कामरू कमक्ष्या, नैना योगिनि की॥

५ डीह बाँधने का मन्त्र

डिव न डीहारि बान्हो, तीनों कोन प्रोथी बान्हो, चौठे कोण जलप्वा बान्हो। सर सह प्रमेश्वर सहस्र सर रक्षया करे। उदन्त काठी पुदन्त देस। कालि गेलि कमक्ष्या देश। गोहरि वासिखे गेलि। इन्द्र के बेटी, ब्रह्मा के शालि, मसान चट्टो। बजावे तालि। थारि थूरी, सर्व खूरी उक्षिदंए, परा पराए, हम नहि बान्हेक्षी। हमरि भै गौरा पार्वति बान्हेक्षी। दोहाई महादेव का, दोहाई रोहिना का, चमार दोः अघोरि डोम जघ क्षोड़ो के जाई।

६ भण्डार भराने का मन्त्र

आए देवि दक्षिणि ! तिन वर्ण की लक्ष्मी। गे लक्ष्मी ब्रह्मा क माय। रिद्ध-सिद्ध हमारे हाथ। आव लक्ष्मी कर जाप, जन्म-जन्म के हर पाप। अन्न पूरावे अन्नपूर्ना। घ्रीत पुरावे महेश। नीलेश्वर के नेउँता दिन्हा। दस पावे पञ्च दृह होए जाए। दोहाई सिद्ध पुरुष काहा, लक्ष्मी काः।

७ गो-रक्षक मन्त्र

(१) धिर चलै, वनविर चले, धरती आकाश उन्ड़ाता चलै, नग्र अयोध्या विश्व-मय को चलै, चौसठ सो विक्षा तोड़ते चलं। माई तेरे गुनिआ, आपु बान्धो, क्षआ बान्धो, दोख बान्धो, विष बान्धो, गज बान्धो, धरती बान्धो, एतना बान्धि बौधने लाव। झोका मटका, हरना विरना, ठरि आधरि, आतो विवि जमा, लोक दूधहर मकरे। दोहाई कामरू कमक्ष्या का।

(२) गङ्गा-यमुना-सरस्वती निर्मल राखें गोरख जति। मुख फटे पस्त धा मोर पक्षि ले झारै। सर्व-विध पराए। दोहाई पाँचो पण्डव के, दोहाई अरजून के। इति * मोर - पङ्ख, नव ढफना। धूमनाक धूप देव। रात्रि के, निशा रात के, धूप गाई क मुख क सामने देवई।

*'इति' शब्द मन्त्र-समाप्ति-सूचक है। मोर-पंख, ६ डफना लेकर रात्रि में गाय के मुख के सामने धूप देने की विधि है। लेखक ने स्पष्ट नहीं किया।—सं०

८ फूला काटे का मन्त्र

सोना क लोकी, रूपा की पाटी। फूला काटे, ब्रह्मा के बेटी। बोहाई राजा रामचन्द्र का शील।

९ नजर-टोना झारने का मन्त्र

कालि देवि ! कालि देवि ! सेहो देवि ! कहाँ गेलि, विजूवन खण्ड गेलि, कि करे गेलि, कोइल काठ काटे गेलि । कोइल काठ काटि कि करति । फलाना का धैल धराएल, कैल कराएल, भेजल भेजायल । डिठ मुठ गुण-वान काटि कटी पानि मस्त करै । दोहाई गौरा पार्वति क, ईश्वर महादेव क, कामरू कमक्षया माई इति सीता-राम-लक्ष्मण-नरसिंघनाथ क ।

किसी को नजर, टोना आदि सङ्कट होने पर उक्त मन्त्र को पढ़कर कुश से झारे ।

१० अग्नि को थामने का मन्त्र

आगिन थामो, अगिनी थामो । सेतवान रामेश्वर थामो । कालि काल थामो । विरं कां थामो । वार हनुमान का थामो । दोहाई विष्णु का, दोहाई ब्रह्मा का ।

विधि –धुरा पर उक्त मन्त्र पढ़कर अग्नि पर छिड़कना चाहिए ।

११ अग्नि बाँधने का मन्त्र

ॐ अङ्गा कल-पोह हरि-वर ! आगिन बाँधो, हनुमन्त वीर ! नहि जरे हाथ, नहि जरे पाँउ । अगिनी सो वाचा । हनुमन्त वीर चले, तारा चलेय, जोरा नहि जरे, क रख । दोहाई माहा भदलि पीर का, दोहाई फिदाय साहेब का, दोहाई पाँच पीर औलया का ।

विधि—मन्त्र पढ़कर अग्नि पर धूरा छिड़के ।

१२ आपत्ति टालने का मन्त्र

शेख फरीद की कामरी, निशि अस अँधियारी । तीनों को टालिए–अनल-ओला-जल-विष ।

विधि––उक्त मन्त्र को पढ़कर ताली देने से आग, पानी और पत्थर का भय दूर होता है ।

१३ अध-कपारी झाड़ने का मन्त्र

ओं नमो वन में बियाई बन्दरी । खाय दुपहरिया कच्चा फल कन्दरी । आधो खाय के, आधी देती गिराय । हूँकत हनुमन्त के आघा शीशी चलि जाय ।

विधि—रोगी को सामने बैठाकर भूमि पर छुरी से सात रेखाएँ खींचता हुआ उक्त मन्त्र पढ़े।

१४ दाँत-दर्द दूर करने का मन्त्र

१ काहे रिसियाए, हम तो अकेला। तुम हो बत्तीस वीर हम-जोला। हम लावें, तुम बैठे खाव। अन्त काल में सङ्गहिं जाव।

विधि--मुख धोने के समय सात बार उक्त मन्त्र पढ़ कुल्ला करे, तो दाँत की पीड़ा दूर होती है और दाँत नहीं हिलते।

२ आग बाँधो, अगिया वेताल बाँधो, सो खाय विकराल बाँधो, सौ लोहा-लोहार बाँधो। वजर अस होय वज्र घन। दाँत पिराय, तो महादेव की आन।

विधि -उक्त मन्त्र पढ़कर अँगुलियों से तीन बार झारे।

१५ पीलिया का मन्त्र

ओं नमः आदेश गुरु को। श्री राम सर साधा, लक्ष्मण साधा बाण। काला पीला रीता, नीली थोथा पीली। पीला-पीला चारों गिर जहिं, तो श्री रामचन्द्र जी! रहे नाम। हमारी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—सात शनिवार, पीतल के कटोरे में पानी ले, सुई से सात बार झाड़ें।

१६ कर्ण-रोग का मन्त्र

वनरा गाँठि, बनरी तो डाँट। हनुमान अकण्टा, विलारो वाघिनी थनैला। कण-शूल जाई, श्री रामचन्द्र बानी, जल पथ होई।

विधि–सात बार विभूति से झारे।

१७ बवासीर का मन्त्र

ईसा ईसा ईसा, काँच कपूर चोर के शीशा। अलिफ अक्षर जाने नहीं कोई। खूनी-बादी दोनों न होई। दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।

विधि--एक लोटा पानी पर तीन बार मन्त्र पढ़े। उसी पानी से शौच करे, तो बवासीर अच्छी हो।

१८ जले घाव का मन्त्र

ओं नमो आदेश, कामरू देश कामख्या देवी। जले तेल-तेल, महा-तेल तारे। अमुक लहर पीर पल में टारे। मन्त्र पढ़े नरसिंह देव कुटिया में बैठ के, श्री रामचन्द्र जी रहि-रहि फूंक के। जाय अमूक जलन एक पलज में, जाय खाय सागर को नीर नोन में। आज्ञा हाडि दासी। फुरो मन्त्र, चण्डी वाचा।

विधि—सरसों के तेल पर तीन बार मन्त्र पढ़कर उसे जले स्थान पर लगाए।

१९ हूका-पीड़ा झारने का मन्त्र

ओं नमः सुमेरु गिरि पर लोना चमारो, कञ्चन की रांपी—सोने की सुतारी। हुक चाक बाँह बिलारी, धरनी नाली कार-कूट खारी। सागर पार बहावो। लोना चमारी की दुहाई। फुरो मन्त्र, कामाख्योवाच।

विधि—दर्द-स्थान को पकड़कर २१ बार झाड़े, तो हूक - पीड़ा जाय।

२० बिच्छू-विष-निवारक मन्त्र

ओं काली बीछी कर मतवाला। हरि सोन की नारी। सर्प डँसे, तो सावे बीछी। डँसे तो होवे। शब्द साँचा, फुरो वाचा।

विधि—सात बार मन्त्र पढ़, हाथ में नीम की पत्ती दबाए, तो बिच्छू-विष उतर जाता है।

२१ व्याघ्र-सर्पादि-भय - निवारक मन्त्र

फरीद चले परदेश। कुत्तक मन में भावे। बाघ बाँधूं, बघाइन बाँधूं, बाघ के सातो बच्चा बाँधूं, साँपा-चोरा बाँधूं, दाँत बँधाऊँ, बाट बाँधि दऊँ। दुहाई लोना चमारी की।

विधि—मङ्गलवार को १०८ बार मन्त्र जप सिद्ध करे। फिर पथ में जो भी मिले, सात वार मन्त्र पढ़ कर फूंके, तो भय दूर हो।

२२ अन्न-पूर्णा शाबर मन्त्र

ओं नमः अन्नपूर्णा अन्न पूरे। घृत पूरे गणेश जी। पाती पूरे ब्रह्मा-विष्णु - महेश तीनों देवतन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—उक्त मन्त्र का एक लाख जप करे। भण्डार-गृह में से अछूती भोग-सामग्री निकालकर श्री अन्नपूर्णा माता को भोग लगाकर ब्राह्मण-भोजन करावे। फिर भोग का एक भाग कूप में डालकर, एक हाथ से एक लोटा जल भर लावे। भण्डार-घर में दीप जलाकर अन्नपूर्णा और वरुण का पूजन करे। उपर्युक्त मन्त्र १०८ बार जप कर ब्राह्मण-भोजन करावे एवं भण्डारा करे। इससे 'भण्डार' में कमी न होगी।

२३ ऋद्धि-सिद्धि का मन्त्र

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को। गजानन वीर बसे मसान। अब बो ऋद्धि का वरदान। जो जो माँगू, सो-सो आन। पाँच लड्डू, शिर सिन्दूर हाट-बाट की। माटी मसान की। सेष ऋद्धि-सिद्धि हमरे पास पठेव। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—भोज-भण्डारा सबको खिलाने के पहले, पाँच लड्डू निकालकर, उन पर सिन्दूर लगावे। श्री गणपति जी का पूजन करे। एक कलश में एक लड्डू रखकर, कुएँ पर जाकर जल भरे और मन्त्र पढ़कर चारों लड्डू कुएँ में छोड़ दे। फिर 'कलश-स्थापन' कर, उपर्युक्त मन्त्र एक हजार जपकर ब्राह्मणों को खिलावे, तो भण्डार में माल न घटे।

२४ आपत्ति-निवारण-मन्त्र

हुक्म शेख फरीद कमरिया, निशि-अन्धियरिया, आग-पानी-पथरिया—तीनों से तोही बचाइया।

विधि—सूनसान मैदान में जब ओला गिरे, आँधी-पानी बरसे, तो यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर ताली बजाए।

२५ गृह-बन्धन-मन्त्र

हाट चलते बाट बाँधूं, स्वर्ग में राजा इन्द्र बाँधूं, पाताल में वासुकी बाँधूं, सिकली वाण बचन तोड़ के मछरी मारूँ, टेंगरा गाछ मारी गाछ फूटै, डाल मारूँ, उठे तार खाई बन किए उजार आए। आगे बाँधूं पाछु आए, पाछू बाँधूं, बाँएँ-दाँएँ बाँधूं। यह बन्धन को बाँधत ईश्वर, महादेव बाँध देवे। हिमधर में सहदेव हम सोय रहे। ॐ अकेला

लोहे को दोकला मांसकर पत्थर होवेगा । काटे कुटू बड़े पिता धर्म्म की दुहाई ।

विधि—एक मुट्ठी धूल लेकर सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर घर के चारों ओर छीट देवे ।

२६ मन्त्र मोहिनी

पान पढ़ि खिलावे । त्रिया जोरि बिसरावे । श्रीरे त्रिया तोरा साथ नहि जाएवे । नाग वाटे, नागिन फेन काढ़े । तोर मुख नहि जाएवो । रे नागा ! दोहाई गुरु नानक शाही का । दोहाई डाकिन का ।

२७ भूत-पिशाच-डाकिनी-योगिनी-निवारक मन्त्र

ॐ ठं ठं ठं ठं ठं ठं छोड़ो भूत । दूर जान्ति । रक्ष्या कर्त्तव्या । इषु मन्त्र गौ रक्ष्या, विप्र रक्ष्या, बालक रक्ष्या, इस्त्रि रक्ष्या । योगी-योग-प्रमाणं । दोहाई हनुमान जी का । भैरवनाथ जपन दोहाई । दव्वा सर्व-भूत दूरं जान्ति । ॐ फट् स्वाहा ।

२८ चोरी गए सामान को निकालने का मन्त्र

सिद्धि चाउर, महा-चाउर । पार्वति कुटिल चाउर । महा-देव विछलि चाउर । चोर मुंह धूरि । साधु मुंह पानी । दोहाय ईश्वर महादेव, गौरा पार्वति कः ।

विधि—चावलों को अभिमन्त्रित कर सन्दिग्ध व्यक्तियों को खिलाए ।

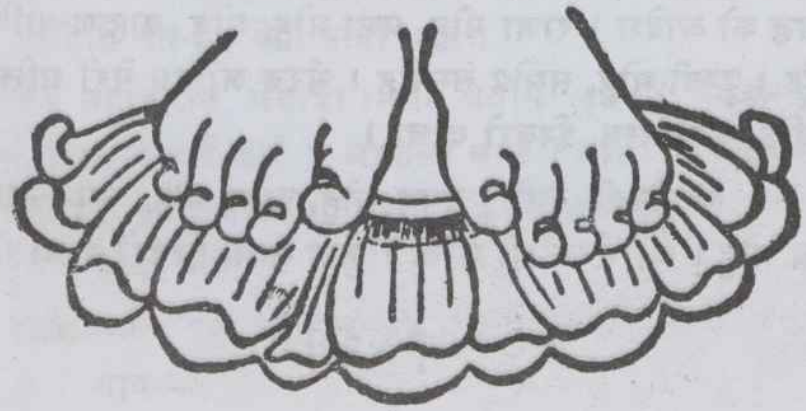

वशीकरणादि शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० रामराज पाण्डेय, ग्राम-गड़रिया, पो० लोही, जि०–रीवाँ (म० प्र०)

वशीकरण शाबर-मन्त्र

१ ॐ नमो फूल-फूल की वारी-वारी, चौसठि नारी दरबार-यारी, नारसिंह शक्ति तुम्हारी। यो फूल सूँघै, सो दास हमारी। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

२ ॐ आदेश गुरु को। हाँथ पकरि मुख मलूँ। कच्ची मछरी खाउँ। आठ पहर बत्तीस घरी। जगमोहन मेरा नाम। और देखै, जरै, मरै। मोहि देखे पाइन परे। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

३ ॐ आदेश गुरु को। लवङ्गे सराई, लवङ्गा भैरव। तहाँ जो जाइ पढ़िकै लवङ्ग। देउगा हाँथ पाइ परै। डिठी लागे सात घर। तन पीठी, लवङ्ग डीठी। चतौल लेना भरि, तुरन्त परे लवङ्ग। भैरो प्रकट फुरै। मेरी भक्ति, आदेश गुरु को, अ क्षा भू टां हुं फट्।

४ ॐ दक्षिण देश वीर हनुमन्त चला। एक जटा आकाश, एक जटा पाताल। बाँएँ हाँथ गदा, दाहिने हाँथ छड़ी। गर्जन्ता चलै, घोरन्ता चलै, नदी-नाला सोखन्ता चलै। चलै भोहड़ा नारसिंह। आदि-भैरव, काल-भैरव, भूरा-भैरव, सेत भैरव, सवा लक्ष लैकै वीर चलै। चौसठि योगिनी चले। चौरासी लक्ष क्षेत्रपाल चले। जलथे तुलसी चले। महादेवनी कन्या चले। तुरत चले। तुरत न चलै, तौ सती सीतानी सेज पग देइ। रामचन्द्र की पूजा पाइ करि ठेलै। जो तुरत न चलै, तौ मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

५ आदेश गुरू को। सम्मोह भैरव, मोहनी वेश, हाँथ पाश, सिद्ध-सिद्ध को आदेश। राजा मोहु, प्रजा मोहु, मोहु ब्राह्मण-वाणियों चारो खूंट। पृथ्वी मोहु, समोप सम्मोह। भैरव जानिए मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

६ ॐ भैरवो देवो ! नगर मोहु, राजा मोहु, नगर-नायक मोहु, देव मोहु। श्री भैरव की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

७ ॐ आदेश गुरू को। पानी खेलै, पानी दौड़ै, विष का पानी। भैरव खासा, मारी हासा। हाँथ धरो राजा-रानी। पानी ते यारी, पानी की क्यारी। पानी को सागर। हाँथ पानी को झारी। पानी मारो, फूको, हरो। इन्द्र-देव की रानी। अजय-पाल जोगी, जल-केलि नाथ मोगी। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

८ ॐ आदेश गुरू को। पानी को प्यासा, आया पानी तमासा। पानी बैठे, पानी दौड़ै, पानी बोले, पानी खेले, पानी जाले। जल-केलि-नाथ हाँथ मले। तहाँ होइ आगी। पानी आवन्ता, वन्ता। इसमाइल रानी। शत्रु तोड़ो, आकाश फोड़ो, ब्रह्म-विष्णु को गाड़ो, सब देवता को छोड़ो, भक्तन को पाउ न छोड़ो। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

९ ॐ नमो कैलाश पर्वत पर गौरा देई। जे मन माहे चाहूँ, ते आवै धाई। मेरी भक्ति, गुरु गोरख - नाथ को शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

१० ॐ कामरू देश। तेकर फूल बिनै लोना चमारिनि। यो वास फूल की आवै वास, तो अमुकी आवे हमारे पास। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

११ ॐ मोहनी जोहनी दोनों बहिन। चलगे मोहनी कबरू के देश। चलत में हाट में, बाट में, मोहै कुवना पनिहारिन। मोहै सिंहासन चढ़ि कै राजा। मोहै डोला चढ़िकै रानी। मोहै से मोहन मोहनी, अमुक को अमुकी के वश कर (या अमुकी को मेरे वश कर या अमुक को मेरे वश कर)। मोहनी रोम - रोम भीजि जाय। दोहाई ईश्वर महा-देव की। दोहाई गौरा पार्वती माता की। दोहाई नैना जोगिन की। दोहाई सत-गुरु के। बन्दौं पाउ।

१२ नोना नोन बजाड़ा। नोन अवसि नून है गुनवन्ता। हाला जावा तावा, जल में डारै। मच्छली बाछै। गाई देइ पियावै बाछ। स्त्री को देइ, तो लागै साथ। ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दोहाई। सतगुरु के बन्दौं पाव।

विधि—मन्त्र रवि या भौमवार, दोपावली या ग्रहण में १०८ वार जप ले। गाय-भैंस जो भी रकरा (बच्चे) छोड़ दे, उसे अपने हाथ में

नमक लगाकर जप करता हुआ चटावै। रकरा (बच्चा) के भी नमक लगा दे। चारा-भूसा में भी नमक लगा दे। इस बीच मन्त्र पढ़ता रहे। गाय-भैंस रकरा (बच्चा) अवश्य लेवेगी। स्त्री को पान, लौंग, गरी आदि मन्त्र पढ़ता हुआ दे, तो वह साथ देगी।

१३ मोर मोहनी, मोर मोहनी। रानी मोहै राजा मोहै, ऊपर के इन्द्रौ मोहै, तरी के वासुकि नाग मोहै। मोर मोहनी, मोहिजा ओकर मोहनी। उड़सि जा आधी नदिया। रङ्ग बहै आधी नदिया, तङ्ग बहै। जे लेय फूलन का वास, ते आवै मेरे पास। दोहाई ईश्वर महा-देव की।

विधि—मन्त्र को दीपावली या ग्रहण में जप कर सिद्ध कर ले। फिर अच्छे फूल लेकर नाम-सहित मन्त्र का जप करते हुए फूल को फूंकता जाय। फिर अभिमन्त्रित फूल उस व्यक्ति को दे दे।

१४ ऐसा सेन्दुर-बीज बिसौध। सेन्दुर की आवै वास, चलै हमारे पास घर छोड़ै, बखरी छोड़ै पिया परे का पलँगा छोड़ै। आन का देखि जर मरै। मोरे अङ्ग कइति चितवै, मोहि लावै नारसिंह। दोहाई नारसिंह कै।

१५ ॐ ह्रीं क्रीं जम्भ जम्भ, मोहय मोहय, अमुकी आकर्षय आकर्षय, मम वश्यं कुरु कुरु, स्वाहा।

विधि—रात्रि में प्रति-दिन ११ माला ४२ दिन तक स्फटिक की माला से जपे। कार्य अवश्य होगा।

१६ ॐ ह्रीं मोहिनी स्वाहा। अमुकं नरं मे वशी कुरु (या श्री प्रकाशं मे वशी कुरु या उमादेवीं मे वशी कुरु)।

विधि—मन्त्र को दीपावली, डिठवन, चन्द्र या सूर्य-ग्रहण में १०,००० जप कर सिद्ध कर ले। जब इससे कार्य लेना हो, १०८ बार 'साध्य' का नाम लेकर जप कर पान, सुपारी, लौंग, इलायची, गरी या खाने की कोई चीज फूंककर खिला दे। कार्य सिद्ध होगा।

१७ अलहम्दो गवानीवो, मेरे पर हो दीवानी। जो न हो दीवानी, तौ सैयद कादर अब्दुल जलानी! चुट्टा पकड़ कर करो दीवानी।

विधि—बढ़िया इत्र शीशी में डालकर १० माला प्रति-दिन मन्त्र जपे। २१ दिन तक प्रति-माला जप से इत्र की शीशी पर फूंकता जाय।

२१ दिन में शीशी का इत्र घूमने लगेगा। यदि न घूमे, तो ४० दिन तक जप करे।

रक्षा-मन्त्र

(१) बाघ बाँधौ, बाघिनि बाँधौ, एक सौ आठ सौ कला बाँधौ, हार चोर मुख बाँधौ, जीभ ले आकाश बाँधौ। मुँह फारै, डङ्क करै, तौ महा - देव की आज्ञा फुरै। सती सीता आन, जती हनुमन्त की आन, लक्ष्मण कुमर की आन, श्री रामचन्द्र की आन, चौदह योगिनी की आन, अठारह भावनस्पती की आन। बाचा ते कुवाचा करै, तौ कुम्भी-पाक नरक में परै। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(२) ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं ज्रां ज्रीं ज्रः जल-केलि बड़वानल - भैरवाय, सकल-शत्रु-संहारकाय, ब्रह्मास्त्र, पाशुपतास्त्र-प्रदर्शनाय, घोर-स्त्री-दितेजाहरणाय, भक्त-कार्य-करणाय, भू-भू-कारकाय, भ्रें हुं फट्, ठः ठः, जारय जारय, तापय तापय, खं फ्रं स्वाहा।

(३) ॐ आ. वीर वेताल पैठो पाताल। खेलत वाल वायु वंवुल फेरि। लंगुल चीन चाहुँ। हाकी दीव दे देउ। स्त्री को चोर जारे। पुरुष को पाग जारि। पात-शाह को तखत जारि। पालकी बैठी रानी जारि। उमराव की हवेली जारि। पर्वत पहाड़ जारि कै भस्म करि। न करै, तो हनुमन्त वीर की आन। हनिवन्त मारि, करै भस्माभूक। माया मारै, घी धरै, गाइ वाछी खाय। ब्रह्म को अलि, सुरा पी, जहाँ भेजौं, तहाँ जाइ। शिव वाचा, ब्रह्म वाचा, रुद्र वाचा। चूकेउ वासुकी सीस फारी। मेरी वाचा छोड़ि कुवाचा करै, तौ लोना चमारिनि के छोरी परी। मेरी भक्ति देखो, हनुमन्त वीर। मेरे गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

(४) ॐ काल-रूप भैरव! वहाँ कर चले वज्र कपाट, तो उत चले सार की कत्ती। लोहे की कमान, तहाँ बैठा कालिका - पुत्र। भैरव-वाण, चल चल। भैरव-कालिका माता की आन। ब्रह्म वाचा, विष्णु वाचा, शिव वाचा छोड़ि कुवाचा करै, तौ धोबी के कुण्ड में परै। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—बलि देकर दस हजार जपे। साध्य के घर में पुत्तली बनाकर मूंज की लकड़ी के धनुष-वाण से उसे बींधे, तो साध्य के शरीर में पीडा हो।

(५) ॐ काला भैरव कल-कल करै, रक्त-मांस का भोजन करै। आवत जात दुइ घड़ी धरै। लौट मूठ पलट घर जाय। जिसका करतब, उसी को खाय। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—पूर्व-वत् सिद्ध कर ले। फिर प्रतिदिन प्रातः चुल्लू में पानी लेकर सात बार मन्त्र पढ़कर अपने सिर से उतार कर जमीन में फेंक दे। कभी कोई बाधा नहीं होगी।

कटोरा चलाने का मन्त्र

ॐ नमो विस्मिल्लाह रहिमाने उल रहीम। महम्मदा वीर अलेकुम सलाम। हरी टोपी, हरी कमान, हरा घोड़ा, हरा पलान। तिस उपर बैठा महम्मदा वीर पठान। नदी को चलाव, वादी को चलाव, भूत-प्रेत को चलाव, चौसठि योगिनी को चलाव, पीठ-पञ्जर पाउ दे। हनुमन्त वीर को चलाव, इन्द्र को चलाव, थाली को चलाव, बेली को चलाव, कटोरा को चलाव। जहाँ चोर, तहाँ चलाव। जहाँ वस्तु, तहाँ चलाव। जहाँ द्रव्य, तहाँ चलाव। इस बालक का कहा न करै, तौ तीसौ रोज हिन्दू के हाँथ धरै। हराम करै। इस बालक का कहा न करै, तौ कपिला मारी हराम करि खाइ। इस बालक का कहा न करै, तौ कङ्कार - पावत्तराहे सिरजन - हार की वाचा चूकै। इस बालक का कहा न करै, तौ पृथ्वी को पाप तेरे माथे। लाइलाह इल्लिल्लाह महम्मदा वीर पठान, तुरकिनि के जाए। तेरी शक्ति मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—जप १०,०००। पायस - होम। शनिवार की रात्रि में १०८ बार जप कर मण्डल बनाए। उसके मध्य में वाटी रखे। बाटी के मध्य में कनेर का फूल रखे। बाटी चलेगी।

'आधी सीसी' निवारक मन्त्र

मसान मेरा मन बसै। कटी बसै कपाल। हाँक सुने हनुमन्त की। आधी शीशी जाय पताल। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—सभी मन्त्रों को सिद्ध करने की एक ही विधि है। यथा—दिवाली, डिठवन या सूर्य - चन्द्र-ग्रहण में लौंग, लोबान की धूनी देता

जाय और कम-से-कम १०८ बार जप ले। मन्त्र सिद्ध हो जायँगे। मन्त्रों के पाठ से ही मालूम हो जाता है कि कौन मन्त्र किस काम का है।

ओला-पत्थर-निवारण के मन्त्र

(१) देवी शारदा सात बहिनिया। सातो बारि कुमारि, न पर नदिया, न पर नारे। न पर हमरे काव डरारे। ऊँच खेर औंधी कुवाँ, राम-लखन खेलैं जुवाँ। अर्जुन मारिन बान, जहाँ परा राम से काम। हाँकै हनू, वरावै भीम। ओर न परै हमारे सीम। ईश्वर महा-देव की दुहाई। ॐ नमः शिवाय।

(२) आदल चलै, बादल चलै। जाय परा सीता के बारी। सीता दीहिन शाप। जाय परा समुद्र के पार। वाचे महुआ, वाचे चार, हाँकै हनू, वरावै भीम। ओर न परै हमारे सीम। ईश्वर महा-देव की दोहाई। ॐ नमः शिवाय।

(३) पश्चिम दिशा ओर कै कुवाँ, जहाँ अर्जुन खेलै जुवाँ। आदल चले, बादल चले, चले छतीसों वायु। लङ्का ते रावण चला। ओर कहाँ भर जाय। हाँकै हनू, बरावै भीम। ओर न परे हमारे सीम। ईश्वर महा-देव की दुहाई। ॐ नमः शिवाय।

(४) सामनि मन-भावनि, कुवाँ का पानी। जाय सिर कै मागरि फूटिगै। बातो कहत लजाय, पत्थर कै पानी। पानी कै धूरि, घोरि-घारि वरषावै इन्द्र। हाँकै हनू, बरावै भीम। ओर न परे हमारे सीम। ईश्वर महा-देव की दुहाई। ॐ नमः शिवाय।

(५) उत्तर दिशा मोहिनी वारी, जहाँ रहै हेम कै ठारी। हाँकै हनू, बरावै भीम। ओर न परे हमारे सीम। ईश्वर महा-देव की दुहाई। ॐ नमः शिवाय।

विधि—जब जाने कि ओले गिरनेवाले हैं, तो जोर-जोर से चिल्ला कर ऊपर लिखे मन्त्रों को पढ़ना चाहिए। ओले नहीं गिरेंगे। यदि गिरेंगे भी, तो हानि नहीं करेंगे। सभी मन्त्रों को डिठवन या दिवाली में सात बार पढ़कर तथा लौंग-लोबान की धूनी देकर सिद्ध कर लें।

भूत-प्रेत, डीठ-मूठ व अन्य सङ्कट-निवारक हनुमान शाबर-मन्त्र

(१) ॐ नमो हनुमन्त वीर ! भोजन पुवा लड्डू खीर। आबाल-ब्रह्मचारी जमकातर-खण्ड-कारि-कारी, शङ्का डाइन भूत-प्रेत-निवारण-कारी। धर्म-धुरीन पवन-कुमार, कुलिश-समान वज्र-शरीर। तेरे कोप से परै कसि भूत-प्रेत-पिशाच मारो। डामरी वेताल ब्रह्म-राक्षसन की छाती फटै, जहाँ वीर बजरङ्गी डहै सत्य - सन्ध। गुरु का वाचा, सत्य दुहाई वीर अञ्जनी-कुमार की।

(२) महा-वीर का भूतै ओढ़ना, भूतै दसना, भूतै करै अहार। महा-देव की चौकी, महा-वीर रखवार।

विधि—मन्त्र को पढ़कर तीन बार ताली बजा देने से निर्जन स्थान में भय नहीं लगेगा। भूत-प्रेत भाग जाएँगे।

(३) हनूमान हठकीले, लोहे के खीले। वज्रै ओढ़ै, वज्रै दाशै, वज्रै करै वियारी। हनूमान की मयान्नहा कातै सूत। सूत कात के जाल विनिन। विकजाल विनिन, डारिन माझ पहार। भूतै फाँसै, चुरैल फाँसै, वैजही फाँसै, ब्रह्म - राक्षस फाँसै, पिशाच फाँसै, सर्व - घातक फाँसै। हाँक परत है भैंसासुर कै। भाग - भाग, भूत बचिहे न कोनौ लोक। दोहाई वीर हनुमान की।

(४) ॐ वीर-वीर ! लोहे की गदा, वज्र को सोंटा, तेल - सिन्दूर की पूजा। वेग चल, वेग चल। जैसे राजा रामचन्द्र के कारज सारे, वैसे मेरे कारज सार। चं चं चक्र कील, मस्त कील, बावन वीर कील, चौंसठ योगिनी कील, भैरव कील, भूत कील, प्रेत कील, दैत्य-दानव कील, राक्षस कील. महा-राक्षस कील, ब्रह्म - राक्षस कील, डङ्किनी शङ्किनी कील, चण्डी चूरैल कील, डाढ़ डङ्क कील, दृष्टि-मूष्टि कील, छल-छिद्र कील, नव - नारी बहत्तर कोठा कील, चारो दिसान के घाट कील, नाके घाटे कील, मरी मसानी कील। मेरे कील पर जो कोई अपघात करै, उलटि घाव उसी पर परै। खं खं षट् स्वाहा।

विधि—सूर्य-ग्रहण में १०८ बार जप कर अष्ट-गन्ध से हवन करे।

(५) ॐ महा-वीर हनुमन्ता, ॐ काला - टङ्क हनुमन्ता, ॐ रक्त-

हनुमन्ता । ॐ चल चल अञ्जनी-पुत्र ! ग्रह चल—हाँक देत हङ्की । कूदि हनुमन्त लङ्का जारी, पवन-पुत्र अञ्जनी आनन्द - कारी । राम-दूत हनुमन्त खं खं खं षट् ग्रह, हं हं हं हङ्कार-भाज-भाजी । शाकिनी डाकिनी भूत - प्रेत - पिशाच बन्ध - बन्ध । वीर हनुमन्त ! ढाल बन्ध, तलवार बन्ध, तुपक बन्ध, नेजा बन्ध, फरसा बन्ध, बान बन्ध, कोटक-बान बन्ध, चण्ड - बान बन्ध, रथ बन्ध, पृथ्वी बन्ध, आकाश बन्ध, पाताल बन्ध, फौज बन्ध, कङ्कर बन्ध, पत्थर बन्ध, अग्नि बन्ध । वीर हनुमन्त ! ना बाँधो, तो माता अञ्जनी को दोहाई । गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि—भैसा - गूगल की एक टङ्क प्रमाण की गोली बना कर हवन करे । मन्त्र का जप रात में, दिया के प्रकाश में करे । भोजन मीठा करे और उसी का भोग लगावे ।

सर्वापत्ति-निवारक हनुमान-स्तुति

ॐ सीता-राम जानत हों, सीता - राम मानत हों । सीता - राम पूजत, जपत सीता-राम हों । सीता - राम सों बसै प्राण, ध्यान धरत सीता-राम अभिराम हों । सीता-राम तेरे मन की कल्प - तरु, सीता-राम सों सनेह, सीता-राम को गुलाम हों । शिखा वज्र, नयन वज्र, तेरो मुख-दन्त वज्र, छाती - भुज पिङ्ग - वज्र । लाल - लाल दन्त हैं, काया लाल, ग्रीवा लाल, वसन लंगूर लाल, असन - अधर लाल, लालैं हनुमन्त हैं । मुकुट लाल, गोफा लाल, चूड़ा - बिजायट लाल, सेल्ही मञ्जीर लाल, लाल कण्ठ - माल हैं । कुण्डल-सिर-पेच लाल, कलगी सिर मुकुट लाल, तोड़ा कमर - बन्दै विशाल हैं । कण्ठ लाल, तिलक लाल, जङ्घिया-जनेऊ लाल, टोपी सिर-पाग लाल, लालै दुसाल हैं । जामा कर - पहुँची लाल, जिरहें जञ्जीर लाल, बखर उपन्ना लाल, मुदरिया माल हैं । शिखा पीर, नयन पीर, तारो मुख - दन्त पीर, छाती भुज शीश पीर, वज्र पीर भई है । देव पीर, देवी पीर, दानव-दैत्य पीर, भूत पीर, जिन्द पीर, राज-रोग गई है । जादू ज्वर-व्याधि पीर, व्याल-विष महा-वीर वेगि हरो सकल पीर । हनुमान की दोहाई ।

हनुमत् जञ्जीरा (द्वितीय)

ॐ वीर-वीर, महा-वीर। ॐ वज्र हनुमन्त राम-दूत ! चल चल, वेग चल। लैकै गदा, वज्र को सोटा, तेल - सिन्दूर की पूजा। हं हं हङ्कार जस, भूत कील, मारण कील, देव कील, दैत्य कील, दानव कील, राक्षस कील, ब्रह्म - राक्षस कील, शाकिनी - डाकिनी कील, भोरण्टा भैरव कील, बावन वीर कील, बारह जाति यक्ष कील, नौ कोटि नाग कील, छल-छिद्र कील, ताप - तिजारी कील, गढ़ - अचल पृथ्वी कील, मेरु कील, दुष्ट-शत्रु-मुख कील, दृष्टि कील, दुर्जन - बुद्धि कील, जो कोई हमको घात करै, तौ छाती फाटि मरै। उलटि ताके ऊपर परै, खं खं खं स्वाहा।

रक्षा-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीनीलकण्ठ महाराज, तारा-पीठ, बर्द्धवान

(अनुभूत शाबर मन्त्र)

ॐ नमो आदेश गुरू को। अपर कोठा, बिगड़ कोठा। पाताल राख, प्रहलाद राख। पांव दे बीज। जङ्घा देवे कालिका। मस्तक राखे महा-देव। जो कोई इस पिण्ड - प्राण को छेदे छेदे, देव - देवता, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी, कण्ठ-माला तिजारी, साँझ को, सबेरे को, सब किए कराए को स्वाहा पड़े। इसकी रक्षा नरसिंह जी करे।

विधि—सिर से पांव तक लाल धागा नाप कर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए सात गाँठ लगाकर गले में पहनाने से रक्षा होती है।

शाबर-मन्त्र-त्रिंशति

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ, १०८ चकराघाट, सागर (म. प्र.)

१. नजर, भूत-प्रेत, रोगादि निवारण

(१) **उलटन्त धरती, पलटन्त काया। भगाओ भूत, हम झाड़े आया॥ टेढ़ी टोपी सिर पै दए, मस्तक दए लिलार। मारी मूठ मसान की, फूट जाए कपार॥ छै महीना को बालक मारों, गर्भ करूँ बिनास। बोलत देऊँ मुरगा, ऊपर मद की धार॥ मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। देख - देख रे बंहा नारसिंह ! तेरे आखरी मन्त्र की दुहाई॥**

विधि--पञ्चोपचार-पूजन-सहित मद्य और मुर्गा देकर २१ दिन तक १०८ जप नित्य करें। अगरबत्ती, धार - दार हथियार या जल आदि अभिमन्त्रित कर झाड़ें। नजर, भूत-प्रेत तथा रोग दूर हों।

(२) **उलटन्त नरसिंग, पलटन्त काया। गरजत घुमड़न्त, नरसिंग आया॥ टेढ़ी टोपी सिर पै दए, मस्तक दए लिलार। मारों मूठ मसान की, फूट जाय कपार॥ छै महीना को बालक मारों, गर्भ करूँ विलास। बोलत देऊं मुरगा, ऊपर मद की धार॥ मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। देख-देख रे बैंहा नारसिंग ! तेरे आकरे मन्त्र की दुहाई॥**

विधि--प्रथम मन्त्र का यह मात्र 'पाठान्तर' है। दोनों फल-प्रद हैं। विधि वही है।

२. अभिचार-नाशक मन्त्र

(३) **ऊगत तारे, भए भनसारे। जहाँ अघोरी, आन विराजे॥ लकड़ी जरै, मुरदा चिल्लाय। तहाँ अघोरी, वीर किरकिराय॥ मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। देख-देख रे अघोरी ! तेरे मन्त्र की दुहाई॥**

विधि—श्मशान में जलते शव के पास बैठकर २१ दिन तक १२१ बार नित्य जपे और मद्य - मांस का नैवेद्य दे। अभिचार, रोग, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी का नाश होता है।

(४) **घाट के घुटैया बाबा, औघट का मसान। पड़ा सोता है, बारा भट्टी मद पिए॥ नवें बुकरा खाय। इतने में न अघाय, तो खेत के भूटे खाय। जो काम मैं कहूँ, करके न आय, तो गङ्गाराम अघोरी न कहाय॥**

विधि—श्मशान में, एकान्त में या घर में ही नित्य १०८ जप करे। मद्य, मांस तथा नींबू दे। ७ दिन में सिद्ध हो। अगरबत्ती, जल या भस्म से झाड़े। नजर, बीमारी तथा भूतादि नष्ट हों।

(५) अस्सी मन की साँकर, जैतमाल के पाँव। माता हटकै जैतमाल की, कैवारे ना जाव॥ कैवारे में बसै बाँदिया, साँकर लेय छिनाय। अरै मैं जातै मारों, बाँदिया करूँ बंदनिया राँड़॥ पाँच बरस का बालक मारूँ, गर्भ करूँ अहार। देव - देवी को बाँध, भूत-परीत को बाँध, जादू-टोने को बाँध॥ कब्जे में कर लाऊँ। इतना काम न करूँ, तो माता! तेरा दूध हराम, हनुमान की टङ्कार॥

विधि—नवरात्र में नित्य घी का होम देकर १०८ बार जपे। सिद्ध होने से मन्त्र में वर्णित कार्य होता है।

३. उपद्रव-कारक—शाबर मन्त्र

(६) कारो करुवा कारी रात, तोय चलाऊँ काली रात। कारो पहने चोलना कारी बाँधै ढाल॥ कारी ओढ़े कासनी, लए लुहाँगी हाथ। हाँकों देव सनीचरा, फेरत आवे साँग॥ पेट फूले आँत सड़ै, हुड़क लगावे नार। सवा हाथ धरती, खून में बोर कै आवे, तो सच्चा वीर कलुआ, बङ्गालिया अगवान कहावै॥

विधि—श्मशान ले जानेवाले शव को मार्ग में ही हल्दी से रँगे चावलों से न्यौता दे। फिर जब श्मशान से शव के साथ के लोग लौट आएँ, तब वहाँ जाकर एक 'अण्डा' और 'मदिरा' ७ बार मन्त्र पढ़कर अर्पित करे। अब एक सफेद कोरे कपड़े में हल्दी, एक सुपारी और चिता के बुझे कोयले का एक टुकड़ा बाँधकर मिट्टी के कोरे बर्तन में रखकर चिता के समीप ही, गाड़ दे। उसी दिन रात के चौथे पहर में पुनः श्मशान जाए और पुनः अण्डे तथा मदिरा को ७ बार मन्त्र से अर्पित करे। फिर गाड़े हुए बतन को निकाले। कपड़े में बंधी सारी सामग्री वहीं फेंक दे और उस चिता की एक मुट्ठी राख उस कपड़े में बाँधकर ले आए।

श्मशान जाते समय यथा-सम्भव किसी से बोले नहीं और लौटते समय पीछे मुड़कर कदापि न देखे, अन्यथा अनर्थ हो सकता है। श्मशान से लाई राख की पोटली को घर के भीतर न रखे, अन्यत्र

किसी सुरक्षित स्थान पर रखे। एक चुटकी राख ७ बार मन्त्रित करके जहाँ छोड़ी जायगी, वहाँ घोर उत्पात होने लगेंगे। इस अभिचार-प्रयोग को अत्यन्त आवश्यक होने पर ही किया जाए तथा कर्ता को अत्यधिक साहसी होना चाहिए। कायर या निर्बल हृदय इसे न करे।

४. त्रिविध फल-दायक शाबर मन्त्र

(७) तेइस जवा खत्र भैरों, करिया भैरव भूरे जटा। रुण्ड-मुण्ड खेलें मरघटा, काँसे का धनुआ, बाँस का तीर॥ चल - चल रे मसान, पाँजर के पीर। सोलह नदी अठारह नारे, जहाँ काल - भैरव रखवारे॥ राम-राम कह भैरव चले, तुरन्त काल बैरी को करे। बैरी मारे, भूमा डारे, फोड़ करेजो खाय। लास भूँज क्यौरा करै, धुँआ देख घर आवे॥ इतनी करनी जो करे, तो वीर भैरव बङ्गालिया साँचो कहावै। विना करै फिर आवे, तो माँ का दूध हराम करावै।

विधि— रसों के तेल का दीपक जला कर सामने रखे और घी की आहुति देते हुए १०८ बार जप करके जगावे। प्रयोग करते समय 'काँस' का धनुष और 'बाँस' का तीर बनाकर पूजा करे। जौ (यव) को घृत-सिक्त कर शत्रु के नाम से हवन करे, तो कुछ ही दिनों में शत्रु नहीं रहेगा।

यह प्रयोग अत्यन्त उग्र है। विशेष परिस्थिति में ही प्रयोग करे। आत्म-रक्षा का विशेष प्रबन्ध रखे। शाबर - मन्त्रों के प्रयोग उग्र होते हुए भी सरलता से वापस लौटाए जा सकते हैं। विपरीत चालन की स्थिति में ये अत्यधिक मारक होकर साधक को ही सङ्कट में डाल देते हैं। अतः विशेष सावधानी रखे।

(८) या भुज ते महिषासुर मारि, औ शुम्भ - निशुम्भ दोऊ दल थम्बा। आरत हेतु पुकारत हौं, जाइ कहाँ बैठी जगदम्बा ?॥ खड्ग टूटो कि खप्पर फूटो कि सिंह थको, तुमरो जगदम्बा ! आज तोहे माता भक्त शपथ, बिनु शान्ति दिए जनि सोवहु अम्बा !॥

(९) जे भुज ते महिषासुर मारो, शुम्भ-निशुम्भ हत्यो बल-थम्बा। सेवक को प्रण राख ले मात ! भई पर-मन्त्र तुही अवलम्बा॥ आरत होय पुकारत हौं, कर ते तरवार गहो जगदम्बा ! आनि तुम्हें शिव-विष्णु की, जनि शत्रु बधे बिन सोवहु अम्बा !॥

विधि—उक्त दोनों मन्त्रों की विधि एक ही है। नवरात्र में नित्य भगवती का पूजन कर एक हजार जप करें। फिर प्रयोग करें। यथा—

(१) सायं-काल दक्षिणाभिमुख होकर पीपल (अश्वत्थ) की डाल हाथ में लेकर, हाथ ऊँचा उठाकर, नित्य २१ बार पढ़ने से शत्रु परास्त होंगे।

(२) रात्रि में पश्चिमाभिमुख होकर उक्त क्रिया - सहित २१ बार पाठ करने से पुष्टि-कर्म की सिद्धि होगी।

(३) ब्राह्म मुहूर्त में पूर्वाभिमुख होकर हाथ में कुश लेकर उक्त क्रिया-पूर्वक ७ बार पाठ करने से शान्ति-कर्म की सिद्धि होगी।

विशेष—उक्त दोनों मन्त्र विधि-सहित **'कौल - कल्पतरु चण्डी'** के सम्भवतः वि० सं० २०२२ के किसी अङ्क में प्रकाशित हैं। संशोधन और शोध होकर पुनः प्रकाशित हो रहे हैं। इन मन्त्रों के प्रस्तुत-कर्ता के नाम से अनभिज्ञ हूँ, किन्तु उनका आभारी हूँ। उन्हें प्रणाम। इन मन्त्रों की साधना कई लोगों को बतलाई और सभी ने इन्हें पूर्ण सत्य और अत्यन्त प्रभावी बतलाया है, अव्यर्थ प्रयोग है।

५ स्तम्भन-कारक शाबर मन्त्र

(१०) ओ अङ्ग आसो मेहतरानी। आट बाँधे, खाट बाँधे, मैलिया मसान बाँधे। गैल-घाट को बाँधे, जादू-टोना को बाँधे, चोट-मूठ को बाँधे। जमीन-आसमान बाँधे, नौ मारी बहत्तर कोठा बाँधे। आकाश - पाताल वायु - मण्डल को बाँधे, तैंतीस कोटि देवी-देवताओं को बाँध। बाँध वाचा में राखे, तो बङ्गाले की आसो मेहतरानी कहावे। वाचा चूके, कुवाचा करे, तो बगूदिया धोबन की नाँद में पड़े॥

विधि—देवोत्थानी एकादशी (कार्तिक शुक्ल ११) की रात्रि में 'अण्डा-दारू' से पूजन करे तथा 'घिटलिया' (सुअर का ऐसा बच्चा, जिसकी जन्म के बाद आँख न खुली हो) की बलि दे। झाड़ू से झाड़ा दे। मन्त्रोक्त कार्य होंगे। विकट स्तम्भन-कारक मन्त्र है।

(११) सात समुद्र आड़े, सात समुद्र ठाड़े। समुन्दर में टापू, जे पै बनी काँच की मढ़ी। जे में रहे आसो रानी। काहे की डलिया, काहे

की झाड़ू ? सोने की डलिया, रूपे का झाड़ू। रोम-रोम, हड्डी-हड्डी, चाम-चाम, नौ नारी, बहत्तर कोठा में से भूत - परीत, उड़ैल - चुड़ैल, अब्बीस-खब्बीस, नजर मन दीठ को बाँध-बाँध। वाचा में ल्यावे, तो बङ्गाले की आसो मेहतरानी कहलावे। वाचा चूके, कुवाचा चले, तो गूँदिया धोबन की नाँद में पड़े। मेरी भगत, गुरू की सकत। फुरै मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—गोबर से गोल चौका लगाकर अण्डा - शराब, अठवाई (छोटो - छोटी पुड़ियाँ), गुलाब के इत्र की काड़ी, पाँच प्रकार की मिठाई (सवा पाव) से पूजन करे। एक फूल पर एक बार मन्त्र पढ़े। एक मास में सिद्धि होगी। भूत-प्रेतादि तत्काल बाँधकर लाती है और बात करानी है। यह भी भूत-प्रेतादि का उत्कट 'स्तम्भन' है।

६ बजरङ्ग की कैंची (प्रयोगों की काट)

(१२) फजले बिस्मिल्ला रहमान, अटल खुरजी तेज खुरान। घड़ी - घड़ी में निकलै बान। लाली लाल कमान, राखवाले की जबान। खाक माता, खाक पिता। त्रिलोकी की मिसैली। राजा-प्रजा पड़ै मोहिनी। जल देखै, जल कतरै। थल देखै, थल कतरै। राजा इन्द्र की आसन कतरै। तलवार की धार कतरै। आकाश-पाताल, वायु - मण्डल को कतरै। तेंतीस कोटि देवी-देवताओं को कतरै। शिव-शङ्कर को कतरै। भीमसेन की गदा को कतरै। अर्जुन को बाण कतरै। कृष्ण को सुदर्शन कतरै। सोला हंसा को कतरै। पेट में के बावरे को कतरै। दौलतपुर के डोमा को कतरै। ब्राह्मण के ब्रह्म-राक्षस को कतरै। धोबी के जिन को कतरै। भङ्गी के जिन को कतरै। रमाने के जिन को कतरै। मसान के जिन को कतरै। मेरे नरसिंह से कतरै। गुरू के नरसिंह से कतरै। बौलातन चुड़ैल को कतरै। जहाँ खुरी नौ खण्ड, बारह बङ्गाले की विद्या जा पहुँचे। अञ्जनी के पूत हनुमान ! तोहे एक लाख अस्सी हजार पीर-पैगम्बरों की दुहाई, दुहाई, दुहाई।

विधि—हनुमान जी का पूजन कर नित्य १०८ बार जप करे। २१ दिन जप किया जाए। २१ वें दिन हनुमान जी को सिन्दूर, लङ्गोट, सवा सेर का रोट, नारियल अर्पित करे। इस विद्या से अभि-मन्त्रित नींबू जहाँ लटका दिया जाएगा, वहाँ किसी भी प्रकार का

अभिचार, भूत-प्रेतादि नहीं ठहर सकते। दूकान में लटकाने से धन्धा अच्छा चलेगा। भूत-प्रेत लगे व्यक्ति को ३-५ या ७ बार अभिमन्त्रित जल छिड़कने से व्यक्ति स्वस्थ होगा। सर्वत्र रक्षा होती है। जिस व्यक्ति के नाम से मन्त्र पढ़कर लवङ्ग अभिमन्त्रित कर उसे खिला दें, तो उसकी विद्या नष्ट हो जाती है।

७. सुख-प्रसव, गर्भ-पात, गर्भ-स्राव हेतु मन्त्र

(१३) ॐ नमो वीर निचला गर्भं मुञ्च मुञ्च स्वाहा।

विधि—तेल या गुड २१ बार अभिमन्त्रित कर गर्भवती के कमरे में रखने से प्रसव सुख-पूर्वक हो जाता है।

(१४) ऊँचो पर्वत नहचो बिलाऊ, तहाँ महा-देव के बैठके पास। गौरी कातै ईश्वर ताने। वैच पाँच यो पिण्डा करै। गाऊ के कै बेड़े तरिया बहै। अर्जुन सहदेव खेंचे बान। जो ये पिण्डा भूमा पड़ै, तो गुरू गोरखनाथ की आन। मेरी भगत, गुरू की सकत। अब देखों बाबा, तेरे मन्त्र की शक्ति। फुरै मन्त्र, इश्वरो वाचा॥

विधि—कुम्हार के चके की मिट्टी या शुद्ध जल को ७ बार अभिमन्त्रित कर पिलावे। गर्भ-पात/गर्भ-स्राव रुकेगा।

८. तिजारी (तृतीयक ज्वर) का मन्त्र

(१५) अजमेरगढ़, अजमेरगढ़ के राजा अजैपाल, अजैपाल की रानी कमलावती, कमलावती के सात पुत्र, सात पुत्र के नाम कहा। ताप तिजारी इकतरा, निकलो ऊ बार। डोम रानी को छूए चोर। राजा को छूटं जटा। रणा करै बाबा अजैपाल। तेरे मन्त्र की शक्ति। फुरै मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

विधि—भस्म से सात बार झाड़े। शीघ्र लाभ होगा।

९. जुआ जीतने हेतु मन्त्र

(१६) समुद्र, समुद्र में टापू, टापू में दीप, दीप पै पाठो, पाठे पै बैठी चार कुमारी। तिन या कही—सुनो हो राजा राम, जो कोई या मूठ जीतै, हनुमन्त करहै सहाई। मेरी भगत, गुरू की सकत। फुरै मन्त्र, ईश्वरी वाचा। वाचा ते कुवाचा होई, तो कुम्भी-पाक नरक में पड़ै। धोबी की सोंधनी, चमार की छोहड़ में पड़े॥

विधि—जुआ खेलने के लिए बैठने से पहले सात बार मन्त्र पढ़े, फिर खेले। जीत होगी।

१०. मोहिनी शाबर-मन्त्र

(१७) रँजेखुरा सिर हिरदै लावे। मेरी लीला को जग मोहे। जप मोहे देवी काल। नरसिंह की आस्ति नरसिंह, नये ठग मोहिनी। हाट मोहे, बाट मोहे, दौरे दीवान मोहे, भैया बन्धु मोहे, वैरी दुश्मन मोहे, रूठो भाखता यो काल मोहे। वैरी शत्रु देहरी बैठ बात बनाई। बाट सिहा है निर्मल कला, कामती की विधि। भीष्म की गदा की दुहाई। नरसिंह तेरे मन्त्र की शक्ति। आई नरसिंह बैठ - बैठ। वर नाल बाट हरे। मोहे ठाकुर, मोहे परजा। मोहे महो, पालकी बैठो राजा मोहे, पीढ़ा बैठी रानी मोहे। बैरी देख जरै मरै, मोहे देख ठौठा करै। पाई लगे घरी पल माँहीं, हनुवीर आप पाइन-पाइन तर डार। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। अब देखों हनुवीर, तेरे मन्त्र की शक्ति। वाचा छोड़, कुवाचा करै, कुम्भी-नरक में पापी परै। हनुवीर नरसिंह मोहनी रहो, न सत्या गह्यो॥

विधि—(१) स्त्री के बाँएँ तथा पुरुष के दाएँ पैर के नीचे की धूल तथा श्मशान की राख सात बार अभिमन्त्रित कर, स्त्री के सिर पर तथा पुरुष के पैरों पर छोड़े। वशीकरण होगा।

(२) सात बार अभिमन्त्रित की हुई कोई भी खाने-पीने की वस्तु खिलाने-पिलाने से वशीकरण होगा।

(१८) कहे कमिख्या सुनहु ललजार जर! पेड़ पात सब तुमरो मलिनौ, पाल पात जराय के भस्मत कीनो। पुन वह क्षार महा-देव ने लई। अब तुमको प्रतिष्ठा भई। ग्रह-विचार बेगे तुम आए, जिमि क्षार लगावो धाए। छिन इक में बस होय हमारे, तन - मन ते पग परत विचारे। मेरी भगत, गुरू की सकत। फुरै मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि—वशीकरण हेतु प्रशस्त दिन, तिथि तथा नक्षत्र देखकर, लाजवन्ती का पौधा लाकर, उसे सुखाकर, जलाकर भस्म बनावे। इस भस्म को सात बार मन्त्रित कर जिसे लगा दिया जाएगा, वह वशीभूत होगा, चाहे स्त्री हो या पुरुष। पौधा जलाते समय मन्त्र का लगातार जप करते रहें।

(१६) हेरो सरसुआ फेरो बहिनी, जब देखों तो बाँस के रहनी, नथे बैल बनियन बँधो, परके तेल माथे पे लगाऊ रहिया, मोहनी धुँआ धरनी, जरवा जोहनी भैया मोहनो, कहाँ को मोहनी, भेड़ा-घाट की मोहनी, लग जाय री मोहनी, उस्ताज मोहनी, चल रे मोहनिया। फिर जहाँ फटकारों, तहाँ वचन न परे खाली। जैसे लवाई गाय अपने बच्छा के लानै दौरे, वैसे मेरे लाने मनख दौरे। उसका का मोह, तरुआ मोहो, पिंडरी मोहो, जाँघ मोहो, करीय मोहो, छतियाँ मोहो, छींकन की नाक मोहो, देखन की आँख मोहो, माथे की चँदिया मोहो। सिर पे बैठ पकर ला, जेर बन्द कर ला मेरे पास, जब मैं जानों ठीक, गुरू की दुहाई ।।

विधि— ढाई पाव आटे के रोट का मन्नीदा, लङ्गोट, चमीटा, नारियल और गाँजे की चुङ्गी (चिलम) से सिद्ध बाबा की पूजा करके जपे। नित्य १०८ बार जप ४६ दिनों तक करे, तो सिद्ध हो। फिर खाने - पीने की वस्तु पर ७ बार मन्त्र पढ़कर, खाने - पीने में दें, तो वशीकरण हो।

११. काल-भैरव, भैंसासुर, बाजोगर, मरही माता मन्त्र

(२०) कर-कर बोले। काल - भैरों रकत मांस के भोजन करे। छाती-तोड़ कलेजा खाय, मूड़-तोड़ भेजा खाय। नैनन बैठ पानी पिए। मार आ, तोड़ आ, जार आ, फूँक आ, लौट दिवाले आ। नीचे देहों वाच को मुरगा, ऊपर मद की धार। जार बार बैरी की खबर ला। मेरा नाम छिपा, दूसरे का नाम बता। किसी के कहने में मत आना। लौटत आना कारी घटिया, तोह देऊँ जोत बरत बराई। ऊपर चले मसान, मिर्गा औखर खाय ।।

(२१) ढाई अक्षर मन्त्र की दुहाई। छोट - मोट इमली, छिचल-बिचल गई डार। जोतें तेली, जोतें कलार। अम्बे भैंसासुर माता के कोरे, सिकन्दर बाजा करुवा। का बजा, गुरू कौन, अघोर पन्थ की दुहाई ।।

(२२) बाजी चला बाज को, नौ सौ डङ्क बजाय। बाजो की माता बोली, हे पुत्र बङ्गाले मत जाय। बङ्गाले की चञ्चल तिरियाँ, लेहें बान छीन। फून की डारी डारिए तोड़, फल फले न दैए डार। इतना काम जो कहे, सो करके न आवे, तो बाजीगीर न कहाय।

(२३) भैंसासुर के इमली, अलग-बिलग गए डार। ऊपर मोती कर है, नीचे कर भैंसा रखवार। वो भैंसा न जानिए, जो जोते तेली कलार। बारा भाटी मद पिए, सोलह बुकरा खाय। इतने में न माने, तो खेत के भूते खाय। खेतै उढ़ना, खेतै दसना, खेतै करै अहार। जै दिन करुवा भूत न पावै, तै दिन करै उपास। पकड़ भूत पछाड़ै, तब गोड़े तले दाबै। तब करुवा वीर कहलावे। भाग भूत, मोरी हाँक पड़ी, भैंसासुर की दुहाई॥

(२४) बैरी जोते एक, मैं जोतों बारा। पड़ा के ताकत देना। भूरी भैंसासुर, काला मुँह कर देवेगा। मार दे, फेंक दे, गिरा दे, जब मैं जानों ठीक। गुरू को दुहाई॥

विधि--एक मुर्गी, नारियल, ढाई पाव आटे की रोटी, मलीदा (चूरमा), अण्डा, गाँजे की चिलम। उक्त दोनों मन्त्रों (२३-२४) की यही पूजन-सामग्री है।

(२५) कारो करवा, कारी रात। वैरी सोवे, निस्सोम रात। जा बैरी की छाती में बैठ, छाती तोड़ कलेजा खा। मूड़ तोड़, भेजा खा। नाक-कान से निकल जा। चार पञ्च बुला ले। उलट - पलट, मरघट भेज। तब मैं जानों ठीक, गुरू की दुहाई।

विधि--मुर्गी, शराब, नारियल, ढाई पाव रोट, मलीदा से पूजा।

(२६) काली महा-काली, इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली। खाय मसान, बजावे ताली। जा बैठ, बैरी की खाट। मरघट की मरघटिया मसान। धुँआँ देख जार-बार। पहुँचो काली, तेरा आखरी मन्त्र, फुरै वाचा॥

(२७) चण्डी परचण्डी, आऊत मूठ करों नौ खण्डी। लौट - पौट फड़की हो जा त्यार। जा बैठ बैरी की खाट। बैरी मार मरघट ले जाय। मरघट की मरघटिया मसान। धुआँ देख जार - बार। पहुँचो री चण्डी, तेरे आखिरी मन्त्र, फुरै वाचा॥

(२८) रूपे को पलँग, सोने की खील। जो में छाए जमराज वीर। चार जम बारा काल। मेड़ो बाँध, मड़इया बाँध। घर बाँध, घर के चारों कोने बाँध। बाड़न गुनी को गुन बाँध। जातइ वैहों मुरगा, लौटत मद की धार। पहुँचो जमराज, तेरे आखरी मन्त्र की दुहाई, फुरै वाचा॥

(२६) रथ राथ, कान कड़ी, हरा परै तुसा। आगे मोरे भाई, लोहे के ताई। भाई को तवा, बरा पकावे भीमसेन। हेर - हेर खाई, गौरा पार्वती की दुहाई। जैसा ऊपर से ओला गिरता है, ठण्डा हो जाई। गुरू की दुहाई।

विधि—नारियल, ढाई पाव आटे के रोट के मलीदा से पूजन।

(३०) उत्तर बाँधों, दरिया दानों। दक्षिण बाँधों छत्तर - पाल। पूरब बाँधों नैना जोगनी। पश्चिम बाँधों राय-दुआर। तब बाँधों मैं आपन काया। डायन के चक्कर, टोना - मोना दोनों बहिनो। चलो री बहिनी, कामरू तोर। जो आवे हा - हा करते, जो आसो पाँव पकरते। जब बोले, छाती चढ़ बैठे। उरी चले गली, चढ़ बैठे। आओ छुरी, परखें तलवार। लँगरा ला हम्मू भलुआ राग फिरी। फिरी के पुतरी ओरा सम पनहार। हराई के तीनों कुले बताओ। नह बाँधों या अस्तुल बाँधों। बाँधों बत्तिस दाँत। हित गुरु बाँधों, मित गुरु बाँधों। सिद्ध-गुरु लेऊँ माथ चढ़ाय। चलत - फिरत सिमना बाँधों। अरनो मसाना मही बाँधों। बीच पेस गुन - चक्कर काटों। आस बाँधों, पास बाँधों, जोगनो अकास बाँधों। जहाँ मन होय, तहाँ जाओ। आस बाँधों, पास बाँधों, जोगना अकास बाँधों। माई डोहा, डाइन बाँधों। बाप - पूत ओझा बाँधों। मसान गुने, डाइन बाँधों। धोके में को, बजर किवार टूट जाय। दोहाई महा - देव की, लाख दोहाई॥

विधि—दशहरा, दीवाली, देव - उठनी ग्यारस (कार्तिक शुक्ल एकादशा) या होली के दिन १०८ बार जप कर सिद्ध कर ले। आवश्यकता होने पर एक या तीन बार मन्त्र पढ़कर अपने सीने पर फूंक मारे। सब प्रकार से रक्षा होगी।

विशेष निवेदन

उक्त संग्रह के सारे मन्त्र या तो प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों के हैं या गुणी जनों द्वारा बताए हुए हैं। जिन मन्त्रों की विस्तृत विधि उपलब्ध है, वह साथ में दी गई है। जिनकी विधि ज्ञात नहीं है, वे मन्त्र मात्र ही दिए हैं। शाबर-मन्त्रों की साधना मेरा क्षेत्र नहीं है, अतः मैं किसी भी प्रकार का स्पष्टीकरण देने में असमर्थ हूँ। इन मन्त्रों का प्रकाशन कराने का उद्देश्य मात्र लोक-हित है।

क्रमाङ्क १, २, ४, ६, ८, ६, १२, १३, १७, १६ के मन्त्रों का प्रयोग विविध लोगों ने किया है और उन्हें अच्छा फल मिला है। श्रद्धा, भक्ति और विश्वास-पूर्वक साधना करने से अभीष्ट-सिद्धि अवश्य होगी।

शाबर - मन्त्र शीघ्र ही फल देते हैं, अतः सिद्धि पाकर उसका दुरुपयोग न किया जाए, अन्यथा लोक-परलोक दोनों ही बिगड़ जाते हैं। इन मन्त्रों की एक सीमा है, उससे बाहर ये कार्य नहीं करते। अतएव अभिचार आदि के चक्कर में किसी उच्च साधक या तान्त्रिक से टकराने की भूल न कर बैठें, अन्यथा प्राणों पर बन आएगी। सावधानी-पूर्वक ही इन मन्त्रों का प्रयोग अपने गुरु-देव की अनुमति से करें और पुण्य के भागी बनें।

—भैरवानन्द नाथ

अनुभूत शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सच्चिदानन्द सिन्हा, सीतापुर, सरगुजा (म० प्र०)

(१) गो-समुदाय-रक्षक मन्त्र

ॐ नमो भगवते त्र्यम्बकायो पश-मयो पश-मय ! चुलु-चुलु, मिलि-मिलि, भिदि-भिदि, गोमानिनि चक्रिणी ह्रूं फट् ।

विधि—मन्त्र को लिखकर गौ-शाला में टाँग देने से रक्षा होती है।

(२) अग्नि-स्तम्भन

विधि—अग्नि की गति जिस ओर हो, उसी ओर खड़े होकर जिस नासिका से श्वास चले, उसी से वायु खींचकर नासिका द्वारा जल पीना चाहिए। एक छोटी लुटिया में जल लेकर यह कार्य करे, उसके बाद सात रत्ती जल पर निम्न मन्त्र का जप करे--

उत्तरस्यां च दिक्-भागे मारोचो नाम राक्षसः । तस्य मूत्र-पुरीषाभ्यां हुतो वह्नि स्तम्भय स्वाहा ।

अभिमन्त्रित जल को अग्नि में डाल दे। अग्नि बुझ जाएगी।

(३) वशीकरण-प्रयोग

(अ) ॐ ऐं ओं औं हं हां ग्लौं हुं क्ष सर्व-जीव-वश-करी त्रि-जगन्मोहिनी त्रैलोक्यं मे वशमानय । एहि एहि ब्रह्माणि वर्ण-मये सर्वं मे वशमानय स्वाहा ।

विधि--मन्त्र से १०० बार अभिमन्त्रित कर कोई भी वस्तु--खान-पान, लेपन, परिधान, वन्धनादि साध्य को दें, तो वह वशीभूत होगा।

(ब) ॐ नमो भगवते मदन-मोह-मये पञ्च-भूत-मोहिनी । चतुर्विधं जीव गलनु मोहिसु मोहिसु । तन्नो नो उदकेण तुरित व्यतलिन्नकाणा कालुकै । प्याडदे कल बहु विवोडि वरील वार दिद्दरे । महा-मायाणे काल-भैरव-गणे ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरणे श्रीराम ईतनाणे । क्लीं मोहिनी मोहिसु मोहिसु । निनेगे निन्नाणे मोहिसु ॐ गुरु-प्रसादं ।

विधि—उक्त कर्णाटकी मन्त्र श्री गुरु मत्स्येन्द्रनाथ जी ने अपने ५ शिष्यों को दिया था। इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित भस्म या जल से देवता, राक्षस आदि मोहित होते हैं। भस्म या जल को मिलाने से मोहन होता है। खजूर को जल में डालकर उस जल को २१ बार अभिमन्त्रित कर साध्य को देने से उसका मोहन होता है।

(४) स्वप्न में हनुमान जी का दर्शन

विधि—८१ दिन का अनुष्ठान है। ब्रह्मचर्य अनिवार्य है तथा क्षौर, नख-कृन्तन, मद्य-पान एवं मांसाहार सर्वथा वर्जित है। अनुष्ठानारम्भ के दिन प्रातः उठकर शौचादि से निवृत्त हो, शुद्ध वस्त्र पहन, एक लोटा शुद्ध जल लेकर हनुमान जी के मन्दिर में जाय और उस जल से हनुमान जी को स्नान कराए। प्रथम दिन एक दाना उड़द हनुमान जी के शिर पर रखकर ११ प्रदक्षिणा करे। बाद में नमस्कार कर मन-ही-मन अपनी कामना हनुमान जी से कहे और उड़द का दाना लेकर घर लौट आए। दूसरे दिन से एक - एक उड़द-दाना बढ़ाता जाय। इस प्रकार ४१ वें दिन ४१ दाने रखकर ४२ वें दिन से एक-एक दाना कम करता जाय। अर्थात् ४२ वें दिन ४० दाने रह जायँगे। इस प्रकार ८१ वें दिन पुनः एक ही दाना रखे। उसी दिन रात में श्री हनुमान जी का स्वप्न में दर्शन होगा। मनोकामना पूर्ण होने के बाद उड़द के दानों को किसी नदी या जलाशय में विसर्जित कर दे।

(५) सर्प-स्तम्भन-यन्त्र

गोरोचन, रक्त-चन्दन, केशर एवं कस्तूरी को मिलाकर स्याही-सा बना ले। फिर उससे अनार या विल्व की लेखनी द्वारा भोज-पत्र पर 'अष्ट-दल-कमल' बनाए। उसके आठ दलों (पंखड़ियों) में से प्रत्येक के मध्य में 'हंसः' लिखे और कर्णिका में धारण करनेवाले व्यक्ति का नाम लिख दे। धूप-दीप, गन्ध - पुष्पादि तथा नैवेद्य से विधि - पूर्वक पूजन कर उसे त्रिलौह के ताबीज में बन्द कर धारण करने से सर्प का स्तम्भन होता है। सर्प पर पैर भी पड़ जाय, तो वह नहीं काटेगा। इस यन्त्र को धारण करनेवाले व्यक्ति के गले में भी सर्प डाल दिया जाय, तो वह कुछ नहीं करेगा ('मन्त्र-महोदधि' से)।

(६) हैजा-निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रां रीं रां विष्णु-शक्तये नमः। ॐ नमो भगवती विष्णु-शक्तिमेनां ॐ हर हर, नय नय, पच पच, मथ मथ, उत्सादय, दूरे कुरु स्वाहा। हिमवन्तं गच्छ जीव, सः सः सः चन्द्र - मण्डलं गतोऽसि स्वाहा।

विधि—स्नानादि से शुद्ध होकर धूप - दीप कर, एक कटोरे में गङ्गाजल ले। कटोरे को बाँएँ हाथ में रखकर, दाहिने हाथ से उक्त मन्त्र द्वारा रोगी का मार्जन करे, तो रोग दूर होगा।

(७) क्रोध-निवारण मन्त्र

ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्व-क्रोधोपशमनि ! स्वाहा।

विधि—२१ बार उक्त मन्त्र को जप कर मुँह धोने से क्रोध का निवारण होता है।

प्रेत-बाधा-निवारणार्थ अनुभूत मन्त्र

दोहाई हनुमान जी की ११, दोहाई कामाक्षा देवी की ११, दोहाई काली माई की ११, दोहाई मैहर की देवी की ११, दोहाई बम्बा देवी की ११, दोहाई अष्ट-भुजा की ११, शक्ति हो—इस बाधा को दूर करो, हम आपके सेवक हैं।

विधि—इस मन्त्र को ५ बार पढ़कर फूंके। दीपावली के पर्व पर दीपक के सामने ५ बार जप कर सिद्ध कर ले। सब तरह की प्रेत-बाधा दूर होती है।

नजर-टोना-निवारक मन्त्र

दोहाई हनुमान जी की ५, दोहाई लोना चमाइन की, दोहाई पहलवान की, दोहाई दुर्गा की। जो कुछ नजर - टोना हो, उसको दूर करो।

विधि—५ बार पढ़कर फूंके।

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० रामलखन उपाध्याय वैद्य, प्रयाग (उ० प्र०)

शाबर-मन्त्र-पंचक

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री प्रकाशनाथ 'तन्त्रेश', ब्यावर (राजस्थान)

१. अघोर शाबर-मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू। घोर - घोर महा - घोर, काजी की कुरान घोर, मुल्ला की बांग घोर, रेगर की कूण्ड घोर, धोबी की चूण्ड घोर, पीपल का पान घोर, देव की दीवाल घोर। आपकी घोर बिखेरता चल, पर की घोर बैठाता चल। वज्र का कोवाड़ जोड़ता चल, सार का कोवाड़ तोड़ता चल। कुण-कुण को बन्द करता चल–भूत को, पलीत को, देव को, दानव को, दुष्ट को, मुष्ठ को, चोट को, फूंट को, मेले को, धरले को, उलके को, बुलके को, हिड़के को, भिड़के को, ओपरी को, पराई को, भूतनी को, डङ्कणी को, सियारी को, भूचरी को, खेचरी को, कलुवे को, मलवे को, उन को, मतवाय को, ताप को, तिजारी को, माथा की मतवाय को, मँगरा की पीड़ा को, पेट की पीड़ा को, साँस को, काँस को, मरे को, मुसाण को। कुण-कुण-सा मुसाण---काचिया मुसाण, भुकिया मुसाण, कीटिया मुसाण, चीड़ी चोपड़ा का मुसाण, नुहिया मुसाण---इन्हीं को बन्ध कर, ऐड़ी की ऐड़ी बन्द कर, जाँघ की जाड़ी बन्द कर, कटि की कड़ी बन्द कर, पेट की पीड़ा बन्द कर, छाती की शूल बन्द कर, सर की सोस बन्द कर, चोटी की चोटी बन्द कर। नौ नाड़ी, बहत्तर रोम-रोम में, घर-पिण्ड में दखल कर। देश बङ्गाल का मनसा राम सेबड़ा आकर मेरा काम सिद्ध न करे, तो गुरू उस्ताद से लाजे। शब्द साचा, पिण्ड काचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

विधि व फल—रविवार के दिन सायं - काल भगवान् शिव के मन्दिर में जाकर सुगन्धित तेल का दीपक जलाकर लोबान-गूगल का धप करे और नैवेद्य अर्पित करे। किसी धूणे या शिव-मन्दिर के साधु को गाँजे या तम्बाकू से भरी एक चिलम भेंट करे। तदुपरान्त मन्त्र का २७ बार जप करे। यह जप २७ दिनों तक नियमित रूप से करना चाहिए। फिर आवश्यकता पड़ने पर अर्थात् मन्त्र में वर्णित कोई

रोग-बाधा दूर करने हेतु पीड़ित व्यक्ति को लोहे की छुरी या मोर-पङ्ख से सात बार मन्त्र पढते हुए झाड़ना चाहिए। इससे रोगी का रोग शान्त होता है। यह क्रिया तीन दिन तक प्रातः और सायं-काल करने से रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जाता है।

२. भैरव-सिद्धि शाबर-मन्त्र

ॐ गुरू, ॐ गुरू, ॐ गुरू ॐकार, ॐ गुरू भूमसान, ॐ गुरू सत्य गुरू। सत्य नाम काल-भैरव। कामरू जटा चार पहर खोले चोपटा। बैठे नगर में। सुमरो तोय। दृष्टि बाँध दे सबको। मोय हनुमान बसे हथेली। भैरव बसे कपाल। नरसिंह जी को मोहिनी, मोहे सकल संसार। भूत मोहूँ, प्रेत मोहूँ, जिन्द मोहूँ, मसान मोहूँ। घर का मोहूँ, बाहर का मोहूँ। बम - रक्कस मोहूँ, कोढ़ा मोहूँ, अघोरी मोहूँ, दूती मोहूँ, दुमनी मोहूँ, नगर मोहूँ, घेरा मोहूँ, जादू-टोना मोहूँ, डङ्कनी मोहूँ, सङ्कनी मोहूँ, रात का बटोही मोहूँ, बाट का बटोही मोहूँ, पनघट की पनिहारी मोहूँ, इन्द्र का इन्द्रासन मोहूँ, गद्दी बैठा राजा मोहूँ, गद्दी बैठा बणिया मोहूँ, आसन बैठा योगी मोहूँ। और को देखे जले - भुने। मोय देख के पायन परे। जो कोई काटे मेरा वाचा, अन्धा कर, लूला कर, सिड़ी बोरा कर, अग्नि में जलाय दे। धरी को बताय दे, गढ़ी को बताय दे, हाथ को बताय दे, गाँव को बताय दे, खोए को मिलाय दे, रूठे को मनाय दे, दुष्ट को सताय दे, मित्रों को बढ़ाय दे। वाचा छोड़ कुवाचा चले, तो माता क चोंखा दूध हराम करे। हनुमान की आण, गुरून को प्रणाम। ब्रह्मा विष्णु साख भरे, उनको भी सलाम। लोना चमारी की आण, माता गौरा पारवती महादेव जी की आण। गुरू गोरखनाथ की आण, सीता रामचन्द्र की आण। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। गुरू के वचन से चले, तो मन्त्र ईश्वरो वाच।

विधि व फल–उक्त मन्त्र का अनुष्ठान शनि या रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए। एक पत्थर का तीन कोनेवाला टुकड़ा लेकर उसे एकान्त में स्थापित करे। उसके ऊपर तेल-सिन्दूर का लेप करे। पान और नारियल भेंट में चढ़ाए। नित्य सरसों के तेल का दीपक जलाए। दीपक अखण्ड रहे, तो अधिक उत्तम फल होगा। मन्त्र को नित्य २७

बार जपे। चालिस दिन तक जप करे। इस प्रकार उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। नित्य - जप के बाद छार, छबीला, कपूर, केसर और लौंग की आहुति देनी चाहिए। भोग में बाकला, वाटी रखनी होती है। जब भैरव दर्शन दें, तो डरे नहीं, भक्ति-पूर्वक प्रणाम करे और उड़द के बने पकोडे, बेसन के लड्डू तथा गुड़ मिला दूध बलि में अर्पित करे। मन्त्र में वर्णित सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

३. स्मरण-शक्ति-वर्धक शाबर-मन्त्र

ॐ नमो देवी कामाक्षा। त्रिशूल, खड्ग-हस्त, पाधा-पाती गरुड़, सर्व-लखी तू। प्रीतये समाङ्गम, तत्त्व-चिन्तामणि नरसिंह ! चल-चल, क्षीन कोटी कात्यानी, तालव प्रसाद के। ॐ ह्रीं ह्रीं क्रूं त्रिभवन चालिया--चालिया स्वाहा।

विधि व फल--उक्त मन्त्र को १४ तुलसी की पत्तियों पर १०८ बार बोलकर खा लिया करे। प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के 'रोहिणी' नक्षत्र से करे और अगले 'रोहिणी' नक्षत्र तक करता रहे। इसके बाद प्रति-दिन तुलसी की ७ पत्तियाँ लेकर एक-एक बार मन्त्र बोलते हुए एक-एक करके सातों पत्तियो को खाया करे। इससे स्मरण - शक्ति तीव्र होती है।

४. गणेश-शाबर गायत्री-मन्त्र

ॐ गुरू जी, मूल चक्र को कर लो पाक। परसो परम-ज्योति-प्रकाश। गणपत स्वामी सन्मुख रहे, सुद्धि - बुद्धि निर्मली गहे। गम को छोड़, अगम की कहे। सतगुरु शब्द - भेद पर रहे। ज्ञान - गोष्ठी की काया धर्मी, सद् - गुरु दियो लखाय। मूल महल में पिण्डक जड़िया, गगन गरजियो जाय। ॐ गणेशाय विद्महे महा - गणपतये धीमहि तन्न एक-दन्तः प्रचोदयात। इति गणेश-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटि सिद्धों में श्रीनाथ जी गुरू जी ने कहा। नौ नाथ, चौरासी सिद्धों को आदेश—आदेश ॥

५. नव-नाथ शाबर-मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू जी। ॐकारे आदि-नाथ, उदय-नाथ पार्वती। सत्त-नाथ ब्रह्मा, सन्तोष-नाथ विष्णु, अचलि अचम्भे-नाथ। गज-बेलि

भद्र-काली का शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता—श्री हरिहरशरण देव, दुर्ग (म. प्र.)

यह एक अत्यन्त गुप्त 'शाबर'-मन्त्र है, लद्दाख क्षेत्र के सिद्ध महात्माओं को कृपा से मिला है। इस मन्त्र के प्रभाव से जीवन की रक्षा और अभीष्ट कामना की पूर्ति होती है। मेरा अनुभूत है—

'ॐ सिंहो दत्तो बिकोवा घड़ित घड़घड़ात ध्यायमान भवानी दैत्यानाम देह-नाशनम तोड़यान्ति। सिरांसी रक्तां पिबन्ति। घुटत घुट-घुटात घुटेयान्ति। पिशाचा त्रिहाप त्रिहाप हसन्ति। खदत खद-खदात त्रिरोष मम भद्र-काली नो नाथ, चौरासी सिद्धन के बीच में बैठकर। काली मन्त्र स्वाहा।

४१ दिनों में श्मशान या एकान्त स्थान में रात में १२ बजे के बाद सवा लाख जप। जप करते समय वहाँ न कोई आए, न बोले। धूप-दीप-नैवेद्य से पूजा। रुद्राक्ष की माला। अन्तिम दिन अथवा तीस दिन के बाद, जब भी देवी प्रत्यक्ष हों, अर्घ्य देकर धूप - दीप से पूजा कर मद्य-मांस नैवेद्य अर्पण करे और उड़द का बना बकरा काट दे। बहुत भयङ्कर रूप से आती हैं, अतः डरे मत एवं उक्त मन्त्र से ही अपने चारों ओर घेरा बाँध ले। उसके बाद जो भी इच्छा हो, माँग ले।

(पृष्ठ ६७ का शेषांश)

गज-कन्धर नाथ, ज्ञान-पारखू सिद्ध चौरङ्गी नाथ। माया-रूपी दादा मछन्दर-नाथ, घटे पिण्डे निरन्तरे श्री शम्भु-जति गोरक्ष-नाथ। इतना नौ नाथ नाम-मन्त्र-जाप सम्पूर्ण सही। अनन्त कोटि सिद्धों में श्रीनाथ जी कही। चौरासी सिद्धों को आदेश--आदेश॥

सर्व-जन-हिताय

शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत कर्ता : पं० राजेन्द्रकुमार अवस्थी, उदयपुर (राजस्थान)

अपने सङ्कलन से कुछ 'शाबर-मन्त्र' सर्व-जन-हिताय प्रस्तुत कर रहा हूँ। भगवान् शिव की कृपा एवं 'नाथ-पन्थ' के ८४ प्रसिद्ध सन्तों की अनुकम्पा से ये मन्त्र आज भी प्रत्येक समस्या के निराकरण में समर्थ हैं। इन मन्त्रों की साधना में निम्न बातों को ध्यान में रखें—

१ रविवार, मङ्गलवार, होली - दीपावली एवं सूर्य-चन्द्र-ग्रहण के दिन सिद्धि हेतु जप करें।

२ शुद्ध स्थान पर शुद्धता से ऊन के आसन पर पूर्व, उत्तर या इष्टाभिमुख बैठें। निर्देशित संख्या अथवा निर्देश के अभाव में १, ५, ७, ९ या ११ माला जप कर घप, लोबान, गूगुल या हवन - सामग्री से १०८ बार मन्त्रोच्चार-सहित आहुति दें।

३ मन्त्र - शक्ति को बनाए रखने हेतु वर्ष में २-३ बार या मन्त्र-सिद्धि-दिवस पर मन्त्र का जप एवं हवन करते रहें।

४ रवि एवं मङ्गल को सिद्ध हुआ मन्त्र किसी भी रवि या मङ्गल को जप एवं हवन द्वारा सम्वर्धित कर सकते हैं।

५ ग्रहण के दिन सिद्ध मन्त्र का सम्वर्धन उसी पर्व-काल में उसी प्रकार करना चाहिए।

६ साधना-पद्धति, मन्त्र-प्रभाव एवं मन्त्र आदि को गुप्त रखें।

७ प्रचार, प्रदर्शन, व्यावसायिक उद्देश्य, अर्थोपार्जन आदि की भावना सर्वथा वर्जित है।

८ मन्त्र को यथा-वत् पढ़ें। (शङ्कालु एवं शोध-कर्त्ताओं को अट-पटे शब्दों की विभिन्न शक्तियों और आयामों का ज्ञान 'कल्याण मन्दिर प्रकाशन' के **'हिन्दी प्राण-तोषिणी तन्त्र'** से जान लेने चाहिए जिससे शङ्का शेष न रहे।)

९ मन्त्र-सिद्धि से पूर्व **'सर्वार्थ-साधक मन्त्र'** का जप करें। यथा—

आसन पर बैठकर **'सर्वार्थ - साधक मन्त्र'** से आसन, स्थान एवं

प्रयोग में आनेवाली सामग्री पर मन्त्र पढ़ते हुए जल छिड़कें। फिर मन्त्र पढ़ते हुए अपने चारों ओर जल की धार गिराकर शरीर, स्थान और अपने शारीरिक एवं मानसिक स्तर को पूर्ण रूप से सुरक्षित कर लें।

१० 'शाबर-मन्त्र' के शब्द, वर्ण आदि को ज्यों-का-त्यों ही पढ़ें।

१. सर्वार्थ-साधक सुरक्षा-कारी शाबर-मन्त्र

गुरु सठ, गुरु सठ, गुरु है वीर, गुरु साहब सुमरौं बड़ी भाँत। सिङ्गी टोरों बन कहौं, मन नाऊँ करतार। सकल गुरू की हर भजे, घट्टा पकर उठ जाग, चेत सम्भार श्री परमहंस।

२. समस्त उपद्रव-नाशक मन्त्र

परिवार में मत-भेद, विरोध, कलह, क्लेशादि—किसी भी कारण से उत्पन्न होनेवाले उपद्रवों के शमन हेतु, शुभ मुहूर्त में, शुद्धता से, मृग-चर्म पर पूर्वाभिमुख बैठकर १०८ बार निम्न मन्त्र जपें और आम की लकड़ी के अङ्गारों में १०८ बार मन्त्र - पाठ - सहित खीर की आहुतियाँ दें—

मन्त्र : ॐ नमो आदेश गुरू का, धरती में बैठचा, लोहे का पिण्ड राख। अगला गुरू गोरखनाथ, आवन्ता जावन्ता धावन्ता हाँक। देत धार-धार, मार-मार, शब्द साँचा, फुरौ वाचा।

३. भय, भ्रम आदि मनो-व्याधि-नाशक मन्त्र

अपने पौरुष, प्रकृति, प्रारब्ध एवं इच्छा - शक्ति से पराहत हो यातना सहने को यदि कोई विवश हो जाय, तो रोग, मनो - व्याधि, स्थान और वातावरण की शान्ति हेतु निम्न मन्त्र को पूर्वोक्त विधि से सिद्ध कर उससे अभिषिक्त जल को मन्त्र पढ़ते हुए रोगी पर छिड़कें या अभिषिक्त भभूति मलें अथवा शरीर एवं रोग-ग्रस्त स्थान पर हाथ फेरें या काले धागे पर मन्त्रोच्चार-सहित सात गाँठें लगाकर रोगी को धारण करा दें या शुद्ध अभिषिक्त भभूति एवं लौंग 'ताबीज' में पहिना दें। जैसी स्थिति हो, वैसा ही उपाय करना चाहिए।

मन्त्र : आगे दो झिलमली, पीछे दो नन्द। रक्षा सीताराम की, रखवारे हनुमन्त। हनुमान हनुमन्ता आवत, मूठ करौ चौखण्डा।

सांकर टोरो लोह की, फारो बजर किवार। अज्जर कीलें, बज्जर कीलें, ऐसे रोग हाथ से ढोलें। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विशेष निवेदन—प्रयोग-अवधि में प्रयोग-कर्त्ता ब्रह्मचर्य से रहे। चरित्रवान एवं शुद्ध शाकाहारी रहे। पर - स्त्री, स्त्री - विचार, नशे आदि से दूर रहना आवश्यक है।

४. आशु फल-प्रद सिद्ध महा-लक्ष्मी मन्त्र

'शाबर-मन्त्र-संग्रह' भाग १ के पृष्ठ ६५ पर उक्त मन्त्र प्रकाशित है। उसी का एक अन्य स्वरूप (चित्तौड़-गढ़ निवासी) पूज्य पं० चन्द्र-भूषण जी (स्वर्गीय) से मिला है। पण्डित जी ज्योतिष, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र एवं शक्ति-साधना में पारङ्गत थे। उनके द्वारा अनुभूत मन्त्र से शताधिक लोगों ने लाभ उठाया है। उनके मतानुसार पृष्ठ ६५ पर प्रकाशित मन्त्र में निम्न प्रकार सुधार कर लें—

'विनियोग' : ठीक है। **'न्यास'** : मन्त्र प्रणव-पुटित हैं, यथा—
'ॐ विष्णु-ऋषये नमः शिरसि। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः।...

'ध्यान' : ठीक है। **मन्त्र : 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिभुवन - पालिन्यै महा - लक्ष्म्यै अस्माकं दारिद्र्यं नाशय, प्रचुरं धनं देहि, क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ।'**

विधि—पश्चिमाभिमुख होकर १,२५,००० जप। हवन की पूर्ति हेतु २५,००० अतिरिक्त जप। दूध-मिश्रित मिश्री का नैवेद्य।

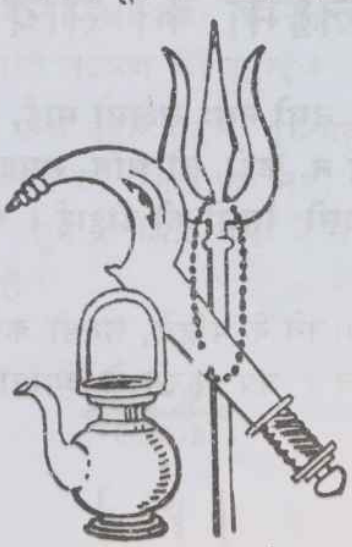

सिद्ध शाबर मन्त्र

प्रस्तुत कर्ता : पं० श्यामकान्त मिश्र, मु०/पो० ककरा, प्रयाग

बाबा नानका जी का साबर मन्त्र

ॐ सत्त नाम का सभी पसारा, धरन गगन में जो वर तारा। मन की जाय जहाँ लगि आखा, तहँ तहँ सत्त नाम की राखा। अन्न-पूरना पास बैठाली, गई थुड़ो भई खुसाली। चिनत-मनो कलप-तराये काम-धेनु को साथ लियाए, आया आप कुबेर भण्डारी। साथ लक्षमी आज्ञा-कारी। सत्-गुरु पूरन किया सवारथ। बिच आ बइठे पाँच-पदारथ। राखा बरमा विशुन महेस, काली भैरो हनू गनेस। सिध चौरासो अहै नव-नाथ, बावन वीर जती चौंसाठ। धाकन गगन पिर-थवी का बासन रहे. अम्बोल न डोले आसन राखा हुवा। आप निर-ङ्कार थुड़ो भाग गई, समुन्दरो पार अतुत भण्डार, अखुत अपार। खात खरचत कुछ होय न ऊना, देव देवाये दूना चौना। गुरु की झोली मेरे हाथ, गुरु-वचनी बन्धे पञ्च तात। वे अण्ट बे - अण्ट भण्डार, जिनकी पैज रखो करतार। मन्तर पूरना जी का सम्पूरन भया, बाबा नानक जी का। गुरु के चरन - कमल को नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

महा-लक्ष्मी का साबर मन्त्र

श्री महा-लक्षमी नमो नमः लक्षमी माई, सत्त की सवाई। आओ करो भलाई। भलाई न करो, तो सात समुद्र की रिधि-सिद्धि खै। ओ नव - नाथ, चौरासो सिधों की दोहाई। श्री महा - लक्षमी नमो नमः ॥

विधि—दूकान खोलने के पहिले, लक्ष्मी का ध्यान कर, उक्त मन्त्र का १०८ या २१ बार जप करने से व्यापार अधिक चलता है। परीक्षित है।

शाबर-त्रितय

प्रस्तुत-कर्ता : श्री महन्त हरिहरशरण देव, दुर्ग (म० प्र०)

१ श्री नारसिङ्गी देवी का साबर मन्त्र

गगन गड़गड़ानो, जीभ लफ-लफ-लफ लफानी। लोग डडर डर परानी, खम्भ फाटो चचड़ चड़-चड़ानी। निकसो रूप नाहर का, वीर नरसोङ्ग की दुहाई।

२ हनुमान जी का साबर मन्त्र

एक चिड़िया उड़ी आसमान में, हनुमान वीर दीन ललकार! तुरन्त गई मरघट के पास, मरघट से बोले मुरदे मसान। काट कर बहुत किट-किटान। मेरा बाचा काटे, तो माता अञ्जनी का पूत पवन-सुत न कहावे। तेरी माता का दुध हराम।

३ साबर हनुमान-जञ्जीरा

ओम् वीर बज्र हनुमताय नमः। चलो राम-दुताय नमः। चलो बाँध लोहे का गदा, वज्र का कछौटा, पान तेल सिन्दुर को पूजा। ओं खं खं खं खट पवन पतङ्ग, ओं चं चं चं कहसि कुबेर। भैरव कील, मशान कील। देव कील, दानव कील। दैत्य कील, ब्रह्म-राक्षस कील। छल - छिद्र मेंद कील, नाप करि तिजारो कील। देव अचल, चल कील। पृथ्वी कील, मेघ कील। मेरे ऊपर घात करे, छाती फाट के मरैं। माता अञ्जनी की दुहाई। सुर-वंशी राजा रामचन्द्र की दुहाई। जोते लक्ष्मण की दुहाई।

विधि—उक्त तीनों मन्त्र बहुत पहले गुरु-महात्माओं के मुख से सुने थे, जो आज तक कहीं भी लिख कर नहीं रखे हैं। इन्हें पहली बार लिखा गया है। ये बहुत ही सिद्ध मन्त्र हैं और अल्प समय में ही ये तीनों सिद्ध हो जाते हैं।

शाबर-तन्त्रम्

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्राप्त पाण्डुलिपि के आधार पर)

॥ श्री शिव शङ्कर उवाच ॥

आदि-नाथो ह्यनादिश्च, कालश्चैवाति - कालकः ।
करालो विकरालश्च, महा - कालश्च सप्तमः ॥१

काल - भैरव - नाथश्च, बटुकस्तदनन्तरम् ।
भूत - नाथो वीर - नाथो, श्रीकण्ठो द्वादशो मतः ॥२

एते कापालिकाः प्रोक्ताः, वीर - तुम्बी महा- फलैः ।
शिष्याणां सूर्य - संख्याश्च, तानहो वच्मि संशृणु ॥३

नागार्जुनो जड़ भरतो, हरिश्चन्द्रस्तृतीयकः ।
सत्य - नाथो भीम - नाथो, गोरक्षश्चर्पटस्तथा ॥४

अवघडश्चैव वैराग्यः, कन्था - धारी जलन्धरी ।
मार्ग - प्रवर्त्तका ह्येते, तद् - वच्च मलयार्जुनः ॥५

एतदुक्तं शाबराणां, मन्त्राणां सिद्धि - दायकः ।
महा - देवो विरूपाक्षः, शाश्वतश्च निरञ्जनः ॥६

तत्-स्थावरान् प्रवक्ष्यामि, यथा-वदवधारय–

ॐ आदेश गुरु को । महा-चीन-देश, महोग्र-तारा देवी । तहाँ बसै चोल-सर । तहाँ बैठे अक्षोभ्य नाग । त्रि - जटा शिव के माथे, तारा बसे भक्त के साथे । कालो, तारा, ब्रह्म-तारा, छिन्ना-हूं त्रीं तारा ह्रीं–आव - आव, कह-कह, घ-घ-घ हः । मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा, फट् स्वाहा ॥१

इदं प्रोक्तं मूल-मन्त्रश्चक्रवर्त्तित्व-दायकः ।

ॐ तारा-तारा, महा-तारा, ब्रह्मा-विष्णु-महेश उधारा । चौदह भुवन आपद - हारा । जहाँ भेजों, तहाँ जाहु । बुद्धि-ऋद्धि ल्याव । तीनि लोक उखाल डार-डार, न उखाले तो अक्षोभ्य को आन । सब सौ कोस चहूँ ओर, मेरा शत्रु तेरा बलि । खः फट्, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥२

मांसादि-जीव-बलि मन्त्र—ॐ पद्मे-पद्मे, महा-पद्मे, पद्मावति ! ऐं स्वाहा ।

नित्यमर्द्ध-रात्रे, चतुष्पथि, बलि-मन्त्रः—ॐ ह्रीं एक-जटे ! महा-यक्षाधिपतये ममोपनीतं बलिं गृह्ण - गृह्ण, गृह्णापय - गृह्णापय, सर्व-शान्तिं कुरु-कुरु, पर-विद्यामाकृष्याकृष्य, त्रुट-त्रुट, छिन्धि-छिन्धि, ह्रीं स्वाहा ।

पर-सैन्य-ग्रहारिष्ट-रोग-कृत्या-विनाशनं (भोजन-काले बलिः)—ॐ ह्रीं श्रीमदेक-जटे ! महा-यक्षाधिपतये इमं बलिं गृह्ण-गृह्ण, गृह्णापय-गृह्णापय, पर-विद्यामाकृष्य मयि विद्यामुपनेय छेदय-छेदय, त्रुट-त्रुट, सर्वं जगद् वशमानय ह्रीं स्वाहा ।

पर-विद्याऽऽकर्षण - बलिः (अथापरो भोजन - काले मधु-मांस-माषात्मक-बलिः—ॐ ह्रीं एक - जटे इमं बलिं गृह्ण गृह्ण, भुञ्ज भुञ्ज, मम जाड्यं दह दह, उच्छादय उच्छादय, स्तम्भय स्तम्भय, विध्वंसय विध्वंसय, सर्व-ग्रहेभ्यः शान्तिं कुरु कुरु ऐं ऐं फट् स्वाहा ।

प्रथमादि - बलि - मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीमदेक-जटे ! खः, सर्व-भूत-पिशाच - राक्षसान् ग्रस ग्रस, मम जाड्यं छेदय छेदय, श्रीं ह्रीं हूं फट् । ॐ ह्रीं श्रीमदेक-जटे ! नील-सरस्वति ! महोग्र-तारे ! देवि ! खः खः, सर्व-भूत-पिशाच-राक्षसान् ग्रस ग्रस, मम जाड्यं छेदय छेदय, ह्रीं फट् स्वाहा ।

काम्य-बलि-मन्त्रः सर्व-सर्वार्थदः—ॐ त्रीं तारिणि, तारिणि ! महा-तारा, त्रि-जग - त्रि-गुणनीवे तारा, आदि-शक्ति, आदि-करालो, मुक्त-समूह-देवता वगेरि गेनीवे मालो । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा, हूं फट् स्वाहा ।

भाषा-भोजन-बलि-मन्त्रः—ॐ भैरव, भेरव, आदि-भैरव ! शम्भु-भैरव ! भोला-नाथ भैरव की शक्ति धरे ब्रह्म के साथ, चतुर्भुज चतुर्वेद आदि-रूप । सिद्धि-सरूप सुमिरत भक्त को देत हे आय । चल चल, वल वल, दल दल । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

अन्न-बलि-मन्त्रः—ॐ ह्रां वटुक-भैरव ! बालक-केशकान मुद्रा, भगवान् वेश । सर्व-आपद को काल, भक्त-जन-हठ को पाल । कर धरे सिद्ध कपाल, दूजे कर करवाल । त्रि-शक्ति देवी को बाल, भक्त-

जन - मान सँभाल। तेंतीस कोटि मन्त्र को जाल। प्रत्यक्ष वटुक-भैरव, जानिए मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

शत्रु-बलि-मन्त्रः--ॐकार भैरव कलि-मानी। लोहे की घन की सार कवानी। आठ कोश की करे पयानी। वेगि वेगि न मारे, तो गौरा पार्वती की आन। दुहाई नोना योगिनी की आन। दुहाई वाचा अजयपाल की। वाचा छोड़ि कुवाचा करे, तो कुम्भी नरक पड़े। दुहाई तेंतीस कोटि देवता की। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

वटुक-दर्शन-मन्त्रः-ॐ नमो आदेश गुरू को। भैरव भैरव, आदि-भैरव ! तेरी कपाली जटा मोरे मसान देव ले। त्रि-काल जटा तोरे काली जो भुजे हिए देखो। भैरव ! तेरी कोए जुगादि - भैरव ! मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। इति गोरक्ष-सिद्धः।

ॐ आदेश भैरव को। गण्डाशा भैरव-हाड का गडुआ बोले शत्रु सों। वेटे खरुवा चले, तो चले, नातरि तुरन्त मरे। मेरी भक्ति, गुरू - नाथ की शक्ति। गण्डाण भैरव ! तेरी शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

ॐ श्रीं लक्ष्मी-नृसिंह वीर, बजरङ्गी लोह को जंजीर। है सवा भार लोह की कोठरी में। आगे देखो, अगिआ बैताल। पाछे देखो, क्षेत्रपाल चौकी भैरो-नाथ की। साकिनी डाकिनी करै, भूति-प्रेति निकरै। जो-जो करै, सो-सो मरै। उलटी वेदवा ही पर परै। दोहाई कालिका माई की, दोहाई काल-भैरो की। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति रक्षा।

तितिरी के तेहारे, योगिनी पठाई। जहाँ-तहाँ जाई, भूत-सङ्घ करीली आई। आस बाँधो, पास बाँधो। तुम्बा ताई काचे घट में दोष बाँधो। चौशवी योगिनी की दोहाई, अलप गुरू गुरू-मान पय गँवर की दोहाई बाँधो।

योगिनी-मन्त्रः—ॐ आदेश गुरू को। यां काँवरू देश, कमक्षा राणी। तहाँ बैठे वज्र-योगिनी, शत्रु-रक्त की प्यासी। भक्त सो करै सदा हाँसी, जाप की दासी, तेंतीस कोटि देवता की मांसी। पात-साह की मा मारी, सर्व-सिद्धी की क्यारी। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा, यां स्वाहा।

क्षेत्रपाल-मन्त्रः—ॐ आदेश गुरू को । क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल । हाथ लिए नर - कपाल । दूजे हाथ सिद्ध कराल । नाचे कूदे खाजपाल, सेवक सो खेलै जैसो बाल । ब्रह्मा को पुत्र, दुष्ट का शत्रु । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा । वाचा छोड़ि कुवाचा करे तो कुम्भी नरक पड़े । उमासूकि सूकि सड़े फट स्वाहा ।

गणेश-मन्त्रः—आदेश गुरू को । गां गणेश गीं गूं गैं गौं गः । सिद्ध महेश राजा मोहूँ । प्रजा मोहूँ । सब देस मोहूँ । चारि खूँट पृथ्वी मोहूँ । पातसाह मोहूँ । इन्द्र - देव की राणी मोहूँ । आकास - पाताल जालो भक्त को जुग - जुग पालो । सेवक को विघ्न निवालो । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा । ग्लौं स्वाहा ।

अथ क्रमाच्चतुर्णां विधिर्यथा :

अथ बटुक - विधिः

ऋष्यादिकं नास्ति । ध्यानम्—

वटुकं वटु-वेशं च, व्याल-यज्ञोपवीतिनम् ।
कपाल-शूले दधतं, सारमेय-कुलैर्युतम् ॥१
नव-वर्ण-सारमेयैः, संस्थितं पद्म-विष्टरे ।
शवारूढं त्रि-भुवने, महा-साम्राज्य-दायकम् ॥२

अयुतं प्रजपेद् विद्वान्, हविष्यासी जितेन्द्रियः, दशांशं पायसं हुत्वा, तद्-दशांशेन तर्पयेत् ॥ अभिषेको, ब्राह्मणानां भोजनं, तद्-दशांशतः । श्मशाने वा शवे मुण्डे, जपात् सिद्ध्यति भैरवः ॥ यत्रैव ज्ञाप्यते देवि ! तत्रैव लगति ध्रुवम् । तिष्ठत्यहर्निशं सार्द्धं कार्य - मात्रं करोति च ॥ महाऽऽपदि महा - घोरे, स्मरणादेव नाशयेत् । शत्रून् जयति सग्रामे, महा-देव-समानपि ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां, भामे शुक्रे निशा - मुखे । सर्वदा तु बलिं दद्यात्, भोजनादौ विशेषतः ॥ सदा गुग्गुल - धूपस्थो, रक्त-चन्दन-भूषितः । रक्त-माल्याम्बर-धरो, रक्त-वस्त्र - विभूषितः ॥ आवृत्ति-पूजा-ध्यानानि, निगमोक्तेन कारयेत् । सर्वं निगम- वत् प्रोक्तं, प्रत्यक्षं सिद्धिदो मनुः ॥

अथ योगिनी-विधिः

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं, मांस-भक्षी प्रसन्न-धी । मांसेन होमयेद् देवि ! तद्-दशांशेन तर्पयेत् ॥ सदा मांसान्नैवेद्यं, देवेषु परि कल्पयेत् । सदा

धूपं प्रदद्याद्धि. बलि-दानं च रक्ततः ।। शत्रु-संहरणे दक्षा, योगिनी सु-प्रसीदति । योगिनी मुण्ड-मालाढ्या, लसद्-रुधिर-सञ्चिता ।। आन्त्रका च नूपुराढ्यैः, रक्त-वस्त्रै सुशोभनम् । डमरुं हस्त-पद्मेन, विभ्रती सस्मिता-नना । इति ध्यानं समासाद्य, सर्व-निगम-वच्चरेत् ।।

मन्त्र उच्चाटन—राई हेतुं चट-चटाई गरे, मशाने तू फिरि आई । जरिहैं, जरि बार होंइ छाई । अमुकाऽमुक से होइ लराई ।।

विधि—इस मन्त्र से राई की आहुति दे, तो उच्चाटन और कलह हो ।

जुआ जीतने का मन्त्र—ॐ ह्रीं अहं नमः ।

विधि—यह मन्त्र सात वार पढ़कर जुआ खेले, तो जुए में जय मिलती है ।

खाङ्ग (खँगवा) झारने का मन्त्र—

अर्जुनो फाल्गुणो जिष्नुः, किरीटो श्वेत-वाहनः ।
विभत्सु विजयः कृष्णः, सव्य-साची धनञ्जयः ।।

विधि—अर्जुन के उपर्युक्त १० नाम लिखकर पशु के गले में बाँधने से खँगवा रोग अच्छा होता है ।

अथ क्षेत्रपाल-विधिः

जपेद् विंशति-साहस्रं, सहस्रैकेण संयुतम् । मांसं मत्स्यं प्रधानेन, नैवेद्यम् प्रकल्पयेत् ।। तर्पणाद्यं पूर्व-वत् स्यात्, पूजनं निगमोक्त-वत् । मास - द्वयेन सिद्धः स्याच्, क्षेत्र - पालो महा - विभुः ।। यद् - यत् कृत्यं च संसारे, भूत-प्रेत - समाकुलम् । तत्-सर्वं नाशयेद् देवि ! क्षण-मात्रेण साधकः ।। महा-भीतो महोत्पाते, प्राप्ते प्राणस्य सङ्कटे । स्मरणान्नाशयेत् देवः, क्षेत्रपालो वर-प्रदः ।। उल्का - पातान् प्रस्तरान् हि, नाना - दुःखादिकं भयम् । संसिद्धः क्षेत्रपालो हि, कुरुते नात्र संशयः ।। क्षेत्रेशं नील - पद्माभं, ऊर्ध्व - केशं दिगम्बरम् । शूलं कपालं डमरुं, कर-काञ्चीं च विभ्रतम् ।।

अथ गणेश-विधिः

चतुर्विंशत्-सहस्रं च, प्रजपेत् गण-नायकः । पञ्च - खाद्येन जुहुयात्, तद्-दशांशेन तर्पयेत् ।। मार्जनं तद्-दशांशेन, तद्-दशांशेन वै द्विजान् ।

भोजयेत् यत्नतो विद्वान्, तदा सिद्धयति नान्यथा ।। प्रत्यहं प्रजपेत् देवि ! सहस्रं च सु-सम्मितम् । ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि, येन सिद्धो भवेन्मनुः ।। गणेशं घन-नीलाभं, पाशं-शृणि-कपालके । त्रिशूलं विभ्रतं सौम्यं, नानालङ्कार - भूषितम ।। चतुर्थ्यां प्रजपेन्नित्यं, प्रजपेद् गज-दन्ततः । सर्वापत्ति-विनाशं च, प्रसन्नश्च करिष्यति ।। यत्रैव स्मर्यते देवि ! तत्रैवायान्ति निश्चितम् । पिशाच वीर चोच्छिष्ट, गण-वत् सर्व-माचरेत् ।। त्रैलोक्यं मोहयेत् तुष्टस्त्रैलोक्य-गण-नायकः । गन्धर्व-वेषो भूत्वा च, सदा धूप - प्रमोदितः । श्मशाने प्रजपेद् देवि ! सर्वेषामस्य मालिका ।।

अथ काली मन्त्र—(१) ॐ कालो कालो महा-कालो । मेद - मांसे करे देवालो । ब्रह्मा को पुत्री, इन्द्र की सालो । घोड़े की पीठ, बजावे तालो । चाम की कोथली, हाड़ की जप-मालो । पताल की सर्पिणो, उडु-मण्डल की बिजुली । जहाँ पठाऊँ, तहाँ जाईह । रिद्धि - सिद्धि ल्याहूँ । दश कोश बाँएँ, दश कोश दाहिने, दश कोश आगे, दश कोश पाछे, मेरा वैरी, तेरा भक्ष्य । मैं दिया, तरूसि ले—चूसि ले । क्रीं कालो महा-कालो, फुरो मन्त्र अन्नठ चाण्डालो । न फुरे, तो ब्रह्म-विष्णु - महेश वाचा पावु पखा ले । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ।

(२) ॐ आदि-कालो, युगादि - कालो । ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की सालो । साहस की कालो, माथे ही जटा बावरी वालो । चलाई चलै न बोलाई आवे । त्या कारण गुरू गोरख भावै । मोहन मुद्रा वशो करूँ, मोहूँ सगरो गाँउ, मोहूँ सगरो जाति । बाँवें हाथ खड्ग, दाहिने हाथ खपरिया । नगर में पैठत बोरो सब मन्त्रो । मांस की डली, गुग्गुल की वास । जब सुमिरो, तब कालिका खड़ी मेरे पास । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ।।

(३) ॐ हंकालो, झंकालो पुलकित स्त्री-पुरुष-राजा-कर्षिणि ! मम वश कर तु वर स्वाहा । ॐ कंकालो कालो, नव-नाड़ो बहत्तर-जालो । माहो शत्रु, ताहो भक्ष्य । गृह्ल - गृह्ल फट् स्वाहा । ॐ कालिका देवी काल-रूपिणो, महा - काल - दमनो । अमुकोच्चाटनार्थं अदृष्टं मार्णयां महा-भयङ्करी, ममाभय हरं हरि स्वाहा ।

अथ वगला - मन्त्रः—मलया वगला भगवती, महा - क्रूरी महा-कराली। राज-मुख-बन्धनं, ग्राम-मुख-बन्धनं, काल-मुख बन्धनं। चोर-मुख-बन्धनं, व्याघ्र-मुख-बन्धन। सर्व-दुष्ट-ग्रह-बन्धनं, सर्व-जन-बन्धनं। वशी कुरु हुं फट् स्वाहा।

अथ भैरवी भाषा-मन्त्र—ॐ रों भैरवी, भूत-प्रेत की माई। सब ऋद्धि की साई। नगर मोहूँ, नगर-नायक मोहूँ। देव मोहूँ दैत्य मोहूं। धरीत्री मोहूँ। पाताल फोड़ों आकास तोड़ों। श्री भैरवी की शक्ति, मेरी भक्ति ' फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

अथ त्रिपुर - सुन्दरी मन्त्र—ॐ आदेश गुरू को। कावँरू देश, कमक्षा देवी। तहाँ बसे त्रिपुरा राणी। क-ए ई-ल-ह्रीं वेद - पुराण की कहाणी। ह-स-क-ल-ह्रीं तीनि लोक तू करं पधानी। स-क-ल-ह्रीं सब देव क्लीं - क्लीं जाणी। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।।

अथ हेलकी—ऐं ॐ अमाये। हेलकी लंघें तुं वे, हविणा गोण गत फेर। षमि जड़ - मति हं, णणल मोह विह लंघ। लं मन्नियोगं वा हलयो वाचुच्चां बराबपिता ये नुद् गुरुं। द्रुतालयेऽम्भे हेलक्किये स्वाहा।।

अथ मातङ्गी मन्त्र—ॐ आदेश गुरू को। काउँरू देश, कामाक्षा देवी। तहाँ बसै इसमाइल योगी। इसमाइल योगी दिए चारि पान। पहिले पान रति, दूसरे पान विरह अवगुति, तिसरे पान आलस मोर, चौथे पान दोउ कर जोर महेसरी। वर महेर पान, चण्डा केरी पुरोहनि। जा देउए चारो पान। न उठते कूल, न बैठते बल। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।।

अथ उच्छिष्टा - मन्त्रः—ॐ आदेश गुरू को। काँउरू देश का कामाक्षा देवा, तहाँ बैठे इस्माइल योगी। इस्माइल दियो दियो चारि पान। एक पान जो मेरा चबाती, दूजे पान शिरमो ज्योती। तीजे पान आलस मोर, चौथे पान दोऊ कर जोर। चारि पान जो मेरा खाए, मेरे पास ते कहुँ न जाए, न बैठे। सुखन गडे, सुख फिरि-फिरि देखे। मेरो मुख काँउरू कामाक्षा देवी। आज्ञा फुरे, इन वचन की सिद्धि फुरे। ॐ घटा-घटा-घटा, घटा-घटा स्वाहा।

ॐ दक्षिण देश को वीर हनुमन्त चाल्या। एक जटा आकाश, एक जटा पाताल। वामे हाथ गदा, दाहिने हाथ छरी। गर्जना चले, घोरन्ता चले नदी-नाला सोखन्ता चले। लोहडा नरसिंह आदि-भैरव, अनादि-भैरव, काला भैरव, कपिला भैरव भूरा भैरव, सेत-मसानवा लक्ष लेके वीर चले, चौषष्टि जोगिनो चले, चौरासी लक्ष क्षेत्र - पाल चले। जल थे तुलसी चाले, महा-देव नो कृत्यका चले, तुरत न चले, तो सती सीता नो सेज पग दे। रामचन्द्र की पूजा पाइ करि ठेले। जो तुरत न चले, तो मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

दन्त - पीड़ा-निवारक मन्त्र—(१) अग्नि बाँधौ, अग्नोश्वर बाँधौ, खाल-विकराल बाँधौ, लोहा-लोहार बाँधौ, वज्र कै निहाई, वज्र-घन-दाँत पीराय, तौ महा-देव कै आन।

(२) ॐ सुमेर पर्वत, नोना चमारी। सोने कै रापी, सोने कै सुतारी। हुक वुक, वाह बिलारी। धर - धर, पोसि, काटि - कूटि, समुद्र-पार बहावै। नोना चमारो की दोहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

(३) ॐ राई-राई, तू मेरी माँई। धरतो नो धूलि मसानी छाई। सान खवाई, सो हनवन्त की दुहाई। मारा गुरू जपत जलत बाई, हालि मन्त्र गुरु खवाई। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

(४) ॐ अजमेरी दृढ़ अजयपाल राजा, अजा देवराणी। अजा देवराणीना सात पुत्र। कौन-कौन पुत्र ? हडंजय १, रणेरा २, तनेरा ३, डठेरा ४, एकन्तरा ५, दुतीया ६, तृतोया - चौथिया ७। जजारे सात वाणीना तर, ए पिण्ड छोड़ि वीजे पिण्ड जाइने, पडि उभौ रहै, तौ अजैपालनी सात आन। जो उभो रहै, तो जती सतीनो आन। जौ उभो रहे, मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

विधि—उपर्युक्त मन्त्रों में से पहला मन्त्र सात बार पढ़कर झाड़े, तो दाँतों की पीड़ा दूर हो जाएगी। यदि मसूढ़े फूले हों, तो तर्जनी अँगुली से झाड़े। इसी प्रकार अन्य मन्त्रों के प्रयोग से उसमें उल्लिखित व्याधियाँ अच्छी हो जाती हैं।

प्रेत झारने एवं प्रत्यक्ष करने का मन्त्र--ॐ रिं रिक्तिया भैरो दर्शय स्वाहा। ॐ कं कं काल प्रकटय - प्रकटय स्वाहा। रिं रिक्तिया भैरउ रक्त-जटा दर्शे वर्षे रक्त-घटा आदि-शक्ति सब मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-सिद्धि-परायण रह-रह, रुद्र रह-रह, विष्णु रह-रह, ब्रह्म रह-रह, बेताल रह-रह, कङ्काल रह-रह, रं रण-रण रिक्तिया सब भक्षण हुं। फुरो मन्त्र, महेश वाचा की आज्ञा फट्। कङ्काल माई की आज्ञा। ॐ हुं चौहरिया वीर माहो, शत्रु ताहो भक्ष्य, मेदि आ तू चूरि-फारि, तो क्रोधाश भैरव फारि - तोरि डारे। फुरो मन्त्र, कङ्काल-चण्डी का आज्ञा। रिं रिक्तिया संहार-कर्म-कर्त्ता महा-संहार-पुत्र ! अमुकं गुल्ल-गुल्ल, भक्ष-भक्ष हुं। मोहिनी - मोहिनी बोलसि, माई मोहिनी। मेरे चउआन के डारउ माई। मोहूँ सगरो गाँउ। राजा मोहु, प्रजा मोहु, मोहु मन्दं गहिग। मोहिनि जाहि, माथ नवइ। पाहि सिद्ध गुरु के वन्द पाइ, जस दे कालिका माई।

वैरी खसावे के मन्त्र—त्रिपुरा-सुन्दरि, जपो तोहि। तुं जग-मोहनी नाउ। पूत परारे वश करै, वैरी रकत लहाउ। जल थम्भो, थल थम्भो, थम्भो आपनि काया। पाण्ड पृथिवी थाँभो त्रिपुर - माया। जिन्ह मेरी पुरा त्रिपुरा - सुन्दरि की सरण। यौ वैरी घहराइ परै वेगि दे।

नजर-टोना झारने का मन्त्र—(१) सोम-शनै-भोम अगारी, कहाँ चलो ले दे अन्धा रो। चारि जटा, वज्र कँवार। टोनहिं बाँधो, सोम दुआर। उत्तर बाँधो काइलदाम, दछिन बाँधौ छेत्रपाल। चारि विद्या बाँधि के देउ, विशेष भवर-भवर हिषर। भवर गुण चलु, गन्धर्व चलु, छत्तीस कोटि दानउ चलु, उत्तरा - पन्थ जोगिनी चलु, पताले राजा वासुकी चलु। रामचन्द्र के पाइक, अञ्जनी के चोर लागै। ईश्वर महा-देव गौरा पारवती कै दोहाई। यौ टोना रहै एहि पिण्ड।

विधि– उक्त मन्त्र पढ़कर कोयले की राख से फूँके। टोने - टोटके का प्रभाव न रहेगा।

(२) ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं, ज्रां ज्रीं जूं, जल-केलि बडवानल - भैरवाय सकल-शत्रु-संहारकाय, ब्रह्मास्त्र-पाशुपतास्त्र-प्रदर्शनाय, घोरास्त्रादि-तेजो-हरणाय, भक्त-कार्य-कराय, भू - भूकाराय भों हुं फट्, ठठ जारय-जारय, तारय-तारय, खं फ्रै स्वाहा।

(३) ॐ आदेश गुरू को। आगि सो आगि खेलै, संहर सोखे लै पाणी। साठि कोश पर आगे या वैताल खेलै, ज्यों काश्मीर की राणी। क्वारी कन्या को चोट करि, तिया मन को बस करि। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ॥

(४) ॐ अलं दषलयुं मलरां ऽमिं ऽसुं घीषलयुं वटुकाय। वटुकाय यं कालकोडे कुण्ड वोडिवा स्वाहा ॥

(५) ॐ आ बीर वैनाल! पैठि पताल खेलन्त चालि। वायु वं बूल फेरि, लंगूर चीन चाहु, हाँकि बकि देउ। याको चीर जार, पुरुष की पाग जालि। पातसाह को तखत जालि, राजा को सिंहासन जालि। पालकी बैठी राणी जालि, उमराठ के हवेली जालि। पर्वत-पहार जारि के भस्म करि। न जारे, तो हनुमन्तवी की आन। हनुमन्त वीर मे मन्त मारि करै भस्म। भूक माया मारे धीरे, गाय बाछी खाय। ब्रह्म को आले, सुरा पिए जहाँ। भेजो तहाँ जाइ। शिव वाचा, ब्रह्म वाचा, रुद्र वाचा। चूके उभासू के सीस काल फारि मरे। वाचा छोड़ि कुवाचा करे, तो लोना चमारी को छोरि परे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। देखो हनुमन्त वीर, तेरी मन्त्र की शक्ति ॐ ॥

टोना झारने का मन्त्र—लोना सलोना योगिनी व अरावि द्विबाधा टोना। आवहु सखि, मिलि जाइ कवनुहि अ फुल-फुलवाइ, ये उचे कै आवै बास। तेऊ तेऊ फलानी फलानी आवै तेरे पास। कामरू देवी की शक्ति, मेरी भक्ति, मोहिनी ईश्वरोवाच ॥

रक्षार्थ मन्त्र—ॐ नमो भगवते, सकल-भयोच्चाटन-भैरवाय, भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्म-राक्षसादि-सकल-भयोच्चाटनाय, स्व-मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-रक्षणाय, अष्ट-भैरवाय, शाकिनी-डाकिनी-छिन्दाय, सर्व भयप-छेदाय, सकल-अनावृष्टि-छिन्दाय, सर्व-दानव - राक्षस - छिन्दाय, हं हं हं पर-मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-छिन्दाय हुं, नव-नाथ-सिद्ध-भैरवाय हुं फट् स्वाहा ॥

मोहन मन्त्र—(१) ॐ आदेस गुरू को। सम्मोहु भैरव, मोहिनी वेश। हाथ पाश-सिद्ध, सिद्ध को आदेस। राजा मोहु, प्रजा मोहु, मोहु ब्राह्मण वाणिए। चारि खूंट पृथी मोहु। समोप सम्मोह-भैरव जानिए। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ॥

(२) ॐ भैरवो देवो-देवो । नगर मोहूँ, राजा मोहूँ, नगर-नायक मोहूँ । श्रीभैरव की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ।।

(३) अरे, काम-पर्वत-शिखरे-वास ! कामिनी - लम्पट, कामिनी-चोर ! जनि जाहि कामिनी के पास । महा-देव की आज्ञा ।।

(४) चलु-चलु कामा, चलु वासुकी की आज्ञा । शीघ्र चलु । जो चोर नार-गल चाँपि आँधरो करु ।।

(५) ॐ नमो पवन के पूत ! वज्राङ्गी, वज्र की गोली, श्रीराम की दोहाई । श्रीराम की आज्ञा असत्य जाय ।।

(६) ॐ स्त्रीं सीता को चोरी करी । कंसाहु परिहारै, कोटि दोइ वज्र-हात धरी । वज्र चालु लकरी, हनुमन्त वीर की शक्ति फूरे ।।

(७) अरे जल-जलि, पाथाइ लोकाई । भत-प्रेत बाँधि लो । नाही भूत बाँधि, प्रेत बाँधो, डाईनी बाँधो, योगिनी बाँधो, दोचरा बाँधो, चनरा बाँधो । घर पैस घरे, देवता बाँधो । पकर मारि ग्राम - देवता बाँधो । बाँध रे बाबा ! जल - जलिया जल परे, परे च्यारि - दास मढिया । हर आज्ञा, श्री रामेर आज्ञा । बाँध रे बाप, मोर हनुमान, बेगि बाँध-बाँध-बाँध ।।

(८) ॐ तैल थम्भो, ताई थम्भो । अग्नि - पूत वैश्वानर थम्भो । पार्वती का वार थम्भो । महा-देवेर खर्पर थम्भो । थम्भो मोरी सिद्धि । गुरू कै पावु शरण । काँउरू तोरी विद्या, नोना चमाइनि, पावु शरण । काँउरू तोरी विद्या, नोना चमाइनि, तोरे पावु शरण । हात में फोरा, न आवै, सो मन्त्र । तेल थम्भो, तेल ताइ वैसन्दर थम्भो । जरहि ते कटाभार तेल बाँधो, न उड़ै, जो पाकै, सो बैठे ।।

(९) कालो नागिनि किलि । तिन पाक, थिन उपकन्थि । सर्व-रूपाग्नि होयाग्नि । मेरो सिद्धि, गुरू का पाउ जान ।।

(१०) ॐ नमः श्वेत देवी । आथमजा आश्रगष्टा सुसिद्धा भजाहि । राजा मोहुँ, प्रजा मोहुँ, सभ नगरी को जीव जन्तु मोहुँ । चौबारे बैठा राणी मोहुं । हात लेइ दण्ड, ई निगड करो पलँग । श्रीसूर्य-देव ! तुम शरण, तुह्म तरण । तर-बतर पल बियाई । जरी फुरू-फुरू श्वेत-देवो ईश्वरोवाचा ।। आकाश बाँधौ, पाताल बाँधौ । ज्या खांडे को धार बाँधौ । देखो, शक्ति कामाभा देवो । वार कण्ठ, हिन - हिन हि ॐ खण्ड - खण्ड धारिणि स्वाहा ।

(११) ॐ श्लीं गभस्ति-भैरवाय, सकल-शत्रु-संहारकाय, वरदाय, अशेष-शक्ति-दायिने, शृङ्खला-चूर्णि-करणाय, भक्तानन्ददाय नव कोटि-सिद्धि-भैरवाय, प्रज्वलितार्च्चि-स्वरूप हुं मम शुभं कुरु स्वाहा ।।

(१२) अगिनि जरसि, पर जरसि । किह हासि सागपसर के थाँभौ । पानी पन्थ भै, जासि काउरू कामता के विद्या । नोना जोगिनि कै दुहाई ।।

(१३) ॐ ह्रीं पुछ-जिनानं, ॐ अहि जिनानं । पर-मोहे जिनानं । अनन्तोहि जिनानं । सा नूं केवलानं भवत्थ केवलीनं भवत्थ, केवलोनं अभवत्थ । केवलोनं नभो स्वाहा ।।

(१४) आरे भेलाई, उच्छिष्ट - चाण्डाली । खनि मारे कपारी । ऊचा अनलं करसि, राणी के सजाव वठसि । फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ।।

(१५) अस्म-सार विजौ-सार, सार-धार बन्धौ सात बार । नागी ऐ तीन पहरे चौर-रक्ष्या करे रे । श्रीगोरखराउ अनवन मन्तुर रणी धा रहा । हनुमन्त सूलं - पानि राजा विक्रमादित्य की रक्षा । मोरी सिद्धि, गुरू का पाउ जानि ।।

(१६) ॐ नमो कावरू देश, कामाक्षा वाणी । तहाँ बैठे इस्माइल योगी । इसमाइल योगी की भुरकी मति । अति बली मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, गोरक्ष की वाचा ।।

(१७) ॐ नमो रुद्र, पाक - रुद्र । सकुतथी दुर होइ जाय । मेरी भक्ति, गुरू को शक्ति । फुरो मन्त्र, रुद्र वाचा ।।

(१८) ॐ नमो कैलास पर्वत, गौरा दे माई । जे मन माहे चाहुँ, ते आवै धाई । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, गौरा देवी की वाचा ।।

(१९) कावरू देश, कामाख्या चण्डी । तहाँ बसे भरम, दोउ भाई । देखत पुरुष भरमन्थाई, राजा गोरख की यह दुहाई । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, गोरख की खरी यह दुहाई ।।

(२०) कावरू देस, कामक्षा बारी । तेकर फूल बीने नोना चमारो । जो बास फुलहि, आवै बास, तस हिस अमुका आवै पास । गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ।।

(२१) ॐ दीठि झारों, मूठी झारो। खीलो धरती, खीलो आकास। खीलो मीर, बदरी की दास। खीलो घाट-वाट, जी आए। खीलो मातु-पिता, जी आए। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ॥

(२२) ॐ नमो फूली फूल की बारी। बीनो चौसष्ठि नारी, दाखरी पारी। नारसिंह शक्ति तुम्हारी। जे फूल सूंघे, दास हमारी ॥

(२३) कामरू देस ते आइल चण्डी। ते दीन्ह बेल कै खण्डी। बेल कै खण्डी, मुह लावौ तु बँधो। नारसिंह दुवारे पै सौ, शत्र करौ बिलार। मोहि सिद्ध गुरू कै पाउ ॥

(२४) जग-मोहिनी, जग - मोहिनी। जग - मोहिनी, तेइ मोहिनी बडे भाव तै ले। मोहो सीगरो गाँवु। चन्द्र मोहि लो, सूर्य मोहि लो। हाट मोहि लेउ। पवन मोहि लेउ। पाणी मोहि लेउ। एक वचन गावो, श्रीमहा-देव की आज्ञा ॥

(२५) मोहिनि-मोहिनि कही। मोहिनि तीनिप नाउ। पहिलेह मोहो राजा, प्रजा पाछे मोंहु। सगरो गाँउ मोंहु। मोरी सिद्ध-गुरू कै पाउ जान ॥

॥इति श्रीगोरक्ष-सिद्धि-हरणे दत्तात्रेय-सिद्धि-सोपाने शाबर-तन्त्रम् ॥

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व - विद्यालय से प्राप्त पाण्डुलिपि सं० ५८१६६ (अपूर्ण) के आधार पर।

श्री काली-शाबर

[सम्पूर्णानन्द संस्कृत-विश्व-विद्यालय से प्राप्त पाण्डुलिपि]

प्रथम 'परिभाषा' पटल

शृणु पार्वति ! वक्ष्यामि, सिद्ध शाबर-साधनम् ।
षट्-पञ्चाशन् महा-देशाः, कादि-हादि-क्रमाद् द्विधाः ॥१
षट्-त्रिंशज्जाति-भेदैश्च, प्रत्येकं भेद - भाजितैः ।
अनन्त-संख्यं देवेशि ! तत्रापि द्विविधं शिवे ! ॥२
नाथोक्तं शङ्कर-प्रोक्तं, नाथोक्तं देश-भेदतः ।
शिवोक्तं रूप - भेदेन, तत्र नाथाभिधे शिवे ! ॥३
चतुराशीति - सिद्धोक्तं, नाथोक्तं द्विविधं मतम् ।
तन्नामानि प्रवक्ष्यामि, शृणु सावहिता भव ॥४
'शाबरं' प्रथमं देवि ! द्वितीयं 'सिद्ध - शाबरम्' ।
'कुमारी - शाबरं' देवि ! 'विजया-शाबरं' तथा ॥५
'कालिका - शाबरं' चैव, षष्ठं च 'काल-शाबरम्' ।
'दिव्य - शाबर' - नामानमष्टमं 'वीर - शाबरम्' ॥६
'श्रीनाथ-शाबरं' देवि ! 'योगिनी-शाबरं' तथा ।
'तारिणी - शाबरं' देवि ! द्वादशं 'शम्भु-शाबरम्' ॥७
सूर्य - संख्या - शाबरे तु, साधना सम-रूपिणी ।
'अघोर - शाबरं' देवि ! भिन्नमेव त्रयोदशम् ॥८
अघोरेऽपि समा देवि ! तानहो वच्मि संशृणु ।
'विडघोरो' भवेद् वज्रो, चामरी मूत्र - योगतः ॥९
पशु - योगे तु परमी, द्वितीया सुरभी मता ।
वटुके श्रीकरी ज्ञेया, महा - काले शिवन्धरी ॥१०

शुक्रे तु सुन्दरा रम्भा, रक्ते कैवल्य - वेतना ।
रक्ताघोरस्तु प्रथमः, शुक्राघोरो द्वितीयकः ॥११
विरा-मूत्राघोरकौ देवि ! प्रत्येकं द्वि-विधौ शिवे !
पशो स्वस्य परस्याथ, प्रत्येकं त्रिविधा क्रमात् ॥१२
वटु - वीरे कुक्कुरस्य, शिवायोः काल - गोचरः ।
गो - जन्यस्तारिणी - मन्त्रे, काल्यां तु शुक्र-रक्तजः ॥१३
भक्ष्याघोरः पञ्चम स्याद्, वान्त्यघोरस्तदन्ततः ।
चीनाघोरस्तथा नीलाघोरोऽपि परमेश्वरि ! ॥१४
नवमः सर्व - भक्ष्याख्यो, घोराघोरो हि दुर्लभः ।
सिद्धाघोरस्तथा प्रोक्तः, सर्व - घोरस्तदन्ततः ॥१५
तथैव गारुडं देवि ! दशधा परि - कीर्तितम् ।
श्रीवेद - गरुडं देवि ! गारुडं वीर - गारुडम् ॥१६
श्रीकृष्ण - गारुडं देवि ! तदन्ते मन्त्र - गारुडम् ।
यन्त्र - गारुडकं देवि ! तदन्ते सिद्ध - गारुडम् ॥१७
श्रीनाथ - गारुडं देवि ! चाघोर - गारुडं तथा ।
दशमं शाबरं नाम, गारुडं दशधा मतम् ॥१८
दशधा गारुडे देवि ! साधना शाबरोद् - गता ।
पूर्वाम्नाये वीर - शैवाः, तदन्ते वीर - वैष्णवाः ॥१९
पिशाचोच्छिष्ट - गणपाः, पश्चिमे परिकीर्तिता ।
उत्तरे घोर - भेदाश्च, ऊर्ध्वे शाबर - जातयः ॥२०
पाताले च पाशुपतास्तथा कापालिकाः शिवे !
शाबरागम - नामाख्यो महाऽऽम्नायः प्रकीर्त्तितः ॥२१
इति संक्षेपतः प्रोक्तं, शृणुष्व काल - शाबरम् ।
सुरया होमयेद् देवि ! सर्व - शाबर - सिद्धये ॥२२

कुमारी - शाबरे देवि ! काञ्जिक्या होममाचरेत् ।
कालिका - शाबरे देवि ! डाकिन्या होममाचरेत् ॥२३
तारिणी-शाबरे देवि ! स्फाटिक्या होममाचरेत् ।
योगिनी - शाबरे देवि ! विजया - वीजमीरितम् ॥२४
श्रीनाथ - शाबर देवि ! विजया - पत्रमेव च ।
विजया - वीज - होमेन, सर्व - शाबर - साधनम् ॥२५
विजया - पुष्प - होमेन, चातुर्वर्ण्य - क्रमेण च ।
होमयेत् परमेशानि ! पुरुषार्थ - चतुष्टये ॥२६
विजया - शाबरे देवि ! मांषेन सर्व - साधनम् ।
वीर - शाबर - तन्त्रेण, गुग्गुलं प्रथमं हुनेत् ॥२७
लोह - वाण - सुराद्यैश्च, शम्भु-शाबर - साधनम् ।
कादम्बर्या महेशानि ! दिव्य - शाबर - साधनम् ॥२८
जटामांस्या हुनेद् देवि ! काल - शाबर - साधने ।
हुनेद् रोचनया देवि ! सिद्ध - शाबर - साधने ॥२९
अघोर - शाबरे देवि ! दाडिमी - पुष्प - पूजनम् ।
तुम्बी - फलं सदा भक्ष्यं, सर्वदा मद्य - भक्षकः ॥३०
अघोरे शाबरस्यैषा, साधना परिकीर्त्तिता ।
धानको - पुष्प - होमेन, सर्व - शाबर - साधनम् ॥३१
कुचन्दनं चन्दनं च, कर्वीर - कुसमानि च ।
बिल्व - पुष्पाणि देवेशि ! आरक्तानि विशेषतः ॥३२
धूपो गुग्गुल - सम्भूतः, सुरा-धाता - हुतावचि ।
नैवेद्यो मांस - सम्भूतः, सम्विद् - वीजानि चर्वणम् ॥३३
धातकी बिल्व - पुष्पेषु, सर्व - पुष्पोत्तमोत्तमे ।
आसनं व्याघ्र - चर्मादि, मुण्ड - वीरादिकं च वा ॥३४

माला मुण्डास्थि-सम्भूता, सर्प-मत्स्यास्थि-मालिका ।
अरिष्टजां वा सर्वार्थे, कपालं पात्रमुत्तमम् ।।३५
यत्र तुम्बी नारिकेलं, तथैव शर्करोद्भवम् ।
गन्धर्वाख्यो महा - वेषः, सिद्ध - वेषः शुभावहः ।।३६
श्मशाने विजनेऽरण्ये, कामिनी - नृत्य - मण्डले ।
एडूके विपिने प्रान्ते, शय्यायामङ्गणे गृहे ।।३७
वेश्या - वेश्मनि नद्यां च, तडागे गिरि - गह्वरे ।
शाबरं साधयेद् देवि ! भूयो वा साधयेद् यती ।।३८
नराणां क्षत्रियाणां च, वटुकः शाबरागमः ।
नेत्र - द्वयमिदं प्रोक्तं, कल्प - मार्गेण साधयेत् ।।३९
नेत्र - द्वय - विहीनो यः, क्षत्रियश्चात्महा कलौ ।
नेत्र - द्वयं सदा रक्ष्यं, क्षत्रियैर्मानवैरपि ।।४०
विना मांसेन मद्येन, सम्विद् - वीजैर्विना प्रिये !
यः शाबरं साधयितुं समुद्युक्तः स नश्यति ।।४१
सुधा - सीध्वासवारिष्टैः, स्फाटिक्याद्यैरपि प्रिये ।।४२
कादम्बरी सुमाध्वीकैर्मैरेयाद्यैरपि प्रिये !
शाबरं नार्चयेद् यस्तु, स पापीयः सुखी कथम् ।।४३
मद्य - मांसादिना देवि ! शाबरे सर्वदाऽर्चनम् ।
शाबराणामघोराणां, मद्यादौ साधना समा ।।४४
न शाबरे ब्रह्म - चर्यां, ब्रह्मचर्यं क्वचिद् भवेत् ।
न विद्वेषो न वा शौचो, न वा मास-विकल्पना ।।४५
न काल - नियमः क्वापि, शाबरागम - साधने ।
इक्षु - दण्डो गुडश्चैव, मिष्ठं सर्व - विधौ शिवे ! ।।४६

शाबरादौ प्रसिद्धं च, फल - मात्रं विशेषतः ।
विजया सर्वदा भक्ष्या, मांसं भक्ष्यं सदैव तु ।।
इति संक्षेपतः प्रोक्तं, किमन्यत् श्रोतुमर्हसि ।।४

।। इति श्रीकाली-शाबरे शिव-पार्वती - सम्वादे
वटुक-प्रोक्तं परिभाषा-पटलः प्रथमं समाप्तम् ।।

द्वितीय 'काली-संक्षेप' पटल

।। श्रीदेव्युवाच ।।

देवेश ! श्रोतुमिच्छामि, रहस्याति - रहस्यकम् ।।१

।। श्रीशिव उवाच ।।

रहस्यमपि देवेशि ! शृणु यत्नेन साम्प्रतम् ।
तारा काली छिन्नमस्ता, सुन्दरी वगलामुखी ।।२
मातङ्गी भुवना धूम्रा, सिद्ध - लक्ष्मी त्वरुन्धती ।
एतच्छाबर - मन्त्राश्च, कलौ प्रत्यक्ष - दर्शकाः ।।३
वटुकाद्याः महा - मन्त्राः, शाबरास्तूर्ण-सिद्धिदाः ।
ते साधनीया यत्नेन, सिद्धिं यच्छन्ति गोपिताः ।।४
तेषां तु समयाचारं, शृणु वक्ष्यामि सुन्दरि !
पिष्टातकं सदा लाप्यं, सिन्दूरस्तु विशेषतः ।।५
खड्ग-हस्तः सुरा - स्वाही, सम्विदासव-घूर्णितः ।
स्त्री - दर्शकः पूजको वा, ब्रह्मचारी यतः व्रती ।।६
नाना सौगन्ध्य-भूषाढ्यः, सर्व - धूप - प्रमोदितः ।
वितान - ध्वज - भूषाढ्यो, नाना-ध्वज-प्रभूषितः ।।७
दिव्य-वस्त्र-परीधानो, दिव्य - शय्यासन-स्थितः ।
दया-दाक्षिण्य-कौशल्यः, कलाढ्य - परिभूषितः ।।८
नाना तन्त्र-विदां भक्तो, सत्य-वादी जितेन्द्रियः ।
प्रीति - भोगो पीताहारी, पर-राज्य-जयोत्सुकः ।।९

अनन्य-चेता-स्थिर-धीः, काली - तारा - परायणः ।
महा - काल - जपासक्तो, वटु - जाप-परायणः ।।१०
स्त्री-पूजको भक्त-भक्तो, दिव्य-स्त्री-सङ्ग-लोलुपः ।
वीराणां पाशुपानां च, चीनानां सङ्ग - पूजकः ।।११
एवं - विधः शाबरस्य, समयाचार ईरितः ।
इति संक्षेपतः प्रोक्तो, कालिका - साधनां शृणु ।।१२

ॐ कङ्काली-कङ्काली । ॐ जन्म-भूमी नासिका नदी, तहाँ भये वीर हनुवन्त का जन्म । कवने नक्षत्र, कवने वार ? भादो महीना, मङ्गर - वार, भरणी नक्षत्र । ज्ञान गुरु, पढ़ना स्वामी । अर्द्ध रोर चलै, नील चलै । अष्ट-कुलि नाग चलै, नव-कोटि इच्छा चलै । पश्चात् कष्ट-कालिका चलै । न चलै, तो माता अञ्जनी का दुध मिथ्या-मिथ्या । फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ।।

ॐ कालिका देवी ! काल-रूपिणी, महा-काल, नव-नाड़ी, बहत्तर जाली, मम भयं हर-हर स्वाहा ।।

ॐ आदेश ताको । आदि-काली, जुगादि - काली । ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की साली । साहस की काली, माथे ही जटा बावरी वाली । चलाए चलै, न बोलाये आवै । ता कारण गुरू गोरख भावै । मोहन मुद्रा वश करू । मोहूँ सिगरो गाउँ, मोहूँ सिगरी जाति । बाँवे हाथ खड्ग, दाहिने हाथ खर्परिया । नगर में पैठतवारो सब मन्त्री । मांस की डली, गुग्गुल का वास । जब सुमिरों, तब खड़ी कालिका पास । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच ।।

ॐ काली - काली, महा - काली । मदे मासे, करे देवाली । ब्रह्म की पुत्री, इन्द्र की साली । घोड़े की पीठ, बजावे ताली । चाम की कोठरी, हाड़ की जप-माली । पाताल की सपिणो, उडु - मण्डल की बिजुली । जहाँ पठाउ, तहाँ जाहि । ऋद्धि - सिद्धि ल्याव । दश कोश बाँवे, दश कोश दहिने । दश कोश आगे, दश कोश पाछे । मेरा वैरी, तेरा भक्ष्य । मैं दीआ रूसि, तू लेइ चूसि । तूं लेइ, क्रीं काली, महा - काली । फुरो मन्त्र, अव्रठ चाण्डाली । न फुरे, तो ब्रह्मा-विष्णु-महेश-वाचा पाउ पखालि ॥

कालि-वत् सर्वमासाद्य, त्रैलोक्य - विजयी शिवः ।
स्त्रियं पश्यन् रमन् गच्छन्, प्रजपेत् सर्व-सिद्धये ॥१३
वज्र - पुष्पेण देवेशि ! करवीरेण वा पुनः ।
होमयेत् परमेशानि ! काली-प्रत्यक्षतां ध्रुवम् ॥१४
स्त्री-सङ्गिना सदा भाव्यं, काली-तारा-प्रजापकै ।
अयुतं प्रजपेद् विद्वान्, सुरया होममाचरेत् ॥१५
तेन सिद्धीश्वरो भूयाद्, डाकिन्यः सर्व-सिद्धयः ।
त्रैलोक्यदा राज्यदा च, भोगदा मोक्षदा तथा ॥१६
महेच्छा च महेष्टा च, वासु - नाम्नी मनोरथा ।
अष्टौ पाताल-दायिन्यः, शुभदा क्षेम - कारिणी ॥१७
यश - करी सर्व - दात्री, महा - विद्येश्वरी तथा ।
साम्राज्य-राज्ञी काम्नेशी, माया-राज्ञी जरा-हरा ॥१८
मृत-सञ्जीवनी चेति, स्व-दामिन्यः प्रकीर्त्तिताः ।
महेष्टा कथिता ह्येते, सर्व - कार्य - समृद्धिदाः ॥१९

ॐ ह्रीं काली-काली, महा-काली कौमारी-भगं देहि ठः ठः ।

॥ इति श्रीकाली-शाबरे शिव-पार्वती-सम्वादे
'काली-संक्षेप' द्वितीयः पटलः ॥

तृतीय 'काली-शाबर' पटल

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देवेश ! श्रोतुमिच्छामि, काली-शाबर-साधनम् ।
ललाटे कुल-पुष्पं च, हस्ते दिव्य-कुशाः शिवे ! ॥१
कुलासनं कुल - पानं, कुल - शय्या कुल - गृहम् ।
कुल - द्रव्यं सदा पेयं, काली - मन्त्र - प्रजापकैः ॥२
दक्षस्था दक्ष - हस्ते च, वामस्था वाम-हस्तगाः ।
एवं कुशाश्च सन्धार्याः, सिद्धयर्थं कालिका-परैः ॥३
शुक्रेण पूजनं कार्यं, शुक्रेण पूजनं सदा ।
शुक्रेण मार्जनं कुर्याच्छुक्रेण पाक - भोजने ॥४
सर्वं शुक्रेण कर्त्तव्यं, काली - दर्शनमिच्छता ।
स्वयम्भू - कुसुमेनैव, सर्व - स्नानादिकं चरेत् ॥५
स्नानं भग-जलैः कार्यं, कालिका-भग-चिन्तकैः ।
वरं काल्या महेशानि ! बलि - दानं समाचरेत् ॥६

ॐ हँ कालि ! क्रूं काली, पुलकित-पुलकित-स्त्री-पुरुष-राजा-कर्षिणि मे वश कर नु वर स्वाहा । ॐ नमो भगवति ! रुद्र - काली, महा - काली, महेश्वर - काली, नन्दीश्वर-काली, इन्द्र-काली, परितः काली, भद्र-काली,

वज्र-काली सर-सर, पुर-पुर, हर-हर, तुरु-तुरु, धुन-धुन, आवेशय-आवेशय, गर्ज्ज-गर्ज्ज, मण-मण, कपालेश्वरि ! शूल-धारिणि ! ॐ क्रों फ्रों हन-हन अह चामुण्डेश्वरि ! स्वाहा ॥

अनेन मन्त्र - राजेन, सर्वदा बलिमाचरेत् ।

ॐ ह्रीं कालि-कालि ! महा - काली मांसशो जने रक्त-कृष्ण-मुखि, देवि ! मांसे पश्यन्तु मानुषाः स्वाहा ॥
एवं बलि - प्रयोगेन, सर्वं सिद्धयति पार्वति ! ॥७
चक्रवर्त्यादि जीवानां, बलि - दानमथो शृणु—

ॐ कङ्काली-काली ! नव - नाड़ी, बहत्तरि-जाली ! माह्रो शत्रु, ताह्रो भक्ष्य-भक्ष्य, गृह्ण-गृह्ण फट् स्वाहा ॥
बलि मन्त्राख्यं चिता. शत्रूणां बलिमाहरेत् ॥८
सिद्धोऽपि शत्रु - वर्यश्चेत्, सर्वदा नश्यतु ध्रुवम् ।
साधकस्य महा - काली, बलि-मात्रेण सिद्धिदा ॥९
सैन्योच्चाटनं नामानं, बलिं संशृणु पार्वति !
काली-वने ततो गत्वा, काली - मन्त्र - परायणः ॥१०
शवं पादेन सम्पाडय, शङ्ख - माला कराम्बुजे ।
खड्ग-हस्तो दिशा-वासो, मुक्त-केशो लताऽन्वितः ॥११
सिन्दूर - तिलको मतो, सदा घूर्णित - लोचनः ।
कामिनी - हृदयानन्द, वारीवज्जल - लोचनाम् ॥१२
स्वयम्भू - कुसमं भाले, ताम्बूलैः पूरिताननः ।
शनि - भौम - दिने वापि, जातं कुण्डं समाहरेत् ॥१३
तत् - कपाले बलिं दद्यात्, कृशरान्न - मधूपकौ ।
सुरा - घृतं मधु शिवे ! कदली - पुष्पमेव च ॥१४

कदली - वीचपूरश्च, पनसस्तित्तिडी - फलम् ।
आमलक्यभयारिष्टा, मूष - मार्जार - कुक्कुटा ।।१५
अजावि महिषी देवि ! एको दुष्ट - तरः शिवे !
नाना - जाति - पक्षिरत्नैर्नानाऽऽसव - रसैरपि ।।१६
बलिं श्मशाने सन्दद्यात्, विजयार्थं सरोत्तमैः ।
मन्त्रेणानेन देवेशि ! बलि - दानं समाचरेत् ।।१७

ॐ कालिका देवो काल-रूपिणी, महा-काल-दमनी, अमुकोच्चाटनार्थं मद्-दृष्टया मम भयं हर-हर स्वाहा ।।

अनेनास्त्रेण देवेशि ! शत्रु - सैन्य - बलिं हरेत् ।
सैन्यस्योच्चाटनं कुर्यात्, बिना वासादिना प्रिये ! ।।१८
सर्वत्र मदिरा - दानं, सर्वत्र सर्व - शाबरे ।
इति संक्षेपतः प्रोक्तं, किमन्यत् श्रोतुमिच्छसि ।।१९

।। इति श्रीकाली-शाबरे शिव-पार्वती-सम्वादे
काली-शाबरस्तृतीयः पटलः ।।

।। पण्डित विनायक धर दुवेदेन लिपि-कृतं—सम्वत् १९४९, मार्गशीर्ष-कृष्ण-दशम्यां, चन्द्र-वासरे, काश्याम् ।।

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६